सोमसी

जुलाई-अक्टूबर 1990

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी

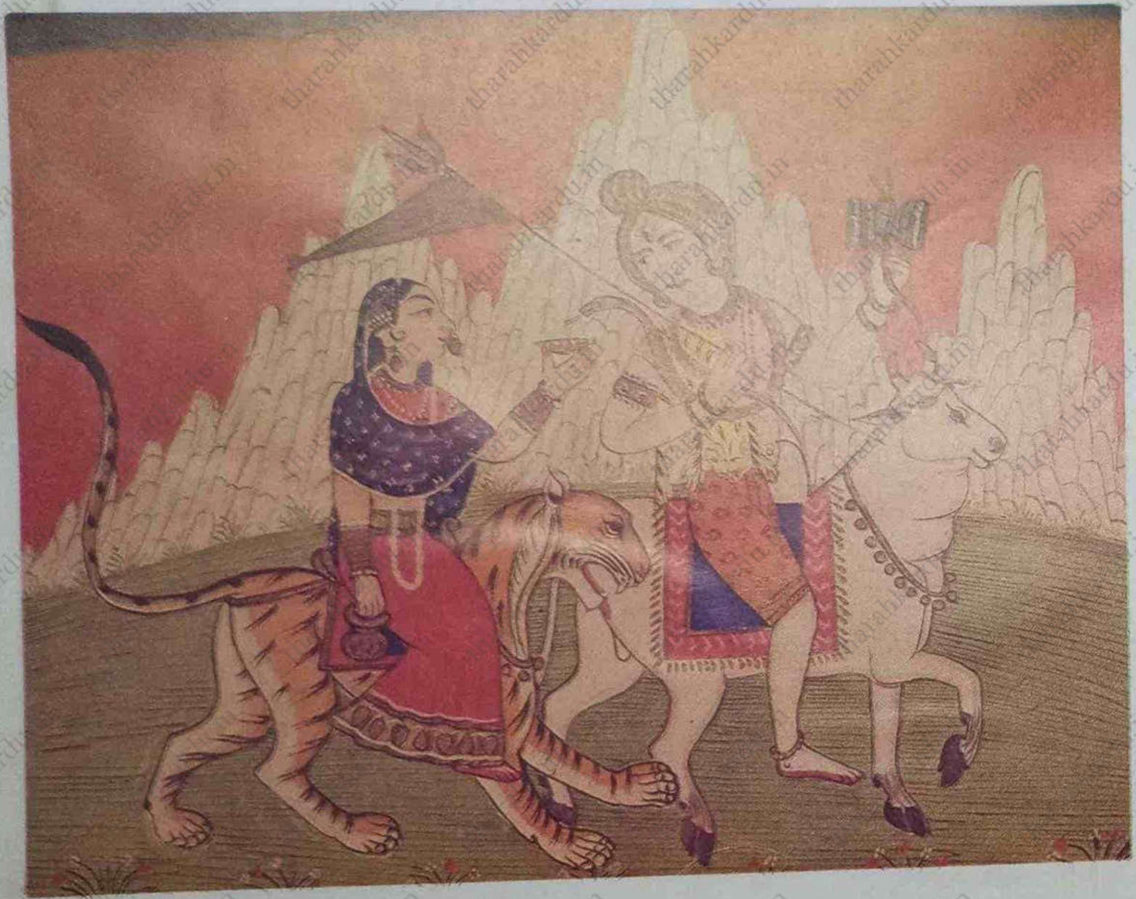

शिव पार्वती

आवरण पृष्ठ : शिव पार्वती

वर्ष : 16
अंक 3, 4 जुलाई, अक्तूबर 1990
पूर्णांक 63, 64
जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्तूबर में प्रकाश्य

सोमसी

पर्वतीय कला, संस्कृति और साहित्य की त्रैमासिक शोध पत्रिका

सम्पादक
डॉ० बंशीराम शर्मा

संयुक्त संपादक
सरोज सांख्यायन
सम्पादन व प्रकाशन सहयोग
डॉ० कर्म सिंह

उपसंपादक
कु० जयवन्ती चौहान
प्रूफशोधन
निर्मल कौशल

वार्षिक मूल्य : 12/- बारह रुपये
एक प्रति : 6/- तीन रुपये +तीन=6/-

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में दिए गए तथ्यों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

पारदर्शियां हिमाचल अकादमी प्रलेखन संग्रह

प्रकाशक : सचिव,
हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी
क्लिफ एण्ड एस्टेट शिमला-171 001 हि०प्र०
दूरभाष : 6330, 4993

अनुक्रम

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृष्ठ
	सम्पादकीय		
1.	पहाड़ी भाषा और साहित्य का इतिहास तथा उपलब्धियां	डॉ० पीयूष गुलेरी डॉ० बंशीराम शर्मा	1
2.	पहाड़ी कविता : छन्द विधान तथा गेयता	डॉ० नीलमणि उपाध्याय	20
3.	यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण : एक विवेचन	डॉ० चमन लाल गुप्ता	34
4.	हिमाचली जनमानस में नारसिंह	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	46
5.	हिमाचल में लोकदेव परम्परा	डॉ० अमिता शर्मा	50
6.	सोमसी में प्रकाशित सामग्री का विवरण		52
7.	पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएं (समीक्षा)	डॉ० वी.पी. मुहम्मद कुंज मेतर	88

सम्पादकीय

हिमालयी संस्कृति का दर्पण यह प्रदेश ज्यों-ज्यों आर्थिक व सामाजिक विकास के नए आयाम स्थापित करने की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है त्यों-त्यों साहित्य-सर्जना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को समेटता चला जा रहा है। हिमाचल के पर्यटन स्थल जहां अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के प्रति प्रकृति प्रेमियों को बलात् मोह लेते हैं वैसे ही उन स्थलों की ऐतिहासिक, पुरातात्विक व सांस्कृतिक तथा धार्मिक धरोहर भी जिज्ञासुओं को आकृष्ट कर पाने में सदा समर्थ रही है। यहां की भाषायी व सांस्कृतिक विरासत ही इस क्षेत्र की जीवन्तता का प्रतीक है यही कारण है कि यहां साहित्यिक गवेषणा की प्रबल संभावनाएं हैं।

'सोमसी' के माध्यम से जहां विद्वानों को साहित्य सर्जना का सशक्त सम्बल मिला है वहां इससे अकादमी की गतिविधियों में भी आशातीत गतिशीलता आई है। अकादमी द्वारा विभिन्न अवसरों पर आयोजित किए जाने वाले सम्मेलनों में पढ़े गए शोधपत्रों को सोमसी में प्रकाशित करने का अनेक विद्वानों ने स्वागत किया है। इससे जहां महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होगी वहां शोध पत्र के प्रस्तुतकर्ता भी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हो सकेंगे और सोमसी प्रदेश की भाषायी व सांस्कृतिक धरोहर को जनसाधारण तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम बनी रह सकेगी।

पहाड़ी भाषा और साहित्य का इतिहास तथा उपलब्धियां में लेखकद्वय ने पहाड़ी भाषा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जो अकाट्य व प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं उनसे इस क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होगी और शोध का क्षेत्र भी विस्तृत हो सकेगा। इसमें १३३० ई० से लेकर अब तक की साहित्यिक उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए क्रियमाण अनुसन्धान की सम्भावनाओं के विषय में भी संकेत किया गया है। शोधपत्रों की इस श्रृंखला में 'पहाड़ी कविता : छन्द विधान तथा गेयता' (डॉ० नीलमणि उपाध्याय) को भी शामिल किया गया है। हिमाचल के प्रख्यात क्रान्तिकारी साहित्यकार 'यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण' का डॉ० चमन लाल गुप्ता द्वारा सम्यक् विवेचन किया गया है। हिमाचली संस्कृति में प्रचलित लोकदेव परम्परा के सन्दर्भ में डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा, और डॉ० अमिता शर्मा के लेख ज्ञानवर्धक हैं।

'सोमसी' हिमाचल की भाषायी एवं सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में विद्वानों द्वारा विगत अन्तराल में किए गए अनुसन्धान का प्रामाणिक दस्तावेज हैं। यही कारण है कि हिमालयी संस्कृति के अध्ययन में सोमसी की उपयोगिता अपरिहार्य है। यह विगत १६ वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही हे। अब तक इसके ६२ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस अवधि में प्रकाशित महत्वपूर्ण सामग्री की सामयिक उपयोगिता को देखते हुए आद्यतन संचित साहित्य निधि को विभिन्न विधाओं के पृथक-पृथक विवरणसहित यहां उपलब्ध करवाया गया है।

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी साहित्य सर्जना को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए साधनारत डॉ० मनोहर लाल द्वारा सम्पादित 'पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएं' की समीक्षा (डॉ० वी.वी. मुहम्मद कुंज मेतर) को भी सम्मिलित किया गया है। आशा है पाठक पहले अंकों की तरह इस अंक को भी सुरुचिपूर्ण व ज्ञानवर्धक पायेंगे। सोमसी के इन अंको के मुद्रण में मुद्रक का अपेक्षित सहयोग प्राप्त होने से हम आपको ये अंक समय पर उपलब्ध करवा सकने में समर्थ हो सके हैं।

पत्रिका का अगला अंक २०X३०/१६ के आकार में प्रकाशित होगा। जिसमें पाठकों की प्रतिक्रियाओं व सुझावों को 'पाठकीय' के अर्न्तगत सम्मिलित किया जाएगा। अतः इस अंक के विषय में आपकी प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं।

(डॉ०) बंशीराम शर्मा

अकादमी की गतिविधियां

पर्वतीय पर्व २३ मई से ३० मई, १९९० : उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद के तत्वावधान में दिनांक १९ मई से ३० मई, १९९० की अवधि में नैनीताल तथा उत्तर प्रदेश के अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतीय पर्व का आयोजन किया गया। डॉ० बी.आर. शर्मा, सचिव अकादमी तथा श्री मोहन राठौर, तकनीकी सहायक, (निष्पादन कला) ने हिमालयी संस्कृति और वहां की विभिन्न लोक विधाओं का अध्ययन करने तथा प्रलेखन के उद्देश्य से इस आयोजन में प्रतिभाग लिया। सुश्री नीरू नन्दा (आई.ए.एस.) निदेशक, उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद ने इस सारे कार्य में व्यक्तिगत रुचि ली और केन्द्र के अधिकारियों व वीडियो दल ने प्रलेखन कार्य में सहयोग प्रदान किया।

भीमदत्त काले जयन्ती समारोह (७ जुलाई १९९०) : अकादमी द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर दिनांक ७ जुलाई, १९९० को स्थानीय गेयटो थियेटर में (स्व०) भीमदत्त काले जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। श्री (स्व०) भीमदत्त काले हिमाचल प्रदेश के एक प्रवीण संगीतकार और प्रबुद्ध साहित्यकार थे, जिन का सारा जीवन संगीत की साधना और सेवा को समर्पित था।

समारोह के प्रथम सत्र में **श्री जयदेव किरण** ने **स्व० भीमदत्त काले का व्यक्तित्व और कृतित्व** पर एक विषय पत्र पढ़ा। जिसमें उन्होंने स्व० भीमदत्त काले के जीवनवृत के अतिरिक्त साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान की जानकारी दी। इस सत्र में स्व० काले जी को श्रद्धांजलि अर्पण करने वालों में प्रो० मोहनशर्मा, टी.आर. शर्मा, रंगनाथ मिश्र और वी.पी. प्रभाकर थे। द्वितीय सत्र में काले कला मन्दिर के छात्रों और छात्राओं ने शास्त्रीय संगीत गायन प्रस्तुत किया। इस सत्र में **प्रो० सोमदत्त बट्टू** के शिष्य प्रवीण ने तथा **प्रो० सतीश कुमार** ने भी अपने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किये।

इस समारोह में भाग लेने वाले संगीतज्ञों में **पं. भीमसेन शर्मा, इन्द्राणी चक्रवर्ती, सोमदत्त बट्टू, प्रो० मोहन शर्मा**, तथा अतिथि कलाकारों में देश के सुप्रसिद्ध तबलावादक **रंगनाथ मिश्र** (लखनऊ) और उनके सुपुत्र **राजेन्द्र मिश्र** ने तबला तथा सरोदवादन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पहाड़ी गान्धी बाबा कांशीराम जयन्ती समारोह (११ जुलाई ९०) : गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अकादमी द्वारा पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। यह समारोह जिला चम्बा के भूरिसिंह संग्रहालय में दो सत्रों में आयोजित किया गया। विषय पत्र श्री अमरसिंह रणपतिया द्वारा **पहाड़ी भाषा तथा साहित्य को चम्बा का योगदान** विषय पर प्रस्तुत किया गया।

इस सत्र के अध्यक्ष **हरिप्रसाद सुमन** ने कहा- चम्बा जनपद में साहित्य तथा संस्कृति से सम्बन्धित व्यापक सामग्री बिखरी पड़ी है। जिसके एकत्रीकरण और शोध की आवश्यकता है।

कवि सम्मेलन : दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें १५ कवियों ने भाग लिया। इनमें प्रमुख थे- श्री हरिप्रसाद सुमन, दीपक वर्मा, नरवीर लाम्बा, सतीश रैणा, देसराज डोगरा, चंचल कुमार "सरोलू" प्रविन्द्र प्रकाश तथा कैलाशदत्त।

सर्वेक्षक सेमिनार (१२ जुलाई १९९०) : हिमाचल प्रदेश में भाषायी एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण कार्य को गति प्रदान करने के लिए जिला चम्बा में कार्यरत सर्वेक्षकों के मार्गदर्शन हेतु भूरिसिंह संग्रहालय चम्बा में एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन अकादमी द्वारा किया गया। इस सम्मेलन में १२ सर्वेक्षकों ने भाग लिया। अकादमी सचिव डॉ० बंशीराम शर्मा ने सर्वेक्षक सेमीनार में उपस्थित सर्वेक्षकों का स्वागत करते हुए सर्वेक्षण योजना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस योजना को किसी भी बड़ी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परियोजना का आधार बताया। भाषायी एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए जिला चम्बा को २९ सर्वेक्षण केन्द्रों में बांटा गया। इस अवसर पर सर्वेक्षकों ने अकादमी सचिव को अपनी समस्याओं से भी अवगत करवाया व मूल्यवान सुझाव दिए।

अकादमी पुस्तकालय : अकादमी पुस्तकालय में जुलाई मास में २०७ नई पुस्तके सम्मिलित की गई। इस अवधि में ५१ शोधकर्ताओं ने अकादमी पुस्तकालय में विभिन्न विधाओं पर शोधकार्य से सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन किया।

पहाड़ी भाषा और साहित्य का इतिहास तथा उपलब्धियां

डॉ० पीयूष गुलेरी
डॉ० बंशीराम शर्मा

समाज में मानव का आधा भाग भाषा ही माना जाता है। जिस प्रकार मनुष्य की कोई परिभाषा कठिन है, उसी प्रकार भाषा की भी सही परिभाषा सरल नहीं है। यह सभी जानते हैं कि जहां कुछ व्यक्ति इकट्ठे रहते हैं वहां भाषा बन जाती है। समय तथा विद्वानों के अनुभव के अनुसार भाषा की परिभाषाएं बदलती रही हैं। कई बार बोली जाने वाली ध्वनियों को भाषा कहा गया तो अनेक बार संस्कृति की विशेषताओं के बीच भाषा बंधी। कई बार उसे हमने विचार प्रकट करने का साधन माना। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जब कोई 'बोली' साहित्य-रचना का माध्यम बनती है और अपनी अलग पहचान बना लेती है तो उसे उपभाषा की पदवी मिलती है फिर वही उपभाषा अपनी अन्य सहभागी बोलियों के साथ मिलकर जब अलग परिचय व स्थान प्राप्त करती है तो 'भाषा' बन जाती है।

पहाड़ी भाषा का अर्थ है—पहाड़ों में बोली जाने वाली भाषा। हिमाचल प्रदेश तथा उसके समीपस्थ क्षेत्रों में बोली जाने वाली समान भाषा के आधार पर इस भाषा को पहाड़ी (हिमाचली) भाषा कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश के मुख्य क्षेत्र कुल्लू, मण्डी, बिलासपुर, हमीरपुर, शिमला, सोलन, सिरमौर, चम्बा, कांगड़ा, ऊनां, लाहुल-स्पिति और किन्नौर हैं। इन क्षेत्रों में लाहुल-स्पिति और किन्नौर में तिब्बती-वर्मी भाषा की हिमालयी बोलियों का प्रचलन है तथा अन्य क्षेत्रों में आर्य भाषा परिवार की पहाड़ी उपभाषाएं बोली जाती हैं। (पहाड़ी) हिमाचली की मुख्य उपभाषाओं में सिरमौरी, क्योंथली, बघाटी, हिंडूरी, कहलूरी, सिराजी, सतलुज क्षेत्रीय, कुल्लवी, मण्डियाली, कांगड़ी और चम्बयाली हैं। जिस प्रकार वर्तमान हिन्दी में राजस्थानी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मगधी, मैथिली आदि उपभाषाएं हैं और उनमें लिखा गया साहित्य हिन्दी का अंग है, वैसे ही पहाड़ी भाषा की इन उपभाषाओं में रचित साहित्य पहाड़ी भाषा का साहित्य है। भले ही पहाड़ी भाषा की भाषा वैज्ञानिक समीक्षा करना इस लेख में हमारा उद्देश्य नहीं है परन्तु फिर भी यह स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि समय-समय पर भाषा की पहचान, रूप तथा स्वरूप बदलते रहते हैं। इस दृष्टि से मैथिली तथा नेपाली का उदाहरण दिया जाना उपयुक्त होगा। अब से लगभग सवा दो सौ वर्ष पहले नेपाली भाषा का कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं था। उससे पूर्व काठमाण्डू की घाटियों में **'नेवारी'** भाषा का प्रचलन था। पूर्वी पहाड़ियों की ओर **खासकुण** और पश्चिमी पहाड़ियों की ओर **तिब्बती** भाषा के मिले-जुले रूप प्रचलित थे। अठारहवीं शताब्दी में पश्चिमी पहाड़ियों में गोरखों के राज्य की स्थापना के पश्चात् उनकी भाषा ने ''नेपाली'' की पहचान बनाई और उसका

अस्तित्व स्थिर हुआ। अब पश्चिमी क्षेत्र में निवास करने वाले गोरखों की भाषा नेपाली की राजभाषा है। स्पष्ट है कि इतिहास की घटनाओं तथा परिस्थितियों के साथ भाषा की पहचान व स्वरूप बदलते रहे हैं।

मैथिली भी उत्तर बिहार की उपभाषा है। पर्याप्त समय पूर्व भाषा शास्त्रियों में यह ऊहापोह रही कि उसे बंगाली भाषा की उपभाषा माना जाए अथवा इसका सम्बन्ध पूर्वी हिन्दी के साथ जोड़ा जाए। उस समय इसकी अलग लिपि भी थी, ठीक वैसे ही जैसे पहाड़ी, (हिमाचली) की टाँकरी लिपि है। प्रसिद्ध विद्वान् **डॉ० इब्राहिम ग्रियर्सन** ने इसे भोजपुरी के साथ रखकर पूर्वी हिन्दी की उपभाषा बताया। वहां के लेखक इसका विरोध करते रहे। उन्हीं के यत्नों का परिणाम है कि मैथिली का साहित्य समृद्ध हुआ और जब १९१७ ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय में वर्तमान भारतीय भाषाओं का अलग विभाग बना तो मैथिली भाषा को हिन्दी व बंगला के बराबर स्थान मिला। मैथिली भाषा ने अब देननागरी लिपि को अपना लिया है, वैसे ही जैसे हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है। ठीक ऐसे ही बंगला भाषा के उन्नत होने की कहानी है। कहने का तात्पर्य यह है कि **डॉ० ग्रियर्सन द्वारा किए गए भाषा के विभाजन को अंतिम अध्ययन नहीं माना जा सकता।** इसलिए हम ठाकुर **मौलूराम** के विचार जो उन्होंने ''पहाड़ी भाषा — उद्‌भाव और स्वरूप'' में इस प्रकार स्पष्ट किए हैं, से सहमत हैं कि, ''....यहां उन्होंने (चैटर्जी) ''पूर्वी पहाड़ी'' को हिन्दी प्रदेश से निकाल दिया है और मध्य पहाड़ी और पश्चिमी पहाड़ी को नितांत अलग भाषाएं बताया है। बोलियां नहीं''। स्पष्ट है कि उन्होंने पश्चिमी पहाड़ी को पूर्वी पहाड़ी और मध्य पहाड़ी से स्वतन्त्र भाषा माना है, भले ही उन्होंने इसका अलग नामकरण नहीं किया और नामकरण क्षेत्र विशेष के भाषा भाषियों ने स्वयं कर दिया है, जब कि पूर्वी पहाड़ी वाले अपनी भाषा को नेपाली, मध्य पहाड़ी वाले गढ़वाली और पश्चिमी पहाड़ी वाले पहाड़ी कहें। इन सभी मान्यताओं और धारणाओं के अन्तर्गत केवल वर्तमान हिमाचल प्रदेश तथा उसके साथ लगने वाले क्षेत्र की भाषा को ही ''पहाड़ी'' कहना युक्तिसंगत तथा उचित होगा[१]। हिन्दी, बंगला, नेपाली तथा मैथिली भाषाओं की यात्रा की तरह ही पहाड़ी भाषा इस क्षेत्र की संस्कृति को भली प्रकार प्रकट कर सकती है। यह भाषा शताब्दियों से लेकर लोक की विचार चर्चा, मेल-मिलाप तथा आपसी व्यवहार, राजकाज, हुकुमनामे, वैद्यों के नुसखों तथा बही खातों आदि में प्रयुक्त होती रही है। इसका इतिहास इसके लोकगीतों, गूगा की गाथा, लामण, झेड़ों, वारों, ऐंचलियों, खेलों और देव-आह्वान के गीतों, मन्त्रों आदि में मौखिक रूप से तथा राजा-रानियों की गीतियों, शिलालेखों व ताम्रपत्रों में लिखित रूप से सुरक्षित है। उक्त विवेचन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि पहाड़ी भाषा की पहचान, इतिहास तथा परख, परिचय उपलब्ध है।

पहाड़ी का उद्‌भव पहाड़ी (हिमाचली) भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई। **अपभ्रंश के इसी रूप से** ब्रज, हरियाणवी, पंजाबी, राजस्थानी तथा गुजराती भाषाओं की उत्पत्ति हुई। हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा की खास बात है कि पहाड़ी भाषा के साथ कोल व किरात भाषाओं का जुड़ा रहना, यात्रा की सुविधा न होना (विशेष रूप से हिमाचल के संदर्भ में) परन्तु इससे भाषा के विकास-प्रसार में तनिक भी कठिनाई नहीं आई। इसीलिए **पहाड़ी (हिमाचली) भाषा में लेखन ११वीं तथा १२वीं शताब्दी में आरम्भ हो गया था।** हेमचन्द्र जी के व्याकरण में इसके कई

उदाहरण मिलते हैं। एक उदाहरण देना उचित रहेगा।

भला हुआ जु मारिया बहिणी म्हारा कंतु।
लज्जेजं जु वयंसियहु, जई भग्गा घर एंतु।।

भला हुआ। मारिया। बहिणि। म्हारा। कन्त आदि ऐसे शब्द हैं जो ठीक इसी रूप में अभी भी पहाड़ी भाषा में प्रयुक्त होते हैं।

सभ्यता, संस्कृति, भाषा और इतिहास के परिचय के लिए पुराने पट्टे, शिलालेख प्रामाणिक माने जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा का लिखितरूप चम्बा, कांगड़ा, कुल्लू, बिलासपुर, रामपुर बुशहर, किन्नौर तथा सिरमौर में है। पहाड़ी भाषा की टांकरी लिपि में लिखे हुए कुछ शिलालेख, ताम्रपत्र, तथा बही-खाते आदि मिलते हैं। इस प्रदेश की टाँकरी लिपि में लिखे हुए पहाड़ी भाषा के नमूने ज्यादातर राजकाज, हुकमनामे, करारनामे या जमीन सम्बन्धी लेन-देन के बारे में हैं। इस सम्बन्ध में **डॉ० रीता शर्मा ने चम्बा के राजा बैरसी वर्मन के ताम्र पत्रा पर लिखे पहाड़ी भाषा अभिलेख को सबसे पुराना माना है। यह लेख १३३० ई० का है** और इसमें मणीक ब्राह्मण को गिरोली जमीन दान में दिए जाने से सम्बन्धित हवाला दिया गया है। इस अभिलेख में इस प्रकार लिखा गया है—

''गिराली बड़े बण पिचो ढलदे कुहले खुबे तएं....तथ किलारे दे ढिहये तए बहि ये श्यचे शवड़ पिचो दखण दिशि हल्याणा रि नलि मिलदे पणि तये....भगोणे दे हयठ मणीक जोग दित्ती....होर से उच करी तय दण जगत होरे घर त्रीणी श्री दीवण....लगत श्री देवणे भोए शश्ण दित्ता''

यह अभिलेख चम्बयाली में लिखा है और इससे यह स्पष्ट होता है कि सन् १३३० ई० के आस-पास चम्बा और इसके साथ लगते क्षेत्रों में पहाड़ी भाषा बोलचाल, राजकाज तथा तीज़-त्यौहारों की भाषा थी।

इसी तरह सन् १३८६ ई० के **भोट बर्मन** के ताम्रपत्र में पहाड़ी भाषा का रूप इस प्रकार मिलता है—

''पछम दीश गकोली छो ताए दीश शिघ ताए। ...श्री देवण गंए उप्र थिर्म जो दीती एह जोग-शवका छहय....उकरीरीतठठर रुपुणु''।

सन् १४४२ ई० में लिखे गए ताम्र पत्र में पहाड़ी भाषा का यह रूप सामने आता है—

''बड़े राएभोट बर्मने दे अस्तु बडु लेधे गंगा प्रवह करि आया......श्राद्ध बड़े राए जे होए....शाशण हथ पाणि दित्ते....विष्णु प्रीती भीतर प्रीती। एह श्री राए दे पुत्रा पौत्रो चालण। बडुए दे पुत्रा....खाणपीण।''

पहाड़ी भाषा की यात्रा में सन् १५८२ ई० का एक और ताम्र पत्र उपलब्ध है, जिसमें इस प्रकार उद्धृत किया गया है—

''श्री नारायणे री प्रतिष्ठा - जोग मंगलीअ ग्राम श्री नारायण तंई से....मुग पेड़ा। त्रामे के ४, घृत १/४ त्रामे टके, मखीर १/४ त्रामे टके ५....कर। श्री नारेण जो देअ करण....।

हिडिम्बा का मन्दिर मनाली में है, जहां इस प्रकार लिखा हुआ पाया गया—

''ओं श्री हिडेम सदे श्री महाराज श्री बहादुरसिंघ जी राजा सम के जोगत का देवी रा देहरा।''

चम्बा के ब्रजेश्वरी मन्दिर में उपलब्ध शिलालेख के कुछ अक्षर इस प्रकार हैं—

''सं० ९२ असड़ प्र १७/देहरे कम लय अहे। मुइसल मरचु लुहार मदन। त्रखान जीटु री बंड।''

डॉ० रीता शर्मा ने अपने शोध पत्र ''हिमाचली पहाड़ी भाषा और इसके विकास में टाँकरी लिपि का योगदान'' में इस प्रकार लिखा है कि पांगी बजारत में मिंघल परगना के लिए गए एक ताम्र पत्र में यह पंक्तियां अंकित हैं, जिनसे पांगी में बोली जाने वाली पहाड़ी भाषा का पता चलता है, वह इस प्रकार हैं—

''इक मिंघला सीमाये प्रने समेते श्री चामुण्डा की श्री महाराजे पृथ्वीसिंघे कुल रे....आई पूजी संकल्प करी दित्ता....मिंघले से देणा....दयोल बाजो री बजीरी मंझ शासण दित्ता....शुवर्ण कार अर्जण जीवन शुन।''

कांगड़ी में सन् १७५० ई० का लिखा हुआ एक फोटो पर कुछ पांडुलिपियों का वर्णन मिलता है—

''श्री राजे बलवंतसिंघ जे ऐह तसवीर दी दा लिखी दी है। श्री महाराज बलवंतसिंघ जी तिन्हे देणे एह तसवीर लीखी तां समत त्र वरह दा था बसाख था। लीखत नैन सुख।''

सन् १७७२ ई० का पहाड़ी भाषा में लिखा हुआ हुकमनामा मिलता है। इस हुकमनामें के अनुसार मण्डी और चम्बा रियासतों के मध्य हुए इकरार का हवाला इस प्रकार उद्घृत किया गया है—

''श्री संवत् ४८ रे हाड़ा प्रविष्टे २१ श्री महाराजे श्री राजसिंह की २००००० अखरे की दोए लख रुपए श्री मींए धूर्जटिए अछने दैणे मन्ने एक बाबत ऐ जो श्री शमशेर सैने दी राजसी कम करी देणा। जिहूयां चम्बा तिहूयां मण्डी दोहनी घरे दी शरम-धरम ..... पहरा श्री राजे श्री राजसिंहे देणा धरम[२]।

दूधी बिच फितफाड़त नीं करणी जे कोई तफाड़त करे से श्री ठाकुरे दा झूठा त्रिहनी टोले लिखे माफक धर्म रखणा। बीड़ा दे हंगामें दा कौले जाबाब स्वाल करणे तां त्रिहनी टोले अकट्ठै जबाब स्वाल मलाणे.....। एह धर्म श्री राजे राजसिंहे की लिखी दित्ता[३]।''

सन् १७८८ ई० में राजा राजसिंह और राजा संसारचन्द के मध्य हुए एक इकरारनामे का पहाड़ी रुप इस प्रकार मिलता है—

''श्री राम जी लिखत श्री राजा राजसिंघ श्री राजा संसार चन्दे की धर्म लीखी दित्ता धरम एहे जे सूत्रा सहना कीठा रखणा इक हुकम दुहीं रखणा अपणे-अपणे बन्ने पार दुही कायल रैहणा.... इस धरमे बीच जे कोइ फरक करे तां श्री लछमी नाथ मनीमहेश श्री देवी चौंड.... दरम्याल .....।''

मण्डी में टाँकरी में लिखा हुआ इस प्रकार मिलता है—

''श्री सम्वत् १९५८ रे .... माघ प्रविष्टे २१ रे राजे श्री महराज श्री भवानी सेन दा उमर ३३ साल २० दिन के सुरगवास हुए।''

बिलासपुर की कहलूरी उपभाषा में एक पत्र के अनुसार पहाड़ी का नमूना इस प्रकार है—

''ओं। माहराजे श्री हीरचन्दे बचने प्रती हजुर उपर हुए ओबरी बलासपुर बजारे बीच गणसुर बरमणे अनु दुहऐ ते उतर दे कनारे हजारीए पुल दे सुलतानी च ए चढ़े को अड़ी बरसी करी के बगस्ये हुए .... एह ही ओबरा इस गणसुए ते नहीं बणदा था अजूर दीए करी उजड़ था ता दीता हुण खेचल हुजत नीं करणी।''

इसी क्रम में कुछ पत्र-व्यवहार रामपुर बुशैहर से भी है, जिसका उदाहरण देना उचित रहेगा—

''हुकमनामा बनाम श्री सुरजना राए न के कामदारन को बाजे होउ प्रंत जो की सं० १९८७ स्रो प्र० २४ गते नीरमंड गे श्री अंबीका जी के जग की छबछ लछनी है। सं० १९८७ स्रो प्र० १५ लीखा फखत।''

हड़सर गांव में सन् १७८२ ई० का एक शिलालेख मिलता है। शिलालेख इस प्रकार है—

''ओं श्री सम्वत् ५८ जेठ प्रविष्ट १४ भगसयाणी रे पुत्र मंगुए ... एह महादेव अड़सरे थाप्या।''

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि चम्बा, कांगड़ा, मण्डी, बिलासपुर, कुल्लू, शिमला और रामपुर बुशैहर तक पहाड़ी भाषा राजकीय भाषा तथा पत्र-व्यवहार के लिए प्रयुक्त होती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि पहाड़ी भाषा सन् १३३० ई० से वजूद में आई। इसमें कोई शक नहीं है कि इससे भी पूर्व पहाड़ी भाषा के प्रयोग होने के प्रमाण मिलें। लेकिन यह एक शोध का विषय है।

अब कुछ साहित्यकारों की रचनाओं का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्होंने पहाड़ी भाषा के लिए देवनागरी लिपि को अपनाया। गुलेरी रियासत के अंतिम राजा बलदेवसिंह के निजी संग्रह से कुछ गीतियां मिलती हैं। राजा बलदेवसिंह स्वयं ब्रज भाषा के कवि थे और उन्हें उस वक्त के लोक कवियों की कविताओं को इकट्ठा करने का शौक था। राजा बलदेवसिंह की एक पांडुलिपि में पहाड़ी भाषा में लिखी गीतिका के कुछ अंश इस प्रकार है—

पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम जी का समय १८८१-१९४३ है। एक और कवि जो पहाड़ी गांधी के समयक हैं, उनका नाम **हरनाम दास** है। इनका जन्म सुजानपुर टीहरा में हुआ। यह भी बाबा जी की तह ही स्वतन्त्रता सेनानी और समाज सुधारक थे। इनका रचना काल लगभग १९२०-१९४० पड़ता है। इनकी एक रचना का नमूना प्रस्तुत है—

मांए मैं तां मुन्नुए दा पाजर पाणा
देरे लाडिया पर जादू खलाणा
अडोसियां पडोसियां छाड़ छड़ाणी
जोगिए दातरा बजाणा

कपड़े भांडे जोगिए नी छड़ें, चेलेया खाणे जो दाणा,
हरनाम दास इक जाने बाझी, मुन्नुए दा रोग नी जाणा।

पहाड़ी भाषा के इन कवियों की सूची में दतारपुर के **पंडित हरलाल डोगरा** भी हैं। उन्होंने भी अनेक पहाड़ी कविताएं लिखीं। उनकी एक कविता की पक्तियां हैं—

पढ़ि कैकर तूं तरक्की, नीं तां बैठा पींगा चक्की,
मैं कहि-कहि अक्की, हसा उमरा जे तू पढ़ि जांए
होई बड़डा बड़ा मुख पाएं, अप्पू पढ़े लोकां जो पढ़ाएं

सन् १९३७ ई० के आस पास लहौर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र **''हिन्दू धर्म मीमांसा** में सुजानपुर टीहरा के **रुद्रदत्त दीक्षित** की पहाड़ी कविताएं छपीं। उनकी एक कविता ''छल जुगे रा बरतारा'' से कुछ पक्तियां यहां पर देनी उचित होंगी—

कलजुगे दा बरतारा, धर्म किहयां गुआयां
कोट छोटे कुर्ते तम्मे, चोटी कटठी हम्बे लम्मे
मुच्छा दा किया सफाया, धर्म इहयां गुआयां
चुगी भली अपणी छड़डी, दुए दी ऐ प्यारी लग्गी

इसी पीढ़ी के एक और कवि हमीरपुर के मघो गांव के मेजर बृजलाल है। इनका जन्म सन् १९०३ में हुआ था। बृजलाल जी की एक कविता के अंश देखें—

इव अचम्बा दिखेया, आश्चर्य वाली बात,
सूरज, चंद तारे चमके गेई घराते रात
अकवां आले खान मुलेक्खे अन्ने दसंणा बार
अकवा आले जुटटे जादे, अन्ने रहण मुस्कात

मेजर बृजलाल की पीढ़ी के एक और चर्चित कवि हैं (स्व०) **सोमनाथ सिंह ''सोम''**। इनका ''सोम तरंग'' कविता संग्रह सन् १९५९ ई० में हरिपुर (कांगड़ा) से प्रकाशित हुआ। इस कविता संग्रह में कुछ पहाड़ी कविताएं तथा गीत मिलते हैं। एक गीत का मुखड़ा इस प्रकार से है—

देश आजाद हो गेया लोको, सुकचे दिया निदंरा सेई जाणा ।

पहाड़ी साहित्य रचना की इस धारा को घाटी बिनवा के (स्व०) रामचन्द्र शुक्ल, दिल्ली की (स्व०) श्रीमती सावित्री देवी, जसूर (कांगड़ा) के (स्व०) पं० तुलाराम ने अपना-अपना योगदान देकर प्रवाहित रखा। इसी धारा में प्रसिद्ध लोक गायक नलेटी (कांगड़ा) के प्रतापचन्द शर्मा का नाम पहाड़ी संस्कृति में सूर्य के समान प्रकाशमान है। प्रतापचन्द शर्मा की कविताएं अथवा गीत पुस्तकाकार में नहीं आ पाए लेकिन आकाशवाणी केन्द्र, शिमला व दूरदर्शन, जालन्धर से प्रसारित होते रहते हैं। उनका प्रदेश के लोगों में विशेष स्थान है। उनके द्वारा रचित गीत की पंक्तियां बेहद लोकप्रिय हैं।

ठंडी ठंडी हवा झुलदी झुलदे चीलां दे डालू कि जीणा कांगड़े दा ।

किसी भी भाषा और साहित्य का इतिहास लिखने के लिए अन्त: साक्ष्य और बाह्य साक्ष्य का आधार होना आवश्यक है। पहाड़ी भाषा व साहित्य का इतिहास लिखने के लिए उपरोक्त तथ्यों के इलावा बहुत सा ऐसा लोक साहित्य है जो सदियों से मौखिक में चला आ रहा है और इस सांस्कृतिक धरोहर को किसी न किसी रूप में अपनी संस्कृति में समेटे हुए हैं, इनमें ग्राम देवता की भारथें, खास उत्सवों पर आयोजित किए जाने वाले आनुष्ठानिक गीत, गूगा गान, ऐंचलियां, पंडवायण, रमैणी, ढोलरु, काव, झेड़े, झंझोटिया, हारां या बारां, लोक नाट्य, बरलाज के गीत, मसादा, रमैण, चैत महीने के गीत, संस्कार गीत, भ्यागड़े और संझड़े, धर्मालिया, भाखियां, पातर और खेलां आदि शामिल हैं। इन सब पर कुछ शोध कार्य हुआ है परन्तु अभी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है।

बाह्य साक्ष्य के आधार पर हम पहाड़ी भाषा व साहित्य का ऊपर विवेचन कर चुके हैं। पहाड़ी भाषा का रचना काल कई शताब्दियों पूर्व का मिलता है। लेकिन इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उपरोक्त सन् १३३० से भी पूर्व पहाड़ी भाषा रचना काल हो। पहाड़ी भाषा व साहित्य के विकास प्रसार के लिए जितना योगदान आकाशवाणी शिमला का है शायद इतना किसी और मीडिया से न मिला। सन् १९५४ में आकाशवाणी शिमला ने कार्य आरम्भ किया था। इससे पूर्व जिला कांगड़ा के साहित्यकारों की रचनाएं आकाशवाणी जालन्धर से "पर्वत की गूंज" कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रसारित होतीं थीं। उस समय के कवियों में डॉ० पीयूष गुलेरी, गौतम व्यथित, और सागर पालमपुरी आदि के नाम प्रमुख हैं।

जब १९६४-६५ में पंजाबी सूबे की मांग जोरों पर थी तो पंजाब प्रदेश में आने वाले पहाड़ी भाषी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के साथ मिलाए गए। इससे पूर्व पहाड़ी इलाकों के विधायकों ने पंजाब पुनर्गठन आयोग से पहाड़ी भाषा के आधार पर जोरदार मांग की[७]। उधर हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री (स्व०) डॉ० यशवंत सिंह परमार तथा प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष सत्यावती डांग के प्रस्ताव पहाड़ी भाषा के इतिहास पर काफी रोशनी डालते हैं

इस सारे संघर्ष में प्रदेश के साहित्यकार और विधायक स्व० लालचन्द प्रार्थी तथा भाषा विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित (स्व०) हरिचन्द पराशर का योगदान भी पहाड़ी भाषा के इतिहास और साहित्य में हमेशा याद रखा जाएगा। विधायकों, राजनेताओं तथा भाषा विज्ञान के ज्ञाताओं के सांझे प्रयत्नों से पंजाब के

tharahkardu.in

''चंगेर फुल्लां री'' पुस्तक राज्य भाषा संस्थान द्वारा सन् १९७१ में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में कुल १० निबन्ध ४२ पृष्ठों में छपे हैं। पुस्तक के आखिर में पहाड़ी-हिन्दी रूप भी दिया गया है। चक्रधारी शास्त्री ने ''नाटक ठुड्डगरे दा कविता नूरपुरे दीं'' शीर्षक से सन् १९७१ में प्रकाशित पुस्तक है। इस पुस्तक में डोगरी तथा पहाड़ी का सुन्दर प्रयोग हुआ है। इस पुस्तक में १३ एकांकी व १३ कविताएं शामिल हैं। भ्रमर गीत कविता के कुछ अंश देखिए—

उनां गोकला दे विच होण नई औणा
मोहने दे कन्नैं असां आसां ले लाईयां
प्यारे दियां गले विच फाईया जे पाइयां

(पृ० २८)

सन् १९७१ ई० में शेष अवस्थी की पुस्तक ''धारां दिया धुप्पा'' शीर्षक से काव्य संग्रह के रूप में प्रकाश में आई। इस काव्य संग्रह में १८ कविताएं कुण्डलियों सहित ६८ पृष्ठों में हैं। एक कुण्डली का रूप प्रस्तुत है—

गल्लां कुदियां कुण सुणे, अपणी खाह-फतह
हल्ला रोला सेवा दा स्वार्थे फसीही रुह
स्वार्थे फसीहो रुह दखोआ चौंही पास्से
जीण जियोणा लग्गा, झूठें दिएं ई आस्सें
शेष गलाए सच कोई, तां उपड़न खल्लां
लगणा लगियां सच अज्ज स्याणेयां दियां गल्लां

(पृ० ६५)

राज्य भाषा संस्थान शिमला द्वारा ''प्रेक्षण'' शीर्षक के अन्तर्गत एकांकी नाटकों का संकलन भी सन् १९७१ ई० में ही प्रकाशित हुआ। इसमें ९ एकांकी ९३ पृष्ठों में सम्मिलित हैं। इस पुस्तक के आखिरी ३ पृष्ठों में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए गए हैं। इसी वर्ष पहाड़ी कहानियों का संकलन भी राज्य भाषा संस्थान द्वारा ''बरासा रे फुल्ल'' शीर्षक के अर्न्तगत प्रकाशित हुआ। इसमें ९ कहानियां हैं। इस पुस्तक के अंत में भी पहाड़ी भाषा के कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं।

· सन् १९७२ ई० में कुलभूषणचन्द्र कायस्थ द्वारा कहानियों की एक पुस्तक ''रींगदी पीड़'' प्रकाशित हुई। इसमें १२ कहानियां है और पुस्तक के कुल पृष्ठ ९२ हैं। इसी वर्ष भगतराम मुसाफिर द्वारा पहाड़ी काव्य संग्रह ''मेरा छैल हिमालय'' शीर्षक के अर्न्तगत प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल १२४ पृष्ठ तथा ५० कविताएं सम्मिलित हैं। वंदना में कवि लिखता है—

''ओ सुण ओ अम्मां मेरिये, मेरी दुखां भरी फरियाद
तां जे हूंओ माहणू दुखिया, तियो तांई सैह करां याद
जे हूंओ राजी बाजी तां रेहयां तूं तैं दूर
तूं जाणा ई रमजां सभ दियां, तूं तोड़ां ई सबदा गरूर।

अपनी वीरभूमि कविता में कवि अपने विचार निम्न रूप में प्रस्तुत करता है—

मेरी कांगड़ा भूमि सबसे न्यारी
इत्थू बसदे लक्खां नर-नारी
एह खांदे सादा पहनदे सादा
ए गलांदे गलां कोई नि माड़ी (पृ० ९५)

''कूंजा दी कूक'' काव्य संग्रह **ऋखी भारद्वाज** द्वारा इसी वर्ष में निकाला गया। इसमें २६ कविताएं ६३ पृष्ठों में शामिल की गई हैं। एक कविता में कवि लिखता है—

''लसाका मारे गोटा तेरी घगरी दा
हाए छुटी जाए सूटा मेरीं झझरी दा (पृ० ४४)

इसी वर्ष **देवराज शर्मा** द्वारा ''लाल चादरूए दी किंगरी'' शीर्षक के अन्तर्गत कहानी संग्रह प्रकाशित किया गया। इस संग्रह के ६० पृष्ठों में ९ कहानियां हैं। भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा शोध पत्रावलियों के प्रकाशन का क्रम आरम्भ किया गया था। इस कड़ी में वर्ष १९६८ में प्रथम शोध पत्रावली प्रकाशित हुई। यह क्रम बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ परन्तु अब पता नहीं किन परिस्थितियों के कारण इसे बन्द कर दिया गया है, जिससे पहाड़ी साहित्य की समालोचना पर काफी असर पड़ा है।

आधुनिक पहाड़ी साहित्य की लगभग १०० पुस्तकें सन् १९६८ से १९७२ तक प्रकाश में आई हैं। सन् १९७४ ई० में **श्री खुशीराम शास्त्री** की पुस्तक ''कांगड़ें दी संस्कृति कनैं लोक जीवन'' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के आरम्भ में **प्रो० नारायणचन्द्र परशार** लिखते हैं— **''पहाड़ी लोक जीवन दा सेहई रूप लोका दे साह्मणे आई सकै इस पास्सैं हर इक जतन उत्तम दिशा दे पासैं इक कदम ऐ।''** इस पुस्तक के कुल २५ अध्याय और ११८ पृष्ठ हैं। पुस्तक के अंत में लेखक ने कांगड़ा गुणगान पहाड़ी कविता में किया है। यह एक सुन्दर प्रयास है।

सन् १९७४ ई० में **''पुंगरासा''** शीर्षक से **डॉ० गौतम व्यथित** द्वारा प्रकाशित काव्य संग्रह है। इस संग्रह के कुल १२० पृष्ठों में ६० कविताएं दी गई हैं। ''दुनियां दौड़ा दी'' के अंश देखिए—

''दुनियां दौड़ा दी
हर कोई इक्की दूए ते अगांह
बधणे दा अणथक जोर लगादा
सुक्का दा संघा
छा दा न्हेरखड़ा
बझोआ दी हार
पर भी बी धीखणा
अगांह धक्का देआ दा (पृ० ८४)

सन् १९७४ ई० के अन्त में देवराज शर्मा की पुस्तक ''घाटियां री गूंजा'' प्रकाश में आई। इसमें बिलासपुर क्षेत्र की ५१ लोक कथाएं सम्मिलित की गई हैं। लोक कथा संग्रह लोक संस्कृति की पहचान के लिए अपना एक अलग स्थान रखता है। इसी कड़ी में शेष अवस्थी ने ''स्हड़ेयो फुल'' शीर्षक के अन्तगत लोक कथा संकलन निकाला। इसमें २६ लोक कथायें हैं। १९७४ ई० में पहाड़ी भाषा में पहला उपन्यास ''माहणू शिखरा रे'' शीर्षक के अन्तगत रूप शर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया। इससे पूर्व इनका सन् १९७० ई० में पहाड़ी काव्य संग्रह ''मेरा हिमाचल मेरा घर'' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। जिसके कुल ७४ पृष्ठों में ३० कविताएं सम्मिलित की गई हैं।

सन् १९७५ ई० में श्री सी०आर०बी० ललित ने 'जुएणो रे आशू'' शीर्षक के अन्तगत पहाड़ी काव्य संग्रह निकाला। पुस्तक में संदेश रूप में भूतपूर्व मुख्यमन्त्री लिखते हैं— ''अपनी भाषा को समृद्ध और स्वस्थ बनाना हर हिमाचली का कर्तव्य है।'' पुस्तक के ८० पृष्ठ और उनमें ३७ कविताएं शामिल की गई हैं। ''रूप मेरी मीतो रा'' कविता में कवि के भाव देखिए—

पुनओ रा चांद असौ रूप मेरी मीतो रा
एकी एकी अदारा रा औ भान केती गीतो रा
कली रा निखार मिलौ फुलौ न्होर सूखौ
लागौ से अजंता अलौरा रे और मूरतो
ऋषे मु छोड़ दैऔ देखे खतां नीगैरा।

सन् १९७५ ई० में भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा पहाड़ी लेखमाला का प्रकाशन किया गया। इस लेखमाला के १६२ पृष्ठों में २३ लेखकों के लेख मिलते हैं। रूप शर्मा के काव्य संग्रह ''फूल कनैं पत्ते'' में ७३ कविताएं ६६ पृष्ठों में शामिल की गई हैं। इसी वर्ष भाषा एवं संस्कृति विभाग की ओर से पहाड़ी एकांकी संग्रह ''सोलह सींगीं'' शीर्षक के अन्तगत प्रकाश में आया। इस संग्रह में १६ एकांकी नाटक हैं। महाकवि कालिदास के विक्रमोर्वशीय का पहाड़ी अनुवाद पं० दुर्गादत्त शास्त्री द्वारा निकाला गया। पहाड़ी कवियों की कविताओं के चार प्रतिनिधि संकलन भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित किए गए। ''चिट्टी चांदनी'' विद्यानन्द सरैक द्वारा निकाला गया काव्य संग्रह है। पुस्तक के १०४ पृष्ठ हैं। इनकी एक कविता के अंश प्रस्तुत हैं—

डाली डाली रा बसेरा, पंछिया मुश्किल जीवण तेरा।
एकी फुलड़ु मुणे म्हाइस लाणा जिवटा पोरा।। (पृ० ४५)

सन् १९७५ ई० में प्रेम शास्त्री द्वारा ''पहाड़ी मुहावरे'' पुस्तक निकाली गई। मित्र साहित्य घुमारवीं द्वारा ''फुल्ल कनैं पत्ते'' शीर्षक के अन्तगत पहाड़ी काव्य संग्रह प्रकाशित किया। ''लामण'' पुस्तक देवप्रस्थ साहित्य संगम, कुल्लू का प्रयास है। इस पुस्तक में लामण गीतों का सम्मिलित किया गया है। ठाकुर मौलूराम द्वारा पहाड़ी भाषा : कुल्लू के संदर्भ में'' सन् १९७५ ई० में प्रकाशित की गई। इस पुस्तक की डॉ० सिद्देश्वर वर्मा और डॉ० हरदेय बाहरी द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। पहाड़ी भाषा की यह पुस्तक भाषा वैज्ञानिकों तथा शोध कर्ताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

सन् १९७६ ई० में हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा ''माला रे मणके'' डॉ० पीयूष गुलेरी, हरिचन्द पराशर, मौलूराम ठाकुर तथा बंशीराम शर्मा के सम्पादन में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में पहाड़ी कविताओं का हिन्दी रूपान्तर भी दिया गया है। इसमें ४३ कवियों की ६३ रचनाएं सम्मिलित हैं।

सन् १९७६ ई० में ओंकारलाल भारद्वाज द्वारा ''गोरी छैल लगदी'' शीर्षक के अन्तर्गत पहाड़ी काव्य संग्रह निकाला गया। इस पुस्तक के ४० पृष्ठों में ९१ कविताएं सम्मिलित हैं। कवि अपने दो शब्दों में अपने उद्गार इस प्रकार प्रस्तुत करता है—

कौण भुलाणां यादां तेरी मिल छोड़े हण ला न देरी
तेरे नैणां च मेरा संसार, तेरे कजरारे नैणा री धार (पृ० १५)

इसी वर्ष सोहनलाल गुप्त और तेजसिंह पंवार ''अनजान'' का संयुक्त काव्य संग्रह ''नवां मोड़'' शीर्षक के अन्तर्गत निकला। यह दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में गुप्त की ३५ कविताएं और दूसरे भाग में ''अनजान'' की ४१ कविताएं सम्मिलित हैं। गुप्त की कविता के अंश देखे—

''इस भल किती केए से ध्याड़े भरदे थे पेड़ियां बंदे थे न्यारे
तां ही जुल्मां लई डटे थे सारे हसदे नचदे लोकां सिर दारे।

अब ''अनजान'' की कविता की पंक्तियां देखिए—

कलए तेरे कर्म ई ऐड़े न चाहन्दे बी चाह करी लाओ
संसारो री रीत ई लड़ीए मतलब कड्ढी परदेसी तणी जाओ।

राजागोपाल शर्मा का ''विधवा बजोगण'' ११ पृष्ठों में पहाड़ी खण्ड काव्य है। कविता के अंश देखें—

इस वास्ते जवानियां दा रंडेया मिटाई लैणा चाहीदा
जवानिया दे रंडेये पर दूसरा व्याह रचाई लैणा चाहीदा
पर मैं एह गल्त गलाई नी संकदी
किसी जो एक गल्ल सुणाई नीं सकदी। (पृ० ११)

सन् १९७७ ई० में ही डॉ० **गौतम व्यथित** के संयोजन में लोक साहित्य परिषद कांगड़ा की ओर से ''मिंजरां'' काव्य संकलन निकाला गया। इस संकलन में २७ कवियों की कविताएं सम्मिलित हैं। संस्था का प्रयास सराहनीय है और ऐसे संकलन उन लेखकों के लिए बराबर लाभदायक रहे हैं जो अपनी रचनाओं को पुस्तककार में नहीं पा सकते। इसी वर्ष **शबाब ललित** द्वारा पहाड़ी ग़ज़लों व कविताओं का संग्रह 'भागसू दे नौणें' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुई। इस संग्रह में ३५ कविताएं शामिल हैं। एक कविता का नमूना पेश है—

भागसू दे नौणें गोरी न्हाई करी चली गेई
मड़ी अग्ग पाणीये च लाई करी चली गेई। (पृ० १७)

सन् १९७७ ई० में **धर्मपाल कपूर** द्वारा "तिखेणी" काव्य संग्रह निकाला गया। इसमें ५० कविताएं तथा १५५ पृष्ठ हैं। कवि के भाव देखें—

दूर परदेशा याद बड़ी आंवां ही
चांदा रे झरोखे मंझा तू चली आवा ही। (पृ० १५५)

सन् १९७७ ई० में "पंडित ज्वालाप्रसाद स्मारक ग्रंथमाला" शीर्षक के अर्न्तगत वैदिक मन्त्रों व श्लोकों का पहाड़ी अनुवाद यशोदा प्रकाशन सुजानपुर टीहरा से प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में भले ही अनुवादक ने अपना नाम नहीं दिया है परन्तु यह विदित ही है कि इसके अनुवाद का कार्य **डॉ० श्यामलाल डोगरा** द्वारा ही हुआ है। १९७७ ई० में चक्रधारी शास्त्री द्वारा गीत गोविन्द (महाकवि जयदेव) का पहाड़ी अनुवाद "**गीत गोविन्दम्**" शीर्षक के अर्न्तगत प्रकाशित हुआ है। इसके ८४ पृष्ठ हैं। **कथा सरवरी भाग-१** भी सन् १९७७ में प्रकाशित हुई। अब तक इसके दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इस पुस्तक के ८४ पृष्ठ हैं और यह हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई है। सन् १९७७ में "**लोसरा रे फुल**" भाग-२ भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें ३८ पहाड़ी कहानियां २०६ पृष्ठों में सम्मिलित की गई हैं।

सन् १९७७ में **डॉ० गौतम व्यथित** द्वारा "झूमे धरती गाये लोक", **काहनसिंह जमाल** द्वारा "गिरी गांगे री धारा", **डॉ० प्रत्यूष गुलेरी** द्वारा "मनें दी भड़ास", तथा **मास्टर लाल** द्वारा "नोखियां गल्लां" पुस्तकें प्रकाश में आई हैं।

सन् १९७९ में **कर्मचन्द** द्वारा लिखित "बंडेरा दे कण्ढे", **डॉ० आत्मा राम** द्वारा लिखित "चुंगा ते ठोलू" रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

सन् १९८० में **डॉ० पीयूष गुलेरी** का काव्य संग्रह "छौटें" निकला। इसमें २४ कविताएं ८८ पृष्ठों में छपी हैं। यह पुस्तक **स्व० लालचन्द प्रार्थी** जी को समर्पित है। इस पुस्तक पर डॉ० गुलेरी को अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। "नगारे दी चोट" **शशिकांत शास्त्री** का काव्य संग्रह है। इसके ९० पृष्ठ तथा ५० कविताएं विभिन्न पहलुओं पर लिखी गई हैं। एक कविता के अंश प्रस्तुत हैं—

कुर्सी री गिद्दड़ भबकियां कन्नैं
असां नी डरने आले
असां मौता ने खेलना सिक्खे
असां नी झुकणे आले (पृ० २६)

सन् १९८१ ई० में कुल्लू के बुजुर्ग कवि **चन्द्रशेखर बेबस** द्वारा "कुल्लू रे चैहकदे तीतर चाकर", **भगत राम मुसाफिर** द्वारा एक और काव्य संकलन "मेरे सुपने मेरे गीत", **देवराज शर्मा** द्वारा "जीणा म्हाचले दा" काव्य संकलन प्रकाशित हुए हैं।

श्री भगवद्गीता का संस्कृत मूल तथा पहाड़ी अनुवाद **डॉ० श्यामलाल डोगरा** द्वारा सन् १९८२ ई० में यशोदा प्रकाशन सुजानपुर टीहरा से निकाला गया। सन् १९८२ में ही हिमाचल कला, संस्कृति

और भाषा अकादमी द्वारा ''**संस्कार गीत**'' शीर्षक के अर्न्तगत एक पुस्तक प्रकाशित की गई। इस पुस्तक के २०० पृष्ठ हैं और उनमें १९ जनपदों के अलग-अलग गीत सम्मिलित हैं। इन गीतों का हिन्दी अनुवाद इस पुसतक की विशेषता है।

डॉ० कांशीराम आत्रेय द्वारा ''हिमाचली लोक साहित्य मंजूषा'' शीर्षक के अर्न्तगत पुस्तक निकाली गई है। इसमें प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है। पुस्तक छोटे आकार में है परन्तु सामग्री की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। **खुशीराम शास्त्री** द्वारा लिखित ''कांगड़े दियां, लोक कथां'' पुस्तक पर भी प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है। इसमें कुल २७ लोककथाएं सम्मिलित हैं। ''**धम्मपद**'' बौद्ध धर्म का बहुत मूल्यवान ग्रंथ है। इस ग्रंथ का पहाड़ी अनुवाद प्रो० नारायणचन्द पराशर द्वारा सन् १९८३ में प्रकाशित हुआ। पुस्तक साज-सज्जा तथा छपाई की दृष्टि से अति-उत्तम हैं।

सन् १९८३ ई० में भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा ''हिमाचली लोक गीत भाग-१'' का प्रकाशन किया गया। इस पुस्तक के ३१२ पृष्ठ हैं। इस पुस्तक में लोकगीत, लोकगाथायें, श्रंगार गीत, त्यौहार गीत शामिल किए गए हैं।

'उछटी मारनी डिया', डॉ० **वरयामसिंह** का काव्य संग्रह है। इस संग्रह पर सोवियत भूमि नेहरु पुरस्कार भी दिया गया है। पुस्तक के कुल ३१ पृष्ठ हैं और इनमें २५ कविताएं सम्मिलित की गई हैं। एक कविता की कुछ पंक्तियां देखें—

मंणश असा बिण हो फि आख्रा रौचेलू
उछटी मारदा सौ आपणे खिआला मज़ै डिया। पृ० ११)

डॉ० कांशीराम आत्रेय द्वारा सन् १९८४ ई० में लोक साहित्य का तीसरा भाग निकाला गया। इस पुस्तक के कुल ७२ पृष्ठ हैं। मण्डी के बुजुर्ग साहित्यकार **पं० भवानीदत्त शास्त्री** द्वारा ''लेरां धारा री'' शीर्षक के अर्न्तगत काव्य संग्रह निकाला गया। इस संग्रह पर श्री शास्त्री जी को अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पुस्तक में कुल ३९ कविताएं ७६ पृष्ठों में संकलित हैं। एक कविता के अंश देखें—

हाथा पर हाथ धरी उमर गवांदा तू
अलबेले नकटेया, जाण्दे कि नी लान्दा तूं। (पृ० ४९)

वर्ष १९८४ ई० में **स्व० शमशेरसिंह** द्वारा मैक्सिम गोर्की के उपन्यास ''**माँ**'' का पहाड़ी अनुवाद निकाला गया। पुस्तक के ४६० पृष्ठ हैं। इससे पहले भी इन्होंने ७-८ पुस्तकों के बिलासपुरी उपभाषा में अनुवाद किए हैं।

सन् १९८४ ई० में **बालकराम भारद्वाज** द्वारा गीता का अनुवाद ''कृष्ण-अर्जुन संवाद'' शीर्षक के अर्न्तगत मित्र साहित्य परिषद, घुमारवीं की ओर से निकाला गया। **भगतराम मुसाफिर** द्वारा १९८४ में एक और पहाड़ी काव्य संग्रह ''बणी ठणी गोरी चली'' शीर्षक के अर्न्तगत प्रकाश में आई। इस पुस्तक में ३२ कविताएं संकलित हैं। कविता के अंश प्रस्तुत हैं—

जड़क मड़क चाल नोखी
पत्थर मिटिया भलदी जाओ
उचे सैंडल छूए अम्बर
अडिए नै अडी बजदी जाओ

डॉ० गौतम व्यथित द्वारा एक और काव्य संग्रह "गास्सें हत्थ पुजाणे किया" शीर्षक के अन्तर्गत निकाला गया। पुस्तक में ४६ गज़लें ६४ पृष्ठों में संगृहीत हैं। एक गज़ल का नमूना पेश है—

पाई नैं सौं सौंकिया अप्पू लुकी किया
उमरा दे हाणी तेरे, भमदे भमी गै (पृ० ३७)

डॉ० व्यथित की और बहुत सी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं, जिनमें "पहाड़ा रे अत्थरू" ढोलरू आदि प्रमुख हैं।

बी०आर० मुसाफिर द्वारा घर-कुदाल (एकांकी नाटक), **सागर पालमपुरी** द्वारा "मैं बणजारा गीतां दा" (पहाड़ी काव्य), भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा "काव्य धारा भाग-४." **हरिकृष्ण मुरारी** द्वारा "धरती सुरग बणाणी" (काव्य संग्रह) **देवराज संसालवी** द्वारा "लोक कथाएं तथा हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा वर्ष १९८६ में भट्ट नारायण की पुस्तक **"वेणी संहार"** का पहाड़ी रूपान्तर प्रकाश में आये हैं। इस पुस्तक का पहाड़ी अनुवाद **"निर्मोही"** ने किया है। इस पुस्तक के दो शब्दों में अकादमी के अध्यक्ष तथा प्रदेश के (भूतपूर्व) मुख्यमंत्री **श्री वीरभद्रसिंह** जी लिखते हैं— "किसी भी भाषा के साहित्य के विकास में मौलिक साहित्य रचना के अतिरिक्त अनुवाद का विशेष महत्व है। विभिन्न भाषाओं से प्रमुख पुस्तकों के अनुवाद द्वारा न केवल भाषा विशेष के साहित्य में वृद्धि होती है वरन् उस भाषा के पाठकों को दूसरी भाषा का साहित्य भी पढ़ने को उपलब्ध होता है।"

नरेन्द्र अरुण का "नवां सवेरा" खण्ड काव्य, है। इसके ११० पृष्ठ हैं। श्री अरुण, नाटक, कविता, निबन्ध अनुवाद आदि विधाओं के जाने-माने साहित्यकार हैं। इनकी रचनाओं में "रंग-विरंगे फुल्ल", "लद्दाख कनारे," "कुज्जी के फूल" और 'पुण्यरथी' (रश्मिरथी का पहाड़ी अनुवाद) प्रमुख रचनाएं हैं। "रंग-विरंगे फुल्ल" पर इन्हें अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। खण्ड काव्य की परम्परा में मनसाराम अरुण, शेष अवस्थी, नवीन हलदूणवी, संसारचन्द प्रभाकर के नाम भी उल्लेखनीय हैं। अनुवाद के दृष्टिकोण से भी पहाड़ी में पर्याप्ति साहित्य रचा गया है। **पं० भवानी लाल शास्त्री** द्वार पहाड़ी में श्रीमद् भगवद्‌गीता का अनुवाद प्रकाश में आया है। इसके अतिरिक्त **आचार्य कर्मसिंह शास्त्री** द्वारा स्वप्नवासवदत्तम् (पहाड़ी अनुवाद) और केनोपनिषद् (पहाड़ी हिन्दी रूपान्तर) भी प्रकाशित हुए हैं।

सन् १९८९ में **डॉ० प्रत्यूष गुलेरी** द्वारा "वक्ते दी गल्ल" कुलदीप वरजाता की "स्हाड़ी सम्यता" आदि विशिष्ट कृतियां पाठकों को उपलब्ध हुई हैं। हिमाचल अकादमी द्वारा प्रकाशित पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश पहाड़ी भाषा के संरक्षण, संवर्धन व मानकीकरण की दिशा में एक मील पत्थर साबित होगा। तथा इससे भाषायी व सांस्कृतिक अध्ययन का मार्ग भी विकसित हो सकेगा।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि पहाड़ी भाषा का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास है। राजाश्रय और कई कवियों व लेखकों के सार्थक प्रयत्न से पहाड़ी भाषा में इस क्षेत्र की संस्कृति के इतिहास की महत्वपूर्ण विरासत सुरक्षित है। अनेकों शिलालेख अभी तक भी शोधकर्ताओं के लिए आश्चर्य का विषय बने हुए हैं। भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में अभी तक बहुत कुछ किया जाना भविष्य के गर्भ में है। पुनरपि पहाड़ी भाषा का साहित्य अपनी ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए उज्जवल भविष्य की ओर अनवरत गतिशील है। जिससे विकास की संभावनाएं प्रबल हैं।

---

१ पहाड़ी भाषा — मौलूराम ठाकुर पृ० ५०, ५१

२ डॉ० विश्वचन्द्र ओहरी, पहाड़ी रचनासार, पुराणे इतिहासिक पत्र।

३ वही

४ डॉ० प्रत्यूष गुलेरी, हिमभारती, जून, १९८५

५ डॉ० प्रत्यूष गुलेरी, हिमभारती, जून, १९८५ अंक

६ वही

७ डॉ० यशवंतसिंह परमार, हिमाचल प्रदेश क्षेत्र कनै भाषा पृष्ठ २११

८ वही ०१

✶

स्व. डॉ. भीमदत्त काले जयन्ती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध तबलावादक श्री रंगनाथ मिश्र (लखनऊ)

पहाड़ी कविता: छन्द विधान तथा गेयता

डॉ. नीलमणि उपाध्याय

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने निबन्ध 'विश्वविद्यालय की परिकल्पना' में कितनी समीचीन बात कही है, ''प्रतिभा अपनी मातृभाषा द्वारा ही अभिव्यक्ति प्राप्त करती है।'' अपनी धरती पर दृढ़ स्थित होकर जीवन की वास्तविकताओं तथा विभीषिकाओं से संघर्ष करते हुए साहित्यकार अपने साहित्य-सृजन में प्रवृत्त होता है। इस सृजन-प्रक्रिया में सहायक होती है। साहित्यकार की अपनी भाषा। अपनी भाषा-अपनी पहाड़ी में ही नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा तथा मौलिक सृजन का रहस्य निहित है।

पहाड़ी, (हिमाचली) साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रसार-विस्तार कर रही हैं। पद्य-गद्य के विभिन्न स्वरूपों में पहाड़ी साहित्य समृद्ध तथा सम्पन्न हुआ है। आज उसका अपना विशिष्ट स्थान व पहचान है। राष्ट्रीय साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सम्पदा में महत्वपूर्ण योगदान है। पहाड़ी साहित्य की इस अद्‌भुत तथा अभूतपूर्व अभिवृद्धि के साथ हमारा यह दायित्व बन जाता है कि हम इसका वास्तविक मूल्यांकन करें। यहां पहाड़ी कविता में छन्द-विधान तथा गेयता पर एक समीक्षा प्रस्तुत है।

छन्द-विधान : 'छन्दस्' शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से है :

(१) छदि संवरणे—छन्दस् शब्द से यहाँ तात्पर्य है— 'आच्छादन'।

(२) चदि आह्लादे—छन्दस् शब्द का अर्थ यहाँ 'आह्लादन' है।

छान्दोग्य-उपनिषद् में पद्यविधान के सन्दर्भ में छन्दस् शब्द का प्रयोग किया गया है। कहते हैं कि देवता मृत्युभय से त्रस्त थे। इन्होंने इससे बचने के लिये ऋक्, यजु: और साम वेदों में प्रवेश किया और छन्दों ने मृत्यु से उन्हें त्रण देने के लिए उनका आच्छादन किया। इसी से इनकी 'छन्द' संज्ञा अभिहित हुई।

छन्दशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों में अधिकांशत: वर्णिक छन्दों के लिए 'वृत्त' तथा यात्रिक छन्दों के लिये 'जाति' या 'छन्द' शब्द प्रयुक्त हुआ है। वैदिक छन्दों के लिये भी छन्द (छन्दस्) शब्द का प्रयोग किया गया है।

छन्द शब्द इन तीन अर्थों में अभिगृहीत है :

(१) वैदिक छन्दों के अर्थ में।

(२) छन्दोविधान के सामान्य अभिधान के लिये और

(३) विशिष्ट छन्दों (अनुष्टुप, दोहा आदि) अथवा छन्द प्रवृत्तियों (वर्णिक छन्द, मात्रिक छन्द, सम, अर्द्धसम या विषम छन्द आदि) के लिये।

डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' ने 'वृत्त' शब्द को 'छन्द' का समानार्थक माना है। इसके निम्नांकित चार भेद किये हैं : (द हिस्टोरिकल डिवैल्पमैंट ऑफ मैडिवल हिन्दी प्रोजोडी)

१. स्वर-वृत्त (वैदिक वृत्त), २. वर्ण-वृत्त, ३. मात्रा-वृत्त (लौकिक वृत्त), ४. ताल-वृत्त

वर्णवृत्त में वर्ण-संख्या तथा लघुगुण-क्रम का विधान है। तालवृत्त में मात्राओं या वर्णों की चरणसम्बन्धी संख्या की बराबरी वांछित नहीं है। इसमें लय और ताल का आधार लिया जाता है। ताल सृष्टि के लिये समान ताल-मात्रिक इकाइयों (ताल-गणों) की बलाघातयुक्त आवृत्ति रहती है।

जहाँ तक वार्णिक छन्दों का सम्बन्ध है वहाँ गण-विधान किया गया है। 'श्रुतबोध' में गण-लक्षण है :

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्।।

'प्राकृतफलम्' में वर्णिक गणलक्षणों के साथ ही देवता तथा उनके शुभाशुभ फलो का भी निर्देश किया गया है :

गणस्वरूप	गणसंज्ञा		देवता फलाफल	
।।।	नगण	जल	मित्र	बुद्धि
SSS	मगण	पृथ्वी		ऋद्धि
।SS	यगण	अग्नि		सुखसम्पदा
S।।	भगण	काल	मृत्य	मंगल
S।S	रगण	सूर्य		मरण
।।S	मगण	चन्द्रमा	शत्रु	प्रवास
SS।	तगण	नाग		शून्य
।S।	जगण	गगन	उदासीन	उद्वेग

छन्दशास्त्र में मात्रिक छन्दों में गाथा, दोहा, छप्पय, रसिका, रोला, चोपैया, कुंडलिया, दंडिका, माला, दीपक, सोरठा, त्रिभंगी, हरिपद, सवैया, छप्पे, सिंहविलोकित, लीलावती, मदनहार, सुगति आदि का उल्लेख किया गया है।

वैदिक छन्द जो उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित और आरोह-अवरोह पर निर्भर करते हैं उनके अपनाने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इनका प्रयोग लौकिक संस्कृत में भी नहीं हुआ है। जहाँ तक वर्णिक छन्दों की बात है आज का कवि उन बन्धनों में भी नहीं बंधना चाहता है। यह सब अत्यन्त प्रयास-साध्य हैं तथा इनके प्रयोग के लिए हमें गण, यति, प्रत्यय, प्रस्तार आदि का सम्यक् ज्ञान होना चाहिये। इस कठिन अनुशासन को विरले ही अपना पाता है।

वर्णिक छन्दों की कठिनाई का एहसास इसी बात से हो जाता है कि मन्दाक्रान्ता छन्द में रचित मेघदूत का रत्नचन्द 'रत्नाकर' द्वारा 'प्यार सुनेहा' में पद्यानुवाद करते हुए वर्णिक छन्द का परित्याग करना पड़ता है। कवि के स्वयं अपने शब्दों में इसी सीमा का उल्लेख है। वे लिखते हैं, "कविता विच्च सभाविकता ल्योण तिक्कर मैं पहाड़ी सुरांदा सहारा लेया, इसजो देववाणीयाँ दे 'मन्दाक्रान्ता' छन्दे विच्च नीं गुन्देया।"

पहाड़ी कविता में भी स्पष्टतः मात्रावृत्त तथा तालवृत्त का ही सहारा लिया गया है। मुक्तछन्द इसी के विकास की कड़ी है। मात्रिक छन्दों में भी कुछ एक छन्दों, दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, बखै, कुण्डलिया, चतुष्पदी आदि का कहीं-कहीं प्रयोग किया गया है। संस्कृतविज्ञ कवियों ने अन्य मात्रिक छन्दों का भी यथासम्भव

प्रयोग करने का प्रयास किया है। वर्ण हों अथवा मात्राएँ आधुनिक कवि को इनकी परिगणना प्रिय नहीं।

जहाँ तक प्रयोगों की बात है उर्दू की ग़ज़ल को पहाड़ी कवियों ने मुक्तहृदय से अपनाया है। उर्दू की ग़ज़ल की लोकप्रियता भी इसका एक कारण हो सकती है। मंच पर ग़ज़ल अपना प्रभाव तो डालती ही है। शबाब ललित ने 'भागसू दे नौंणें' में ग़ज़लों का सफल प्रयोग किया है। उर्दूनिष्णात होते हुए ग़ज़ल का पहाड़ी कविता में भी सरल और सहज प्रयोग हुआ है तथा इसकी सूक्ष्मताओं और भावभंगिमा को पहाड़ी कविता में भी समाविष्ट किया है। इसी की एक झलक प्रस्तुत है: (भागसू दे नौंणें)

वफा-दारिया दी जग्गे ते रीत मिटांदे लोक मड़े,
बाली थी जे जोत्त असां सह जोत बुझादें लोक मड़े।

दिक्खां किआं अपणा असली रूप दिखांदे लोक मड़े,
मेरे घरे जो जलदा दिक्खी नाटियाँ पांदे लोक मड़े।।

ग़ज़ल को बहुत से पहाड़ी कवियों ने अपनाया है। इसके अपनाने के लिये उन्होंने कुछ तर्क भी दिये हैं। डॉ. गौतम व्यथित अपने काव्य-संकलन 'पुंगरासां' के 'प्रवेश' में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहते हैं, "... इसमें पहाड़ी में ग़ज़ल कहने का प्रयास है। ग़ज़ल का नाम लेते ही कुछ लोग बिदक उठते हैं। ग़ज़ल उर्दू काव्य शैली में से एक है—ख़ूबसूरत और कोमल विधा। इसके कुछ नियम भी हैं—जटिल जिन पर काव्य-रचना सबके वश का रोग नहीं। पुनश्च यह एक काव्य-विधा है, इस पर पहाड़ी में 'शेर' कहे जायें, मेरा प्रयास रहा है। क़ाफिया, रदीफ आदि की बात भी रखी गई है परन्तु ग़ज़ल को पहाड़ी में उर्दू जैसा वातावरण मिलना असम्भव सा है। अत: पहाड़ी में ग़ज़ल की बनावट और भाव, पहाड़ी वातावरण, भाषा तथा लोक-जीवन पद्धति से अवश्य प्रभावित रहेगा, ऐसा प्रतीत होता है।

ग़ज़ल का यह पहाड़ीकरण डॉ. गौतम व्यथित की पुंगरासां ग़ज़ल से उद्धृत हैं:

कर तू जतन देआ कोई दुए दे कम्मे औए।
मिलणी नि देह पलैं-पलैं बेल्ला एह परम है।।
भुलदा तू मत मने ते इतड़ी की गल 'व्यथित'।
दुनिया दे मालके दा कालजा नी नरम है।।

डॉ. पीयूष गुलेरी ने भी 'छौंटें' में गजल का प्रयोग किया है। ग़ज़ल के ही प्रिय विषय-प्रणय और उसके विषाद को इन्होंने इस प्रकार अपनी गजल में व्यक्त किया है:

दस्सा मिंजो तुसां जो क्या मिलदा?
दरसणां तंई हक्खीं जो तरसाई नै।।
जाणें बैरी कुथू जाई लुक्केया?
स्हांजो सच्ची सूलिया लटकाई नै।।

गीत जहाँ फिल्म तथा रेडियो पर लोकप्रिय रहे हैं वहाँ पहाड़ी कवि भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। मंच पर तो गायन और भी सरसता तथा आकर्षण लाने वाला हो जाता है। डॉ. पीयूष गुलेरी ने बतर्ज़-तेरे माथे जो बिन्दला लाणा छोरिये, अपना गीत लिखा है:

चित्त असां धारां मंझ लाणा छोरुआ,
लाणा छोरुआ,
हुण-तां हिमाचले जो जाणा छोरुआ।

देवराज शर्मा ने 'जीणा म्हाचले दा' में अपना गीत 'दिले रे पराउणे दूर' दिया है :

याद तेरी आऊंदी पलें-पलें
ओ जिन्दे पलें-पलें
मेरे दिले-रे पराउणे दूर।

कहना न होगा कि बहुत सी पहाड़ी कविताएँ संगीत का आधार लेकर गीत रूप में लिपिबद्ध हैं। यह दूसरी बात है कि ये कविता के अन्तर्गत दी हैं।

कुण्डलिया मात्रिक छन्द है। यह विषम मात्रिक है। इस छन्द में ६ पद होते हैं। डॉ. प्रत्यूष गुलेरी ने अपने काव्य-संकलन 'वक्ते दी गल्ल' में इसका प्रयोग किया है :

दुस्मण माड़ा काल तैं, मारे सौ-सौ डंग।
होर रोग तां खरा मड़ा माड़ी काली खंग।।

माड़ी काली खंग, पेटे दा कदीहाड़ा।
जदा कुथी नां झोए, राज वैदे दा काड़ा।।

सच बोलै प्रत्यूष, ओ मेरे दोस्त सुरजण।
काल डंगे इक दफा, सौ मारै डंगा दुस्मण।।

कुछ पहाड़ी कवियों ने दोहा, सोरठा, बखै, चतुष्पदी, चौपाई आदि का प्रयोग किया है। इनकी परम्परा इतनी समृद्ध है कि लोग पहाड़ी में अपनी अभिव्यक्ति के लिये अपनाते हैं भले ही वह बहुत सा साहित्य अप्रकाशित हो।

तालवृत्त का ही अधिकाधिक प्रयोग किया गया है। वर्णिक तथा मात्रिक छन्द के अनुशासन तथा बन्धन में न रहता हुआ कवि मुक्त छन्द की ओर प्रवृत्त होता है। उसमें लय ही प्रधान होती है। सहज प्रवाह तथा लयात्मक संगीतात्मकता से युक्त तालवृत्त कवि के भीतर उमड़ती गुमड़ती भावनाओं का वाहक बन जाता है।

तालवृत्त में एक आन्तरिक लय प्रधान होती है। तुक अथवा अत्यानुप्रास का आग्रह नहीं होता। उदाहरणत: डॉ. गौतम व्यथित की कविता 'अपणी अज पणछैण भुलीगै' की ये पंक्तियाँ लीजिए : (काव्यधारा : भाग ४)

भूखे पेटें, थकियो पैरां
ढेल डमाके सुणी नी रुकदा।
इसरे प्रीतां रे गीतां ज
कितड़ी किम्आ पीड़ ए पलदी।
खबरै कुन्ही पच्छैणी हुंगी
भौंए गल पुराणी हुंगी

देवेतेआं री धरती अन्दर
ऐह माहणु हक पाई बोलै
बांजिया जींदे रैहन तुसांता।
दुकड़ु, रुक्खा सुक्खा, लभगा।

जहाँ तुक अथवा अत्यानुप्रास का छन्द-विधान कवि करता है वहाँ भी वह सम, अर्द्धसम और विषम के रूप में विद्यमान रहता है। सम तुक में चारों पंक्तियों में अत्यानुप्रास होता है यथा शबाब ललित के कविता-संग्रह 'भागसू दे नौणे' की ये पंक्तियाँ :

भागसू दे नौणे गोरी-न्हाई करी चली गई
मड़ी अग पाणीए चलाई करी चली गई।
नैणा मेरे नैणां ने मिलाई करी चली गई
उमरां दा रोग मिंजो लाई करी चली गई।।

अर्द्धसम तुक में पद्यांश की प्रथम और तीसरी पंक्तियाँ तथा दूसरी और चौथी पंक्तियाँ अत्यानुप्रास बनाती है। यथा डॉ. पीयूष गुलेरी की 'छौंटे' से ये पंक्तियां (कविता : ग्रहण पहाड़ां दी) :

मनें जो लुभाई मित्तासी एह पहाड़ां दी।
मेहड़ां कनै चली आई गहुण पहाड़ां दी।।

अतुकान्त कविता विषम तुक की रचना है। यह दूसरी बात है कि उसका अपना लय-विधान होना चाहिये। आज का मानव जिसका खण्ड-खण्ड हुआ व्यक्तित्व तथा उलझा-जटिल मन है तथा जीवन की कई विसंगतियों तथा कुण्ठाओं से घिरा है अपनी अभिव्यक्ति के लिये मुक्त छन्द की ओर प्रवृत्त होता है। फिर भी स्थैर्य, स्मरण तथा निश्चयात्मकता की दृष्टि से छन्द का बन्धन सहायक होता है और यह सब प्रयाससाध्य है। युग और उसकी भावनाओं के अनुरूप छन्द विधान में भी प्रयोग चलते रहने चाहिए क्योंकि गति ही जीवन है, प्रगति है।

गेयता : गेयता से तात्पर्य गीत (सौंग) तथा गीति (लिरिक) दोनों से ही है। गेयता का यही व्यापक अर्थ अपेक्षित है। जहाँ तक लोक-साहित्य विशेषत: लोक-गीत, लोक-गाथा का सम्बन्ध है उसकी एक पहाड़ी में लम्बी तथा समृद्ध परम्परा रही है। उसी परम्परा से समृद्ध-सम्पन्न पहाड़ी गीति काव्य भी गेयता से युक्त रहा है। यह पाठकों-श्रोताओं के लिए सरस तथा अत्यन्त हृदयहारी रहा है।

गीतिकाव्य के लिए कई बार अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है यथा गीतकाव्य, प्रगीत काव्य, प्रगीत मुक्तक, वैणिक काव्य आदि। हिन्दी में 'लिरिक' के अर्थ में गीति शब्द ही सामान्यत: प्रयुक्त होता है। अत: इस विवेचन में गेय काव्य के अन्तर्गत गीतिकाव्य ही अभिहित है।

'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में गीति-काव्य के अन्तर्गत 'लिरिक' का अर्थ दिया है : किसी वाद्य यन्त्र के साथ गाई जाने योग्य अथवा योग्य समझी जाने वाली समस्त कविता के निमित्त एक परिभाषिक शब्द। आदि युग में ऐसा कहा जा सकता है कि सभी कविता अपने तात्विक मूल में गीत्यात्मक थीं।' जर्मन दार्शनिक हीगल ने गीति-काव्य के सम्बन्ध में अपना अभिमत स्पष्ट करते हुए कहा, ''गीति-सृष्टि की एक विशेष मनोवृत्ति होती है। इच्छा, विचार और भाव उसके आधार होते हैं। भाव की उत्पत्ति के लिये बाहय पदार्थों का मन में

विनिर्गमन होता है। जब कवि शान्त और सम-चित्त मन:स्थिति में होता है, तब वह कल्पना में बाह्य-जगत-प्रधान हो जाता है। जिससे भाव की उत्पत्ति होती रहती है। इसी से गीति की सृष्टि होती है।''

गीति-काव्य के सम्बन्ध में हिन्दी-समीक्षकों ने अपना गहन विवेचन प्रस्तुत किया है । विभिन्न समीक्षकों ने विभिन्न गीति काव्य के तत्वों को अधिमान दिया है। अपनी व्यापक परिभाषा प्रस्तुत करते हुए डॉ. श्यामसुन्दरदास कहते हैं, ''गीतिकाव्य में कवि अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता है और बाह्य जगत को अपने अन्त:करण में ले जाकर उसे अपने भावों से रंजित करता है। आत्माभिव्यंजन-सम्बन्धी कविता गीतिकाव्य में भी छोटे-छोटे गेय पदों में मधुर भावापन्न, आत्मनिवेदन से युक्त स्वाभाविक ही जान पड़ती है। उसमें शब्द की साधना के साथ स्वर (संगीत) की भी साधना होती है। भावना सुकोमल होती है और एक-एक पद में पूर्ण होकर समाप्त हो जाती है। कवि अपने अन्तर्मन को स्पष्टतया उसमें द्रष्टव्य कर देता है। वह अपने अनुभवों से प्रेरित होकर उनकी भावात्मक अभिव्यक्ति कर देता है।''

परिभाषाओं तथा व्याख्याओं की ऊहापोह में न पड़ते हुए गीति-काव्य के मुख्य तत्वों को हमें अभिहित करना होगा। इसका प्रमुख तत्व स्पष्टत: संगीतात्मकता है। दूसरा प्रमुख तत्व है आत्मनिष्ठता, जिसमें व्यक्तिगत आशा-निराशा, सुख-दु:ख, अभाव-अभियोग अपना ताना-बाना बुनते हैं। तीसरा प्रमुख तत्व है भावाचिति।भावप्रवणता तथा भावातिरेक में गीतिकाव्य-स्वत: नि:सृत होता है। चित्रात्मकता इसका चौथा मुख्य तत्व है जहाँ कवि के मन पर पड़ने वाले कल्पनाप्रसूत प्रभाव का ललित तथा कलात्मक चित्रण होता है। पांचवे तत्व के रूप में इसकी स्वाभाविकता लघुता तथा संदिप्तिता का उल्लेख किया जा सकता है जिनके कारण यह विधा काव्य की अन्य उपविधाओं से पृथक अस्तित्व ग्रहण करती है। छठे तत्व में इसकी लयात्मक अनुभूति तथा आद्योपान्त अप्रतिहत एकतानता का उल्लेख किया जा सकता है। सातवाँ तत्व इसका सुगठित तथा सुसम्बद्ध शिल्प है। फिर जहां तक रसात्मकता तथा रसनिष्पत्ति का सम्बन्ध है वह तो सभी प्रकार के काव्य के लिए अपेक्षित तथा अनिवार्य तत्व है।

गीति-काव्य के भी तीन प्रमुख आधारों अथवा दृष्टियों से भेद किये जा सकते हैं यथा १. शिल्प तथा शैलीगत भेद २. विषयगत भेद तथा ३. भाषागत भेद। शिल्प तथा रचना-पद्धति की दृष्टि से मुख्य उपभेद इस प्रकार हैं—१. गीत (सौंग) २. गाथा-गीति जिसमें गेय तथा पाठ्य (रिसाइटल) का सम्मिश्रण होता है ३. रूपक-गीति जिसमें चित्रों तथा प्रतीकों का सहारा लिया जाता है ४. संबोधन-गीति (उरोड़ पद्धति) इसमें किसी व्यक्ति तथा वस्तु का सम्बोधन करके अपनी बात कही जाती है ५. पत्र-गीति (एपिसल) ६. चतुर्दशपदी गीति (सोनेट) अर्थात् १४ पंक्तियों में लिपिबद्ध गीतिकाव्य ७. गीतिनाट्य (लिटिकल ड्रामा) जिसमें गीति तथा नाट्य दोनों का समन्वय होता है। ८. गद्यगीति तथा ९. एपीग्राम (सूक्ष्मोक्ति) इसे समाधि-गीति भी कहा जाता है। विषयगत गीति-काव्य के उपभेद हैं—१. भावगीति २. विचारगीति तथा ३. वस्तुगीति। भावगीति के अन्तर्गत प्रेयगीति (कयावलिटिक), शोकगीति (एलिजी) शौर्यगीति (बैलेड), श्रृंगारगीति (संयोग तथा विप्रलम्भ) आदि की गणना की जा सकती है। भाषा-गत भेद में लोक-गीति-काव्य तथा साहित्यिक गीति-काव्य का उल्लेख किया जा सकता है।यहाँ यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि लोकगीतों का अपनी सहजता तथा सरसता के कारण अपना विशिष्ट आकर्षण तथा स्थान है।

पहाड़ी कविता के संरक्षण तथा संवर्धन में अग्रणी स्वर्गीय लालचन्द प्रार्थी 'चान्द' ने पहाड़ी में कविता-

रचना द्वारा पहाड़ी कवियों का मार्ग प्रशस्त किया। गीतिकाव्य की गेयता, संगीतात्मकता तथा सौन्दर्यानुभूति व भावप्रवणता का एक सुन्दर उदाहरण है उनकी कविता 'नार कि कटार थिया'। वे लिखते हैं :

मनुरी मनाली देखी, थीपू लौंगा वाली देखी।
ठोडी तिल्ले आली देखी, बधिया श्रृंगार थिया।।

भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित काव्य धारा (भाग २) से उद्धृत प्रार्थी जी की यह कविता गीतिकाव्य की एक अनुपम कृति है। लघुता, संक्षिप्तता तथा प्रभावान्विति के तत्वों से युक्त भावानीदत्त शास्त्री की कविता 'जाहण की नीं लाँदा तूं' से यह उदाहरण द्रष्टव्य है :

भयागारा नी पता तुज्जो
सांझारा नी पता तुज्जो,
तेरी भ्यागा तेबे, जेबे
जागणा आवांही तुज्जो।
रात तेरी तेबे जेबे
पी पी डिब्बर हुंआ,
सई जांहा तेत्थी जेत्थी
नीन्दर आवांही तुज्जो।
इहयां मोया कौं तक
जिंदडी बितांघा तूँ,
अलबेले नकटेया,
जाहणे की नी लान्दा तू।

यह कविता आज के युवकों के आलस्य तथा प्रमाद पर तीखा व्यंग्य है और जीवन की यह सच्चाई बड़े प्रभावशाली ढंग से इस कृति में व्यक्त हुई है। (काव्यधारा, भाग ३)

भक्तिभावना से युक्त भेंट के समान ही राम दयाल नीरज का 'मां रेणुका' में यह समर्पण है :

तेरी हाजरी दे आये, माई रेणुका मां रेणुका।
दुःखो तापो रे सताये, माई रेणुका मां रेणुका।।

इस प्रकार की कृति में गेयता का प्राधान्य रहता है तथा इसके लिये भाषा की सरलता, सहजता तथा प्रवाह अपेक्षित रहते हैं। (काव्य धारा, भाग ३)

काव्यधारा (भाग ४) में 'गीत-गज़लें' संभाग के अन्तर्गत कई काव्य-गीत दिये गये हैं। इन गीतों में स्पष्टतः संगीतात्मकता की प्रधानता है। उदाहरणस्वरूप डॉ. पीयूष गुलेरी का यह गीत लीजिए :

छड़ छड़ छड़ छड़ बगदे एह नालू
नची-नची हस्सदे नैं टपदे गुआलू
जिन्दू जै गम असां रता वि निं लाणा
दुयां दा वि गम असाँ पी लैणा वो

जी लैणा जी लैणा जी लैणा वो।
असाँ रली मिली, मिली जुली जी लैणा वो।।

इस गीत में संगीतात्मकता को पुष्ट करने के लिये ध्वन्यात्मकता, पुनरुक्ति तथा लयात्मकता का आश्रय लिया गया है जो इसे और भी कर्णमधुर तथा सरस बना देता है।

जयदेव किरण ने पहाड़ी-कविता में गीतों की रचना की है। गीतात्मकता इसका सशक्त पक्ष है। 'सभणी रा प्यार' में वे कहते हैं: (अजाद देशशारे पंछी'— काव्य-संकलन)

आपणे ई पेरा पर भार लेई लो।
गाँवाँ-गाँवाँ सभणी रा प्यार लेई लो।।

'पात्थरो रे माणहू' रा बचार लेई ले।
गाँवाँ-गाँवा सभणी रा प्यार लेई लो।।

कहना न होगा कि प्यार के सम्बल से कवि ने प्यार का यह सन्देश दिया है कि हम सबको सबका प्यार प्राप्त करना चाहिये।

मनोहर सागर पालमपुरी ने प्रेम को आधार बनाकर उसके साथ मिलने वाली पीड़ा तथा छले जाने के भाव को अत्यन्त सुकोमल-सरस पदावली में व्यक्त किया है:

कुथु जाई बसेया दिल मेरा,
कैंह अपणे मकानां ते निकली गेया।
थी जिसदी गरज गरीबां जो,
सै सौदा दुकाना ते निकली गेया।
सागर इक कण था धरती पर
जेहड़ा तिखेयां तुफानां ते निकली गेया।

प्रणय एक सुकुमार भावना है और फिर कल्पना के पंख लगाकर न जाने किस-किस लोक का विचरण कर आती है और कैसी अनदेखी-अनजानी दृश्यावली प्रस्तुत करती है। प्रेम की इसी सुकोमल भावना का चित्रण खेमराज गुप्त 'सागर' ने 'हाखियाँ' कविता में किया है। वे कहते हैं:

हाखियां अन्दर बस्सियां हाखियां
रोईया बीते हास्सियां हाखियां
पागलां सांही करण हरकतां
सचमुच पागल होईयां हाखियां
हाखियां से कजरारी हाखियां।

आंखों के इसी वैचित्र्यपूर्ण संसार में वेदना-करुणा से प्राप्त अपनापन खोजने वाला कवि आंखों के आँसुओं का भी स्वागत करता है तथा एक परिवर्तित भाव-दृश्य हमारे सामने प्रस्तुत होता है। चन्द्रमणि विशिष्ठ की कविता की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं (काव्य धारा, भाग ४)

भाषा-प्रेम देश-प्रेम की ही स्वाभाविक उत्पत्ति है।

न केवल हिमाचल प्रदेश बल्कि इसके विभिन्न प्राकृतिक सौन्दर्य सम्पन्न भूभागों की स्तुति में कवियों ने वाणी दी है यथा 'मेरा छैल कांगड़ा' (मेरा छैल हिमाचल), म्हारा बिलासपुर (मेरा छैल हिमाचल), 'औआ कुल्लू चलिये' (भागसू दे नौणे), मंडी री सांझ (लेरां धारां री म.द.) चम्बे दी धार (म्हाचल च होई भियाग— मित्र भूम्पलवी), कांगड़ा देस प्यारा (पुंगरासां-गौतम व्यथित) आदि।

यह भी द्रष्टव्य है कि बहुत से पहाड़ी काव्य-संकलनों का नाम हिमाचल अथवा हिमाचल प्रदेश से सम्बद्ध है यथा 'मेरा देश म्हाचल' (डॉ. पीयूष गुलेरी) जीणा म्हाचले दा (देवराज शर्मा) 'मेरा हिमाचल मेरा घर' (रूप शर्मा), म्हाचले च होई भियाग (मित्र भूम्पलवी), लेरां धारां री (प० भवानीदत्त शास्त्री), भागसू दे नौणे (शबाब ललित), मेरा छैल हिमाचल (मुसाफिर हमीरपुरी) धारा दियाँ धुप्पाँ (शेष अवस्थी) आदि।

हिमाचल प्रदेश तथा हिमाचली बोली ही नहीं बल्कि इसके भूभागों की संस्तुति के साथ वहाँ के त्योहारों, मेलों, देवी-देवताओं, लोक-साहित्य की प्रणय-कथाओं के नायक-नायिकाओं, शूरवीरों, इतिहास, परम्परा आदि ने भी पहाड़ी कवियों को आकृष्ट किया है तथा उनकी हृदय-तन्त्रियों को झंकृत किया है। उदाहरणत: 'शिवरात्रि' (भवानीदत्त शास्त्री, लेरां धारां दी) चम्बेरी चंचलो (मेरा छैल हिमाचल-मुसाफिर हमीरपुरी), बाबा कांशीराम (वक्ते दी गल्ल-डॉ. प्रत्यूष गुलेरी) लालचन्द प्रार्थी (कुज्जी के फूल-नरेन्द्र अरुण), इन्दिरा जी (रंग बिरंगे फुल्ल-नरेन्द्र अरुण), बिशू (जुएणी रे आशू-सी.आर.बी. ललित) झूरी (ऊछटी मोरनी डिया-वरयामेसिंह), वैष्णो देवी, मैं भी लोहड़ी मंगणी, रखड़ियां दा तिआर— नगारे दी चोट-शशिकान्त शास्त्री, हर गंगे (पीडाँ रा पटारू-बी.आर. मुसाफिर), हिमाचला री ब्यास (काव्यधारा भाग-२ डॉ. कांशीराम) मां रेणुका (काव्यधारा भाग-३ रामदयाल नीरज), होलिया दी बहार (काव्यधारा भाग-४ देसराज डोगरा), सैर आई (काव्यधारा-४ स्वरूप धीमान), यमुना रा किनारा (काव्यधारा भाग-४ हरिदास), होलिया रा रंग लठ्या (काव्यधारा भाग-४ मनसाराम 'अरुण'), होली आई, होली आई (काव्यधारा भाग-४ डॉ. गौतम व्यथित), रेणुका माई (काव्यधारा भाग-४ चन्द्रमणि वशिष्ठ), परशुराम (काव्यधारा भाग-४ प्रेमप्रकाश निहालटा), बापू गांधी (आजाद देशा रे पंछी-जयदेव किरण), म्हारे ग्राए च आई जनेत (एह दुनिया-नवीन हलदूणवी), राखी-भवानी-दिवाली (प्यारो री कलियाँ-मदन हिमाचली) आदि विषयगत गीतिकाव्य के उपभेद— भावगीति, विचारगीति तथा वस्तुगीति हैं। भावगीति की संगीतात्मकता, आत्मनिष्ठता, भावप्रवणता, चित्रात्मकता, लघुता, संक्षिप्तता, लयात्मकता, अप्रतिहत एकतानता आदि गुणों से युक्त पहाड़ीगीति काव्य के विवेचन के पश्चात् विचार-गीति साहित्य का भी अवलोकन करना चाहिये। विचारगीति में गीति तत्वों की अपेक्षा विचार का प्राधान्य रहता है। विचार भी ऐसा जो बौद्धिक-बोझिल न होकर सहृदयता तथा काव्य-रस से युक्त हो। ऐसे गीति-काव्य में कवि की अपनी दृष्टि रहती है तथा वह कविता के माध्यम से कोई विचार अथवा सन्देश संप्रेषित करना चाहता है। विचार तथा रसोद्रेक का समन्वय ही विचारगीति का प्राण है।

पं. भवानीदत्त शास्त्री अहंकार और उससे उत्पन्न दोष-कालिमा का बड़े ही सहज शब्दों में इस प्रकार वर्णन करते हैं : (लेरां धारां दी)

सच्च बोलांदी आस्था री स्याणी
'अक्कड़ हुआ ही हाखी री काणी।'

म्यागा म्यागा जेबे जागणा आई
हुड़ी नी राण्डा री मेरी झमाई।
हाका लगी गया बाहुड़ी थे भाई,
न्हाउंदी लगीरी थी आंगणा ताई।
सटेया केस्सिये पौड़े थे पाणी,
ताई बोलांही, हे कुणां ए काणी।
हाऊं ता नीं ही, तेरी माव हो काणी
बैहण काणी तेरी बेटी हो काणी।
लड़दी लगी इहयाँ द्राणी जठाणी,
मंजो ता म्यागा ही पई गया पाणी।
सच बोलां ही आस्सा री सयाणी
'अक्कड़ हुआँ ही हाखीरी काणी।'

प्रात: प्रात: दराणी-जेठानी का स्वामाविक बैर तथा इस चित्र द्वारा उभरता यह सन्देश है कि अहंकार के मद में मनुष्य कुछ देख नहीं पाता।

चन्द्रशेखर बेबस पहाड़ों में ग्रीष्मोत्सव का वर्णन करते हुए ऋतु-चक्र को स्वाभाविक मानते हुए यही संदेश देते हैं : (काव्यधारा: भाग-४) :

आपणा नी जोरा किछ माण्हू गोए बेबस।
जंडा डाहे मालक ए तंढा रोहण आला सा।।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत तथा मन ही मनुष्यों के बन्धन-मोक्ष का कारण है मन एव मनुष्याणां कारण बन्धयोमोक्षयो:—इसी प्रकार के भावों को खेमराज गुप्त 'सागर' अपनी कविता 'मन' में उजागर करते हैं। वे कहते हैं कि मन की निराली माया है तथा कोई इसका भेद पा नहीं सका। मन के अच्छे-बुरे पर ही सब कुछ निर्भर करता है। मन ही मित्र है तथा मन ही शत्रु है तथा मन के हारने से मानव हार जाता है और मन के जीतने से जीत जाता है। मन पर विजय पाने वाला ही सच्चा योगी है। वे आगे कहते हैं : (काव्यधारा भाग-४) :

मन चाहे ता सुरगाँ ताँई
माहणू जो से लेई जान्दा
जे चाहे ता नरका तांई
माहणू जो बी ऐही पुजान्दा

अन्तरिक्ष रे विस्तारां बिच
मुशकल नी है मना रा जाणा
योग-जोग, ते रिद्दि सिद्दि
मुशकल नी है मना रा पाणा

मना री चाल न पुच्छो
मना रा हाल न पुच्छो।।

व्यक्ति को अपने ऊपर ही निर्भर रहना चाहिये। पं. जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में दूसरों पर निर्भर करना निराशा को आमन्त्रित करना है। फिर दूसरे ऐसे हैं जो शोषक हैं तथा पर-पीड़न ही जिनका काम है। हमें तो अपनी जीवन-यात्रा पर ही ध्यान केन्द्रित करना होगा। यही सत्य डॉ. ओम प्रकाश सारस्वत अपनी इस कविता में व्यक्त करते हैं : (काव्यधारा भाग-४) :

असां आस रक्खी कुआलु चढ़ी गये,
असां गलुए पुज्जी बी पाणी नी पीता
असां बैठी चिन्ददे रैह साथां रियां बातां
तिन्हां खिड़ियां आस्सां रा फुल्ल तोड़ी नीता

जीवन मिल-जुलकर चलने में ही है। जीवन-यात्रा में सहयात्री बनने में ही सुख है। यही बात सी.आर.बी. ललित अपनी इस कविता में कहते हैं : (काव्यधारा भाग-३) :

बाट तिज्जो दस्सी ती
चल कट्ठे चलिये।
ज़िन्दगी रे चार ध्याड़े
मिली-जुली चलिये।

'शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वतलंघनम्' अर्थात् धीरे-धीरे एक एक कदम चलकर ही जीवन-यापन किया जा सकता है। जीवन की लम्बी यात्रा धीरे चलकर ही पूरी की जा सकती है। यही भाव काहन सिंह 'जमाल' अभिव्यक्त करते हैं : (काव्यधारा भाग-३) :

कितनी कितनी पगडण्डी जमाल चढ़ी उतरी हौली,
जिन्दगी रा सफर काटा सौ पगडण्डी पगडण्डी।

नवप्रभात नये युग का संकेत है। जो भी हो हमें नये युग तथा नये परिवर्तन के लिये तत्पर होना होगा। नरेन्द्र अरुण इसी सत्य को अपनी कविता में वाणी देते हैं। (नवां सवेरा)

जन्तरी कुण पण्डित बांचीगा
से भ्याणू तारा राहची गा,
भ्याणू रा मूल ग्वाची गा,
आई जा झठ, आई जा
शुभ नवें सवेरे! आई जा।

जहाँ तक वस्तुगीति का सम्बन्ध है पहाड़ी कविता में भी कई बार वस्तुओं की परिगणना मात्र होती है। कवित्व गौण होकर वस्तुओं तथा व्यक्तियों का मात्र उल्लेख होता है। ऐसी नाम-गणना सम्पूर्ण कविता में न रहकर कुछ अंशों में रहती है। जहाँ आवश्यक हो और सम्पूर्ण कविता की प्रभावाचिति कवित्वपूर्ण हो वहाँ तो यह

सब वस्तु-परिगणना निभ जाती है अन्यथा इससे कवित्व को आघात तो पहुँचता ही है।

भाषागत गीतिकाव्य के दो प्रकार-लोकगीत तथा साहित्यिक गीतों के सम्बन्ध में यह ध्यातव्य है कि आकाशवाणी शिमला ने इन्हें प्रचारित-प्रसारित तथा लोकप्रिय बनाने में बड़ा सहयोग दिया है। दूरदर्शन के माध्यम से अब इसके विकास की सम्भावनाएँ और भी बढ़ जायेंगी।

पहाड़ी गीतिकाव्य का गहनता तथा व्यापकता दोनों दृष्टियों से मूल्यांकन अपेक्षित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में जो विहंगमावलोकन किया गया है उसके आधार पर इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि हमारा पहाड़ी गीतिकाव्य गीत, गज़ल आदि के रूप में जितना विकसित हुआ है वहाँ विचार-गीति में वह सूक्ष्मता, गहनता, व्यापकता, तीव्रता तथा दार्शनिकता नहीं आ पाई है जो किसी भी काव्य को महान और मूल्यवान् बनाती हैं। फिर गाथा-गीति, रूपक-गीति, संबोधन, गीति पत्रगीति, चतुर्दशपदीगीति, गीतिनाट्य, गद्यगीति, एपीग्राम (सूक्ष्मोक्ति) के विभिन्न रूपों में भी इसका विकास अपेक्षित है जिससे पहाड़ी गीतिकाव्य न केवल समृद्धसम्पन्न होगा बल्कि अपनी पहचान भी बना पायेगा और साहित्य-जगत में अपना विशिष्ट स्थान तथा पद प्राप्त करेगा।

पहाड़ी लोकगीतों से प्रेरणा लेते हुए तथा उसके विभिन्न स्वरूपों को हृदयगम करते हुए हमें पहाड़ी का उपयुक्त छन्द-विधान विकसित करना चाहिये। गेयता में मुख्य बात तो विश्वजनीन लयात्मकता तथा एकात्मकता तथा ब्रह्माण्ड में निहित दिव्य संगीत की अनुभूति है जिससे काव्य अपनी गरिमा तथा उदात्तता प्राप्त करता है। कवि स्रष्टा है तथा वह नये विश्व जो अभाव तथा शोषण से रहित शान्ति और प्रगति का पुरःसर है, का विधाता है। कहा भी है कि इस असार संसार में कवि हीं प्रजापति है तथा जैसा उसे लगता है वैसा संसार निर्मित करता है :

अपारे काव्य-संसारे कविरेव प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते।।

★

ललित कला अकादमी तामिलनाडु और हिमाचल अकादमी द्वारा शिमला के गेयटी थिएटर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के अवसर पर सर्व श्री राधा रमण शास्त्री विधान सभा अध्यक्ष हि०प्र०. और श्री ए. नटराजन सचिव (भा.सं.) तामिलनाडु तथा ललित कला अकादमी के सचिव श्री बाला सुब्रह्मण्यम।

यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण : एक विवेचन

डॉ. चमन लाल गुप्ता

यशपाल के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी पात्रों का विश्लेषण करने से पूर्व यह स्वाभाविक है कि हम उन प्रमुख प्रभावों पर विचार करें जो कि संभवत: उन के नारी विषयक चिन्तन को प्रभावित करते रहे हैं। यशपाल जी के साहित्य में भारतीय नारी के विविध रूप दृष्टिगत होते हैं और निश्चय ही उन रूपों की पृष्ठभूमि उनके पारिवारिक शैक्षिक, व्यावसायिक तथा अन्य कार्यकलापों से संचित अनुभवों से निर्मित है। अपने परिवार में बालक यशपाल को जिस नारी ने सर्वाधिक प्रभावित किया, वह उनकी मां थी। फिरोजपुर के अनाथालय के स्कूल में पढ़ते हुए अपने दोनों बेटों का पालन करती हुई, अभावों से लड़ती और घर गृहस्थी को संभालती हुई अपने आत्म सम्मान एवं वैचारिक स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखती हुई इस नारी ने जो अपने को ''शाम चौरासी'' के राजघराने से जोड़ती थी, निश्चय ही बालक यशपाल की नारी संबन्धी धारणाओं को एक नया आयाम दिया होगा। महाजनी का धन्धा करने वाले कंजूस पिता हीरा लाल के प्रति यशपाल की सहज विरक्ति शायद इस लिए भी थी कि उन्हें मां की ममता मिली परन्तु पिता का संरक्षण नहीं मिला। यशपाल की माता प्रेमादेवी आर्य समाजी विचारों की थी और उन्होंने बालक यशपाल को दयानन्द का सच्चा सेवक बनाने के लिए गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाना उचित समझा यह उनकी प्रगतिशीलता एवं विकसित चेतना का ही परिणाम था। संभवत: आर्य समाज के राष्ट्र-प्रेम एवं समाज-सुधार के आदर्शों ने उसे प्रेरित किया। यशपाल के नारी संबन्धी विचारों में जो एक प्रकार की उदारता, स्वच्छन्दता एवं सहनशीलता है वह गुरुकुल कांगड़ी में संचित अनुभवों की प्रतिक्रिया है। नारी पतन का मूल है, उस से दूर रहना चाहिए प्रेम एवं यौन संबन्ध पाप है, उन से बचना चाहिए, ब्रह्मचर्य जीवन मूल्य है, उस की हर कीमत पर रक्षा होनी चाहिए ऐसे कठोर एवं परम्परावादी विचार गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षा का अभिन्न अंग थे और आगे चल कर यशपाल जी ने अपने साहित्य में इन विचारों का खण्डन किया और अपनी तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। अपने क्रान्तिकारी जीवन में यशपाल अनेक निर्भीक, साहसी एवं सर्वस्व होम करने को कटिबद्ध नारियों के सम्पर्क में आए होंगे और उन्हीं में से यशपाल के उपन्यासों की राजनैतिक कार्यकर्ता महिलाएं निकली होंगी। यशपाल की धर्मपत्नी प्रकाशवती पाल ने जेल में यशपाल जी से शादी करके सामाजिक बन्धनों को चुनौती दी। विप्लव पत्रिका चलाने के लिए अपने आभूषण बेच दिए और दिन रात प्रेस में काम किया। उन्हीं में यशपाल को पत्नी के रूप में जीवन साथी का सही रूप मिला होगा। यशपाल जी की विदेश यात्राओं तथा महिला मित्रों से भी उन के नारी संबन्धी विचार बने होंगे। मार्क्सवादी चिंतन तथा फ्रायड की अवधारणाओं का प्रभाव भी उन के नारी पात्रों के चित्रण पर पड़ा है।

समाजवादी, यथार्थवादी उपन्यासकारों में यशपाल का प्रमुख स्थान है। पात्र चित्रण की उनकी शैली यथार्थवादी, समाजवादी उपन्यासकारों के अनुरूप ही है क्योंकि वे अपने उपन्यासों के नारी पात्रों को

(यशपाल जयन्ती दिनांक ३ दिसम्बर, १९८६ के अवसर पर पढ़ा गया विषय-पत्र)

परिस्थितियों के वात्याचक्र में निर्द्वन्द्व फेंक देते हैं ताकि उनके चरित्र का स्वाभाविक विकास हो सके। उच्च ब्राह्मणकुल की कन्या दिव्या परिस्थितियों के भंवर में फंस कर दासी, वेश्या एवं पत्नी बनती है। शैल, (दा.का.) धनी पिता की सन्तान हो कर भी कुंवारी मां बन कर क्रान्ति-कारी दादा के साथ अनजान भविष्य की ओर कदम बढ़ा देती है। सोमा (मनुष्य के रूप) ग्रामीण, पीड़ित विधवा से बम्बई की फिल्म अभिनेत्री बन जाती है। परिस्थितियां मानव चेतना और चरित्र का निर्माण करती हैं यह यशपाल के नारी पात्रों के चित्रण से स्पष्ट है।

पात्र-चित्रण की दूसरी कसौटी आर्थिक परिवर्तन की है। मानवीय संबन्धों की मूलाधार आर्थिक ढांचा है ऐसा मानने के कारण समाजवादी लेखक अपने पात्रों को आर्थिक परिवर्तनों से गुजारते हैं। यशपाल के नारी-पात्र आर्थिक परिवेश बदलने पर बदली हुई चेतना का परिचय देते हैं। देशद्रोही की भीरु यमुना, जो भाई के सम्मुख जुबान नहीं खोल सकती थी, आर्थिक दृष्टि से आत्मा निर्भर होकर न केवल विजातीय सुजान से प्रेम का दम भरती है बल्कि उसे छुड़ाने के लिए मुकदमा भी लड़ती है। मनुष्य के रूप में सोमा के बदलते रूप हों या ''झूठ सच'' की कनक और तारा का चारित्रिक परिवर्तन हों, सब का आधार उन का बदला हुआ आर्थिक परिवेश है

यशपाल के नारी-पात्रों का स्वाभाविक विकास घटनाओं के माध्यम से अंकित है। ''झूठ-सच'' में देश के विभाजन की त्रासदी किस प्रकार नारी-पात्रों के चरित्र को बदलती है, यश दर्शनीय है। ''बारह घण्टे'' में कैटम और विनी का विवाह, घटनाओं के अधीन है। देशद्रोही की राज, राजनीति में आती ही नहीं यदि उस के पति को बजीरी बन्धक बना कर न ले गए होते।

यशपाल के नारी पात्र काम सम्बन्धों में स्वतन्त्रता एवं समानता के पक्षधर होने के कारण अनेक सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण करते हैं जिस के परिणाम स्वरूप प्रतिगामी, सदिवासी समाज में हलचल मचती है। यशपाल की नारियां समाज के क्रोध का दृढ़तापूर्वक सामना करती हैं।

समाजवादी यथार्थवादी चेतना से प्रतिबद्ध होने के कारण लेखक यशपाल के नारी पात्र सामाजिक विकृतियों से लड़ते हैं तथा असफल होने पर कुंठित भी हो जाते हैं। रूढ़िवादी समाज के गले-सड़े अंश टूट कर बिखरते हैं और इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन के चिह्न दिखाई पड़ते हैं।

यशपाल के कुछ नारी पात्र सीधे मार्क्सवादी विचारों के पोषक हैं जैसे पार्टी कामरेड़ की ''गीता'', दादा कामरेड की ''शैल'' मनुष्य के रूप की मनोरमा तथा झूठा सच की ''कनक'' और कुछ पात्र सामान्यता प्रगतिशील चेतना के वाहक हैं जैसे देशद्रोही की यमुना, दिव्या की दिव्या तथा तेरी मेरी उसकी बात की उषा। यशपाल ने नारी पात्रों के चित्रण में मनोवैज्ञानिक तथ्यों को दृष्टिगत रखा है और पात्रों की स्वाभाविकता तथा विश्वसनीयता बनाए रखने का प्रयास किया है। इस प्रक्रिया में भले ही काम संबन्धों का आधिक्य चित्रित हो गया है। प्रायः नायक का ह्रास यहां हुआ है क्योंकि नारी पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

यशपाल के नारी पात्रों में नैतिकता के पुराने गढ़ पर बार-बार प्रहार किया है, नए युग की नई नैतिकता की मांग की है जिस का आधार सहज जीवन है। नारी की वैयक्तिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक स्वतन्त्रता पर बल देते हुए नारी शोषण के सभी रूपों की आलोचना की गई है।

यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्रों के चित्रण का विश्लेषण करते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके नारी पात्र अत्यन्त विस्तृत सामाजिक पटल पर अंकित हैं। यशपाल के पात्र पूंजीवादी व्यवस्था से भी जुड़े हैं और

समाजवादी व्यवस्था का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, वे वजीरीस्तान के आदिम समाज के प्रतिनिधि भी हैं और दिल्ली, बम्बई की पांच सितारों वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। उन के नारी पात्र मजदूर वर्ग से भी हैं, मध्यमवर्गीय परिवारों से भी और उच्च सामाजिक स्थिति वाले पूंजीपतियों एवं प्रशासकों से भी जुड़े हैं। यशपाल के नारी पात्र पौराणिक कथाओं से भी आगे हैं, ऐतिहासिक पृष्ठों से भी और वर्तमान समाज से भी। हजारों वर्षों से भारतीय समाज, नारी के प्रति कैसा व्यवहार करता रहा है इस का परिचय देने वाला नारी पात्रों का एक लम्बा काफला अतीत से चल कर वर्तमान तक आता प्रतीत होता है। नारी की समस्याएं हर युग में बदलती रही हैं पुरुष-प्रधान समाज में नारी की स्वतन्त्रता का प्रश्न, पुरुषों के अत्याचार एवं आधिपत्य का प्रश्न, नारी के व्यक्तित्व विकास एवं स्वतंत्रता का प्रश्न, उस की प्रेम, विवाह एवं यौन संबन्धों से जुड़ी नैतिक-भौतिक मान्यताओं का प्रश्न, उसके वस्तु से व्यक्ति बनने का प्रश्न, कुल मिलाकर ये सब प्रश्न नारी के मुक्त सहज जीवन के प्रश्न से जुड़ गए हैं।

यशपाल के साहित्य में नारी-मुक्ति का स्वर अत्यन्त प्रखर, स्पष्ट, प्रामाणिक एवं तर्क-सम्मत है। नारी-मुक्ति का समर्थन उन के साहित्य में कोरी भावुकता अथवा सामयिक नारेबाजी से प्रभावित नहीं बल्कि यह तो सुचिन्तित प्रतिबद्धता का परिणाम है। उन के प्रथम उपन्यास ''दादा कामरेड'' से लेकर अन्तिम उपन्यास ''मेरी तेरी उसकी बात'' तक की यात्रा .ारी-संघर्ष एवं नारी मुक्ति के अनवरत प्रयासों की गाथा है। यशपाल का भौतिकवादी प्रगतिशील चिन्तन नारा के समस्त बन्धनों को काटने के लिए निरन्तर कटिबद्ध दिखाई पड़ता है। लगभग चार दशक तक अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी को विविध रूपों और रंगों में चित्रित करने वाले यशपाल निश्चय ही नारी आत्मा के महान शिल्पी हैं। नारी, समाज के किसी भी वर्ग से हो, किसी भी धर्म से, किसी भी आर्थिक व्यवस्था का अंग हो, शिक्षित हो अथवा अनपढ़ हो, अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए नारी का निरन्तर संघर्ष करते यदि कहीं देखा जा सकता है तो वह यशपाल के उपन्यासों में ही। नारी मुक्ति का आदर्श समाजवादी व्यवस्था को मानते हुए यशपाल निरन्तर वर्गीय समाज को तोड़ने और वर्गहीन समाज की रचना करने का स्वप्न देखते रहे हैं।

नारी का सहज, संतुलित, आकर्षक एवं सजीव चित्र बनाते समय लेखक यशपाल कभी नारी को पौराणिक आधार-फलक पर रख कर देखते हैं तो शकुन्तला की परवशता और मेनका के अप्सरोचित मुक्त चिंतन का संसार रचते हैं (अप्सरा का श्राप), कभी इतिहास के पन्नों से धूल पोंछ कर अतीत का साक्षात्कार करते हैं तो तथाकथित स्वर्णिम अतीत के गर्भ से ''दिव्या'' सी सुन्दर, सुशिक्षित, कलासम्पन्न उच्चकुलोत्पन्न नारी की दु:ख गाथा उन्हें मिलती है जो विवाहपूर्व आकर्षण, प्रेम एवं समर्पण का दण्ड स्वदेश निष्कासन के रूप में पाती है, पशुओं की तरह दासों की मण्डी में बिकती है, अपने नवजात शिशु के लिए अपने ही स्तनों के दूध की चोरी करती है क्योंकि खरीदी हुई दासी के रूप में उसे अपने दूध पर भी अधिकार नहीं है, आत्महत्या उसके लिए निषिद्ध है और जीवन एक अभिशाप, ऐसी नारी को तथाकथित प्रगतिशील, रूढ़िभंजक बौद्ध-धर्म भिक्षुणी बनने का अधिकार नहीं देता क्योंकि इस के लिए पति, पिता, पुत्र अथवा भाई की स्वीकृति आवश्यक है। रत्नप्रभा वेश्या के रूप में समाज उसे मुक्त नारी के रूप में मान्यता देता है, उसे धन, मान, प्रदान करता है। कैसी विडम्बना है कि जो दिव्या एक पृथुसेन को शरीर सौंपने पर लांछित, कलंकित एवं भ्रष्ट मानी गई वहीं नर्तकी बन कर, सब के मनोरंजन का खिलौना बन कर आदर की पात्र बना दी गई। बौद्धकालीन समाज में दासी हिता (अमिता) बूढ़े, रोगी राजा के सामने सर्द रात में नग्न बैठने के लिए विवश है ताकि बूढ़े की कामुकता को बहला

सके। दासी का शर्माना या संकोच करना अपराध है जिस के लिए उसे कोड़े पड़ते हैं। जिस समाज में अबोध बालिकाओं को दासी के रूप में खरीद कर कामुक राजा की सेवा के लिए पाल कर जवान किया जाता हो, वहां नारी शोषण की भयंकरता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। दासी को वस्त्राभूषण पहनने का अधिकार नहीं, प्रेम करने या विवाह करने का अधिकार नहीं। दिव्या के माध्यम से यशपाल ने पुरुष प्रधान समाज की दोगली नैतिकता पर प्रश्न-चिन्ह लगाया है। पुरुष और नारी के लिए भिन्न-भिन्न मानदण्ड स्थापित करने वाली अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था नारी को या तो सीरो की भांति उद्दण्ड धृष्ट एवं अहंकारी बनाएगी या फिर उसे दिव्या की तरह क्रीतदासी बना कर छोड़ेगी।

प्रकाशचन्द्र मिश्र के शब्दों में, (वह) दिव्या नारी के शोषण की जीती जागती मिसाल है और अपने जीवन के द्वारा इस तथ्य को प्रतिपादित करती है कि जब तक समाज-व्यवस्था बदल नहीं जाती, नारी जाति शोषण से मुक्त नहीं हो सकती।

यशपाल के नारी पात्र प्रेम को आत्म विस्तार का साधन मानते हैं और शारीरिक संबन्धों को इस की स्वाभाविक परिणति स्वीकार करते हैं। आप के उपन्यासों की नारियां विवाह पूर्व आकर्षण एवं प्रेम को स्वाभाविक रूप से लेती हैं और समाज की रूढ़िवादी नैतिकता को मुंह चिढ़ाती है। ''दादा कामरेड'' की मैन्सी, हरीश के प्रति आकृष्ट होती है परन्तु समुचित उत्तर न मिलने पर हरीश की मित्र बनी रहती है। इसी उपन्यास की शैली चार प्रेम प्रसंगों से गुजरती है और अन्ततः कुंवारी मां बनने का कलंक लेकर घर छोड़ कर चली जाती है और भले ही उसकी अपनी दृष्टि में उस का यह कृत्य पाप नहीं है। ''देशद्रोही'' में समाजवादी विश्वनाथ की बहन यमुना, कामरेड सुजान से प्यार करती है और सारी सामाजिक मर्यादाओं को त्याग कर अपने प्रेमी को कारावास से मुक्त करवाने का प्रयास करती है। ''दिव्या'' में दिव्या पृथुसेन को विवाहपूर्व ही आत्म समर्पण कर आजीवन भटकती है। मनुष्य के रूप की मनोरमा एक शिक्षित परन्तु बेकार युवक भूषण से प्यार करने लगी है परन्तु उचित उत्तर न पाकर सुतलीवाला से अन्तर्जातीय, प्रेम विवाह के बन्धन में बन्ध जाती है। ''क्यों फंसे'' में भास्कर मुक्त-प्रेम एवं मुक्त भोग को आदर्श मानता है तथा ''मेरी तेरी उसकी बात'' की उषा डाक्टर अमर से प्रेम-विवाह करती है और उनका प्रेम प्रसंग समाज में चर्चा का विषय बनता है। अमर के पिता तो विधिवत ईशा नाम रखैल को अलग घर में बसाए हुए हैं और उस की एक बेटी के पिता भी बनते हैं।

यशपाल के उपन्यासों में विवाहोपरान्त पर नारी एवं पर पुरुष आकर्षण को चित्रित किया है। विवाह के पश्चात् जहां पुरुष सामान्यतः विलासिता एवं कामुकता के कारण सामर्थ्य एवं सुविधा होने पर पराई स्त्रियों से प्रेम अथवा यौन संबन्ध स्थापित करता है वहां पर नारी प्रायः पुरुष के अत्याचारों से पीड़ित होकर पर पुरुष की ओर झुकती है। विवाह पूर्व प्रेम संबन्धों के कारण भी ऐसा होता है जैसा कि झूठा सच की शीलो और रत्न लाल के प्रसंग में हुआ है। ''क्यों फंसे'' में भास्कर की भाभी अपने देवर पर जाल फैलाती है तो ''झूठा सच'' में जगदीश सहाय सरौला पत्नी के रहते सोभा से प्यार करने लगता है क्योंकि पत्नी फूहड़ एवं बेडौल है तो देशद्रोही में अ. खन्ना अपनी साली चन्दा से प्रेमपाश में बंधा है।

यशपाल प्रेम संबन्धों में सहजता एवं पारस्परिक संतोष को महत्व देते हैं। स्त्री-पुरुष एक दूसरे को प्रेम क्यों करते हैं इस प्रश्न का उत्तर यशपाल भौतिकवादी, यथार्थवादी रूप में देते हैं। ''क्यों फंसे'' में भास्कर प्रेम विषयक धारणा को स्पष्ट करते हुए कहता है, ''नर-नारी'' में परस्पर आकर्षण, प्रेम होता क्या है तुष्टि की चाह, तुष्टि की संभावना और आशा से एक दूसरे की चाह, उसके लिए प्रयत्न या कुछ और । प्रेम को यशपाल

पूर्णतया शारीरिक भौतिक प्रक्रिया स्वीकार करते हैं। शारीरिक सम्पर्क से कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से मन अथवा हृदय प्रभावित होता है। जब हम प्रेम की हार्दिक अथवा मानसिक प्रक्रिया स्वीकार करते हैं तो ही हम उसके भौतिक अस्तित्व को स्वीकृति देते हैं। यशपाल के अनुसार ''प्रेम जीवन में शरीर की अनुभूति और आवश्यकता से पृथक क्या वस्तु है।'' (१) यशपाल प्रेम को स्वाभाविक मांग स्वीकार करते हुए इस के दमन को अनुचित ठहराते हुए लिखते हैं ''तरसना ही क्या प्यार है'' प्यार संतोष नहीं तो और क्या है । शरीर को काट हृदय की परीक्षा करने से तो हृदय में प्यार या मस्तिष्क में रखे हुए विचार नहीं मिलते। प्यार और विचार शरीर के व्यवहार मात्र हैं। स्त्री पुरुष संबन्धों में किसी प्रकार के प्रलोभन, दबाव अथवा स्वार्थ को यशपाल उचित नहीं मानते। ''बारह घण्टे'' में लारेंस कहता है, ''मैं तो कहूंगा पशुओं का प्रेम अधिक निश्छल, केवल प्रकृति की पुकार का परिणाम होता है। सब चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वन्द्वात्मक है। यदि प्रेम बिल्कुल छिछला रहे तो वह असंयत वासना मात्र बन जाता है और यदि जीवन में प्रेम या आकर्षण का विवेक से संयम न हो तो वह जीवन के लिए घातक भी हो सकता है।

प्रेम की अनिवार्यता को स्वीकारते हुए भी यशपाल ने यह सिद्ध किया है कि हमारे समाज की संकीर्ण नैतिकता स्त्री-पुरुषों के मिलन एवं प्रेम को रिश्तों की सीमा अथवा विवाह की मर्यादा में बांध कर ही स्वीकार करती है। विवाह पूर्व एवं विवाहोपरान्त प्रेम-संबन्धों को यशपाल उचित अनुचित न मान कर आवश्यक अथवा अनावश्यक की श्रेणी में मानते हैं। प्रेम करने का परिणाम सामाजिक बदनामी, छींटाकशी तथा उत्पीडन के रूप में नारी को ही भुगतना पड़ता है। प्राय: प्रेम जब अवैध संबन्धों में बदल जाता है और अवैध सन्तानों को जन्म देता है तो सर्वत्र नारी को ही दोषी ठहराया जाता है। नारी के लिए हमारे समाज में प्रेम का अधिकार निश्चित सामाजिक रिश्तों के अन्तर्गत ही है।

विवाह पूर्व यौन संबन्धों को स्थापित करने का अधिकार हमारा समाज नहीं देता और ऐसा करना कानूनी दृष्टि से अपराध, सामाजिक दृष्टि से व्यभिचार तथा धार्मिक दृष्टि से पाप माना जाता है। प्रेम रहित यौन संबन्धों को यशपाल हेय समझते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में स्वेच्छा से, यौन सम्बन्धों का कोई अर्थ निकलता है। ''क्यों फंसे'' में भास्कर स्पष्ट कहता है, ''कैसे कोई किसी के बिस्तर में घुस जाएगा या घुसने देगा...'' यह तो पारस्परिक गहरे अदम्य आकर्षण से हो सकता है। भास्कर अपने उपर्युक्त कथन की व्याख्या करते हुए कहता है, ''प्यार के संतोष के लिए शरीरों का ही नहीं, मन का मेल भी चाहिए। किराए की रंडी छोकरी से हाजत रफाई को प्यार का संतोष नहीं कहा जा सकता।'' कहने का अभिप्राय स्पष्ट है कि प्रेम रहित काम संबन्ध संतोषप्रद नहीं हो सकते। वेश्यावृत्ति का विरोध यशपाल एक तो सामाजिक दृष्टि से करते हैं दूसरे वैयक्तिक दृष्टि से। जिस समाज में पेट भरने के लिए शरीर बेचना पड़े, वह समाज रुग्ण है। वेश्यावृत्ति करने वाली प्रेमरहित यौन संबन्धों में प्रवृत होती है इस लिए वह व्यभिचार करती है। ''देशद्रोही'' उपन्यास में आदिम अवस्था में जी रहे जरायमपेश वजीरियों की स्त्रियों का चित्रण है जिन्हें व्यक्ति के स्थान पर इस्तेमाल की वस्तु अथवा क्रय-विक्रय की सामग्री समझा जाता है। वहां नारियों का इतना दमन होता है कि वे पर पुरुष को मुंह नहीं दिखा सकती इसी लिए वहां की नूरन घायल और विवश डा. खन्ना से शरीर सुख चाहती है और न पाने पर उसे फटकारती है तथा इव्वा उस के साथ भाग जाने को तैयार है। इसी समाज में फितिया है जिसे एक बूढ़े के साथ बेचा जा रहा है और उस का बिकने से इन्कार करना सामाजिक दृष्टि से अपराध माना जा रहा है।

'बारह घण्टे' उपन्यास की मूल समस्या ही ''विवाह'' है। क्या प्रेम की इच्छा का दमन एवं विवाह न करना ही सच्चरित्रता का प्रमाण है। विनी और फैटम अपने मृत जीवन साथियों से अदम्य प्रेम करने के कारण प्रेम के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि वे प्रेम के बिना नहीं रह सकते। सिमेट्री में उनके प्रथम मिलन की परिणति विवाह में होती है जिसे रूढ़िवादी लोग वासना या कामुकता की संज्ञा दे कर चरित्रहीनता का अकाट्य प्रमाण घोषित कर देते हैं। ''क्यों फंसे'' उपन्यास की समस्या विवाह एवं उस से जुड़ी विकृतियां है। क्या विवाह एक आवश्यक बुराई है जिसे क्षणिक शारीरिक सुख के लिए अपनाया जाए ? क्या सहज रूप में स्थापित यौन संबन्ध व्यभिचार है ? क्या नारी के लिए सतीत्व की कसौटी उस के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त है ? विवाह यदि स्वेच्छा से पारस्परिक आवश्यकताओं के आधार पर किया जाए तो ठीक है परन्तु विवशता में शादी क्यों की जाए इस प्रकार के प्रश्नों को उठा कर, विवाह तथा प्रेम में नारी की स्वतंत्रता की वकालत यशपाल ने की है। यशपाल के ग्यारह छोटे बड़े उपन्यासों में नारी के आदिम रूप से लेकर आधुनिकतम रूप तक का चित्रण हुआ है। उन के उपन्यासों के विशाल चित्रफलक पर ऐतिहासिक, पौराणिक, शिक्षित, अशिक्षित, रूढ़िग्रस्त-प्रगतिशील, दलित-स्वावलम्बी, घरेलू, सामाजिक राजनैतिक-चेतना संपन्न सभी प्रकार की नारियां हैं। यशपाल की नारियां पुरुष की आदिम आधिपत्य भावना को चुनौती देती है, अपने मन एवं शरीर की मांग पर रुढ़ियों की जंजीरें तोड़तीं, प्रेम एवं विवाह में परस्परिक सहयोग, समता एवं आवश्यकता के मानदण्डों को मान्यता दिलाने का संघर्ष करती, अशिक्षा के अधिकारों को चीरने के लिए ज्ञान का दीपक जलातीं, सामाजिक कुरीतियों, विशेषकर नारी को पंगु बनाने वाली कुरीतियों को जड़ मूल से उखाड़ने का प्रयत्न करती, पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर जीवन के हर क्षेत्र में चलने का संकल्प लिए घर की तंग चार दिवारी को गिरती हैं। नारी-स्वातन्त्र्य एवं नारी-मुक्ति का अमर महाकाव्य रचा है यशपाल जी ने अपने साहित्य में, और इस के लिए उन्होंने किसी बाद की सीमाओं को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनकी प्रतिबद्धता मूलत: मानवमात्र की मुक्ति से है और यह कार्य समाज के एक बड़े भाग अर्थात् नारी को गुलाम बना कर संपन्न नहीं किया जा सकता। नारी मुक्ति के लिए मानववाद, मार्क्सवाद, फ्रायडवाद यहां तक कि कोई भी विचार धारा जो उस में सहायक हुई, उसे यशपाल ने स्वीकार किया है।

यशपाल ने नारी चित्रण करते समय उसके विविध रूपों का चित्रण उस की विविध समस्याओं को रेखांकित करने के लिए किया है। यशपाल जी न तो अतीत जीवी थे और न ही भारत के स्वर्णिम अतीत के काल्पनिक किस्से उन्हें भ्रमित करते थे इसी लिए भारतीय समाज में नारी के व्यक्तित्व का विघटन कैसे हुआ, इस पर विचार करते हुए वे शकुन्तला और दुष्यन्त के ऐतिहासिक-पौराणिक कथानक को ''अप्सरा का श्राप'' में उठाते हैं। नारी के वैदिक काल के अधिकार महाभारत काल तक प्राय: समाप्त हो चुके थे और महाभारत की नारी प्राय: व्यक्ति से वस्तु बन गई थी। लेखक इस उपन्यास में पुरुष प्रधान सामन्त समाज में नारी की दुर्दशा को रेखांकित करता हुआ और तात्कालीन नैतिक, धार्मिक तथा कानूनी मान्यताओं पर भी प्रहार करता है जिन का उद्देश्य नारी की गुलामी पर मोहर लगाना है। दुष्यन्त पुरुष है और उसे अपने अन्त:पुर में अनेक रानियां रखने का अधिकार है । वह शिकार के बहाने वनों में घूमते हुए किसी भी युवती से यौन संबन्ध स्थापित कर सकता है परन्तु नारी से यह अपेक्षा की जाती है कि पतिव्रता बनी रहे। दुष्यन्त शकुन्तला को आश्रम में छोड़ जाता है, गर्भवती शकुन्तला को महलों में बैठ कर पहचानने से इन्कार कर देता है और जब उसे बुढ़ापे में राज्य का उत्तराधिकारी चाहिए तो वह फिर शकुन्तला को ढूंढ निकालता है। इतना अपमान सहकर दुत्कारी ठुकराई जा

कर भी शकुन्तला पतिव्रता बनी रहती है और दुष्यन्त की प्रतीक्षा करती है। तत्कालीन समाज में पातिव्रत्य धर्म का जो संस्कार उसे दिया गया है वह पुरुष की श्रेष्ठता एवं नारी की क्षुद्रता को रेखांकित करता है। शकुन्तला, पुरुष की पराधीनता को अपना भाग्य मान चुकी है, उसे सिखाया गया है कि धर्मशास्त्रों के अनुसार उसका कर्त्तव्य यही है कि वह पतिव्रता बनी रहे, भले ही पति कितना ही कामुक, व्यभिचारी, दम्भी, धोखेबाज अथवा स्वार्थी क्यों न हो। उस की मां मेनका अप्सरा है, वह पुरुष प्रधान समाज की दुहरी, दोगली नैतिकता को स्वीकार नहीं करती और न ही पुरुष द्वारा बनाए गए पतिव्रत धर्म के बन्धन स्वीकार करती है। वह अपनी बेटी की दुर्दशा पर चिन्तित है और उसे इस व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाती है। पुरुष नारी को विवाह बन्धन में बांध कर उसकी स्वतन्त्रता सीमित करता है, उसे पतिव्रत धर्म की नुकेल डाल कर गुलाम बनाता है और उस पर घर-गृहस्थी तथा सन्तान का बोझ डाल कर उसे घर की चार दिवारी में बन्द कर देता है। पुरुषों ने पतिव्रतधर्म की कल्पना नारी को व्यक्तित्वहीन करने के लिए ही की। शकुन्तला अपनी मां मेनका से कहती है कि मुझे आत्म निर्भर रहने की शिक्षा नहीं मिली, आजीवन पतिव्रत धर्म निभाने की शिक्षा मुझे मिली है, इस लिए, ''पृथ्वी पर नारी का एक मात्र धर्म पतिव्रत है। मेनका का यह पूछना कि आत्म निर्भरता, आत्मसम्मान मानव धर्म है, वे नारी धर्म नहीं है क्या ? उसकी स्वतन्त्र चेतना का द्योतक है क्योंकि वह अप्सरा है और पुरुष-प्रधान समाज की उपज नहीं बल्कि हिमालय में रहने वाले गन्धर्वों की सन्तान है जहां मातृ सत्तात्मक परिवार है। शकुन्तला मानती है कि पतिव्रता बनने के लिए नारी को आत्मा से अथवा व्यक्तित्व से हीन होना पड़ेगा और वह कहती है, माता पतिव्रता नारी व्यक्ति अथवा मानव नहीं, पतिव्रता मात्र होती है। मेनका, शकुन्तला को शाप देती है कि पतिव्रता नारियां व्यक्तित्वहीन ही रहेंगी। उपन्यास के अन्त में ''निवेदन'' में यशपाल स्पष्ट करते हैं कि (पतिव्रत धर्म) का आदर्श आज भी हमारे समाज में मौजूद है। इस व्रत और धर्म के प्रति निष्ठा से आज भी नारी के पीड़िन और दमन की कल्पना संभव है। जिस समाज में हर नारी से पतिव्रता धर्म निभाने की आशा की जाए और ऐसा न करने पर समाज उसे दण्डित करे और उसी समाज का पुरुष एकाधिक नारियों से यौन सम्पर्क की छूट पा जाए, वहां नारी की हीनता और गुलामी पर मोहर लग जाती है और सिद्धान्ततः यह स्वीकार कर लिया जाता है कि नारी वस्तु है, व्यक्ति नहीं है, उसका कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं है। हमारे समाज में विवाह संस्था जहां नारी को एक निष्ठ प्यार और पतिव्रत में बांधती है वहीं पर पुरुष पर ऐसा ही अंकुश न लगा कर सामाजिक विषमता की नींव रखती है। यशपाल जी यह मानते हैं कि पतिव्रत धर्म नारी के व्यक्तित्व विघटन का एक मूल कारण रहा है। पौराणिक कथाकार ने दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को अंगूठी दिए जाने का किस्सा गढ़ा और उस के साथ दुर्वासा के शाप की कहानी जोड़ कर दुष्यन्त के स्वार्थ एवं व्यभिचार पर पर्दा डाला परन्तु यशपाल ने यह कथा नहीं ली बल्कि स्पष्ट किया कि अपनी अन्य रानियों के डर से राजनैतिक कारणों से उन्होंने शकुन्तला को पहचानने से इन्कार किया और दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया।

प्रेम, विवाह तथा यौन संबन्धों के आईने में नारी का प्रतिबिम्ब अत्यन्त विकृत एवं भयावह ही दीख पड़ता है। हमारे समाज में नारी द्वारा विवाहेतर प्रेम संबन्ध निषिद्ध हैं। विवाहेतर प्रेम संबन्ध यदि सन्तानोत्पत्ति या गर्भधारण के रूप में फलित होते हैं तो समाज की प्रताड़ना और घृणा का शिकार नारी बनती है और जिस पर सन्तान पालन का बोझ भी पड़ता है। यौन संबन्धों में स्वेच्छा, प्रेम एवं समानता को आधार माना जाना चाहिए, ऐसा यशपाल के नारी पात्रों का आग्रह है परन्तु ''मेरी तेरी उसकी बात'' का तेजनारायण ढिक्कू स्वयं नपुंसक होने पर भी सन्तान न होने का दायित्व पत्नी चित्रा पर डालने के लिए स्वतन्त्र हैं। यौन विकृतियों का रिकार्ड भी

नारी का मुर्दा नग्न शरीर देख कर सतवंत कहती है, ''जनाना तुम्हें जनने की ही कसूरवार है। सौ हज़ार बार फिट्ट मुंह तुम्हारा। लाख लानत है तुम पर। मर्द आपस में लूटते हैं, कत्ल करते हैं पर मर्द एक दूसरे को नंगा करके उसके जिस्म की बेइज्जती तो नहीं करते।'' हमारे समाज में नारी का प्रेम, अपराध बन जाता है, विवाह गुलामी का लौह दस्तावेज जिस से मुक्ति पाना असम्भव है। यशपाल नारी द्वारा तालाक पाने का समर्थन करते हैं तथा ''मनुष्य के रूप'' की मनोरमा, ''झूठ सच'' की कनक एवं ''दादा कामरेड'' की फलोरा तालाक की मांग करती हैं। यदि पति व्यभिचारी, नपुंसक अथवा अत्याचारी है तब तो तालाक मिलना ही चाहिए परन्तु यदि वैचारिक विभिन्नता इस स्तर की है कि इकट्ठे रहना असंभव हो गया है तब भी तलाक मिल जाना चाहिए। राबर्ट और फलोरा के बीच तलाक का कारण वैचारिक वैषम्य ही है। क्योंकि फंसे की मोती मनमेल विवाह की शिकार है ठीक वैसे ही जैसे मेरी तेरी उसकी बात'' का रजा, गती से विवाह करके पूछता रहा है। विवाह पांवों की जंजीर न बन जाए, विकास में बाधक न हो इस लिए यशपाल तलाक व्यवस्था का समर्थन करते हैं। संक्षेप में कहें तो वर्गीय समाज में विवाह का जिस प्रकार एक रूढ़ी बना दिया गया है, पुरुष के अहं की पूर्ति का साधन बना दिया गया है, वह गलत है। यशपाल की प्रबुद्ध नारी विवाह के नाम पर पराधीनता की बेड़ी पहनने को तैयार नहीं। ''दिव्या'' उपन्यास की सीरो जो कि सामन्त सेनापति पृथुसेन की पत्नी है और गणपति मिथोद्रस की बेटी है, स्पष्ट कहती है ''मैं तुम्हारी क्रीतदासी नहीं हूं।''... केवल तुम्हारी अंक सेवा के लिए दासी नहीं हूं। तुम वेश्याओं से विलास नहीं करते कितनी दासियां तुम्हारी पर्यंक सेवा में लिए हैं, भोग के भिन्न-भिन्न सुखों और रसों के लिए तुम्हें कितनी नारियां चाहिए मेरे लिए भी संसार में केवल तुम्हीं एक पुरुष नहीं हो मैं तुम्हारे वंश रथ की धुरी खींचने के लिए बछड़े उत्पन्न करने वाली गाया नहीं हूं। (१) इस प्रकार सीरो के माध्यम से भारतीय समाज में विवाह के नाम पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की सच्चाई को सामने लाया गया है। भारतीय नारी का दमित आक्रोश यहां बोल रहा है। यशपाल के उपन्यासों में जो नारी पात्र आए हैं उनका विकास परिस्थितियों की टकराहट से घटनाओं की दार्शनिक दृष्टि के अनुरूप हुआ है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों को यशपाल कभी दृष्टि के अनुरूप हुआ है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों को यशपाल कभी दृष्टि से ओझल नहीं होने देते।

यशपाल जिन पात्रों का सृजन करते हैं वे विकासशील हैं और उन्होंने सभी नारी पात्रों की चेतना का क्रमिक विकास अंकित किया है। ''मनुष्य के रूप'' में सोमा पहाड़न एक दलित शोषित विधवा से आधुनिक सिने-तारिका बनने पर न केवल अपने पूर्व प्रेमी धनसिंह को पहचानने से इन्कार कर देती है बल्कि वरकत के शोषण का भी मुकाबला करती है और सुतलीवाला का शादी का प्रस्ताव ठुकरा देती है। इसी प्रकार उपन्यास की सुनिश्चित, फैशन प्रस्त एवं स्वच्छन्द युवती मनोरमा न केवल प्रेम-विवाह करती है और पति के दुर्व्यवहार से तंग आ कर तलाक ले लेती है बल्कि अपनी पूंजीवादी धारणाओं से मुक्त हो कर साम्यवादी दल की सक्रिय कार्यकर्त्ता भी बनती है। देशद्रोही की भीरू राज, विधवा हो कर दुवारा विवाह करती है और मध्यवर्गीय संस्कारों से मुक्ति पा कर मजदूर यूनियनों में काम करती है। इसी उपन्यास की यमुना अन्तर्जातीय विवाह करती है तथा अपने प्रेमी... की सहायता के लिए मुकदमा लड़ती है, नौकरी करती है। यहीं पर चन्दा जैसी घरेलू स्त्री है जो पति के अन्याय का विरोध करती है और अपने मानवीय दायित्व निभाने के लिए लोक लाज की चिन्ता नहीं करती।''झूठा सच'' की कनक और तारा उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करती हैं और सामाजिक राजनीतिक कार्यों में सक्रिय होती हैं। ''दादा कामरेड'' की यशोदा मध्यमवर्गीय घरेलू स्त्री से सामाजिक कार्यकर्त्ता बन जाती

कर भी शकुन्तला पतिव्रता बनी रहती है और दुष्यन्त की प्रतीक्षा करती है। तत्कालीन समाज में पातिव्रत्य धर्म का जो संस्कार उसे दिया गया है वह पुरुष की श्रेष्ठता एवं नारी की क्षुद्रता को रेखांकित करता है। शकुन्तला, पुरुष की पराधीनता को अपना भाग्य मान चुकी है, उसे सिखाया गया है कि धर्मशास्त्रों के अनुसार उसका कर्त्तव्य यही है कि वह पतिव्रता बनी रहे, भले ही पति कितना ही कामुक, व्यभिचारी, दम्भी, धोखेबाज अथवा स्वार्थी क्यों न हो। उस की मां मेनका अप्सरा है, वह पुरुष प्रधान समाज की दुहरी, दोगली नैतिकता को स्वीकार नहीं करती और न ही पुरुष द्वारा बनाए गए पतिव्रत धर्म के बन्धन स्वीकार करती है। वह अपनी बेटी की दुर्दशा पर चिन्तित है और उसे इस व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाती है। पुरुष नारी को विवाह बन्धन में बांध कर उसकी स्वतन्त्राता सीमित करता है, उसे पतिव्रत धर्म की नुकेल डाल कर गुलाम बनाता है और उस पर घर-गृहस्थी तथा सन्तान का बोझ डाल कर उसे घर की चार दिवारी में बन्द कर देता है। पुरुषों ने पतिव्रतधर्म की कल्पना नारी को व्यक्तित्वहीन करने के लिए ही की। शकुन्तला अपनी मां मेनका से कहती है कि मुझे आत्म निर्भर रहने की शिक्षा नहीं मिली, आजीवन पतिव्रत धर्म निभाने की शिक्षा मुझे मिली है, इस लिए, ''पृथ्वी पर नारी का एक मात्र धर्म पतिव्रत है। मेनका का यह पूछना कि आत्म निर्भरता, आत्मसम्मान मानव धर्म है, वे नारी धर्म नहीं है क्या ? उसकी स्वतन्त्र चेतना का द्योतक है क्योंकि वह अप्सरा है और पुरुष-प्रधान समाज की उपज नहीं बल्कि हिमालय में रहने वाले गन्धर्वों की सन्तान है जहां मातृ सत्रात्मक परिवार है। शकुन्तला मानती है कि पतिव्रता बनने के लिए नारी को आत्मा से अथवा व्यक्तित्व से हीन होना पड़ेगा और वह कहती है, माता पतिव्रता नारी व्यक्ति अथवा मानव नहीं, पतिव्रता मात्र होती है। मेनका, शकुन्तला को शाप देती है कि पतिव्रता नारियां व्यक्तित्वहीन ही रहेंगी। उपन्यास के अन्त में ''निवेदन'' में यशपाल स्पष्ट करते हैं कि (पतिव्रत धर्म) का आदर्श आज भी हमारे समाज में मौजूद है। इस व्रत और धर्म के प्रति निष्ठा से आज भी नारी के पीड़िन और दमन की कल्पना संभव है। जिस समाज में हर नारी से पतिव्रता धर्म निभाने की आशा की जाए और ऐसा न करने पर समाज उसे दण्डित करे और उसी समाज का पुरुष एकाधिक नारियों से यौन सम्पर्क की छूट पा जाए, वहां नारी की हीनता और गुलामी पर मोहर लग जाती है और सिद्धान्ततः यह स्वीकार कर लिया जाता है कि नारी वस्तु है, व्यक्ति नहीं है, उसका कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं है। हमारे समाज में विवाह संस्था जहां नारी को एक निष्ठ प्यार और पतिव्रत में बांधती है वहीं पर पुरुष पर ऐसा ही अंकुश न लगा कर सामाजिक विषमता की नींव रखती है। यशपाल जी यह मानते हैं कि पतिव्रत धर्म नारी के व्यक्तित्व विघटन का एक मूल कारण रहा है। पौराणिक कथाकार ने दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को अंगूठी दिए जाने का किस्सा गढ़ा और उस के साथ दुर्वासा के शाप की कहानी जोड़ कर दुष्यन्त के स्वार्थ एवं व्यभिचार पर पर्दा डाला परन्तु यशपाल ने यह कथा नहीं ली बल्कि स्पष्ट किया कि अपनी अन्य रानियों के डर से राजनैतिक कारणों से उन्होंने शकुन्तला को पहचानने से इन्कार किया और दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया।

प्रेम, विवाह तथा यौन संबन्धों के आईने में नारी का प्रतिबिम्ब अत्यन्त विकृत एवं भयावह ही दीख पड़ता है। हमारे समाज में नारी द्वारा विवाहेतर प्रेम संबन्ध निषिद्ध हैं। विवाहेतर प्रेम संबन्ध यदि सन्तानोत्पत्ति या गर्भधारण के रूप में फलित होते हैं तो समाज की प्रताड़ना और घृणा का शिकार नारी बनती है और जिस पर सन्तान पालन का बोझ भी पड़ता है। यौन संबन्धों में स्वेच्छा, प्रेम एवं समानता को आधार माना जाना चाहिए, ऐसा यशपाल के नारी पात्रों का आग्रह है परन्तु ''मेरी तेरी उसकी बात'' का तेजनारायण ढिक्कू स्वयं नपुंसक होने पर भी सन्तान न होने का दायित्व पत्नी चित्रा पर डालने के लिए स्वतन्त्र हैं। यौन विकृतियों का रिकार्ड भी

नारी का मुर्दा नग्न शरीर देख कर सतवंत कहती है, ''जनाना तुम्हें जनने की ही कसूरवार है। सौ हजार बार फिट्ट मुंह तुम्हारा। लाख लानत है तुम पर। मर्द आपस में लूटते हैं, कत्ल करते हैं पर मर्द एक दूसरे को नंगा करके उसके जिस्म की बेइज्जती तो नहीं करते।'' हमारे समाज में नारी का प्रेम, अपराध बन जाता है, विवाह गुलामी का लौह दस्तावेज जिस से मुक्ति पाना असम्भव है। यशपाल नारी द्वारा तालाक पाने का समर्थन करते हैं तथा ''मनुष्य के रूप'' की मनोरमा, ''झूठ सच'' की कनक एवं ''दादा कामरेड'' की फलोरा तालाक की मांग करती हैं। यदि पति व्यभिचारी, नपुंसक अथवा अत्याचारी है तब तो तालाक मिलना ही चाहिए परन्तु यदि वैचारिक विभिन्नता इस स्तर की है कि इकट्ठे रहना असंभव हो गया है तब भी तलाक मिल जाना चाहिए।राबर्ट और फलोरा के बीच तलाक का कारण वैचारिक वैषम्य ही है। क्योंकि फंसे की मोती मनमेल विवाह की शिकार है ठीक वैसे ही जैसे मेरी तेरी उसकी बात'' का रजा, गती से विवाह करके पूछता रहा है। विवाह पांवों की जंजीर न बन जाए, विकास में बाधक न हो इस लिए यशपाल तलाक व्यवस्था का समर्थन करते हैं। संक्षेप में कहें तो वर्गीय समाज में विवाह का जिस प्रकार एक रूढ़ी बना दिया गया है, पुरुष के अहं की पूर्ति का साधन बना दिया गया है, वह गलत है। यशपाल की प्रबुद्ध नारी विवाह के नाम पर पराधीनता की बेड़ी पहनने को तैयार नहीं। ''दिव्या'' उपन्यास की सीरो जो कि सामन्त सेनापति पृथुसेन की पत्नी है और गणपति मिथोद्रस की बेटी है, स्पष्ट कहती है ''मैं तुम्हारी क्रीतदासी नहीं हूं।''... केवल तुम्हारी अंक सेवा के लिए दासी नहीं हूं। तुम वेश्याओं से विलास नहीं करते कितनी दासियां तुम्हारी पर्यंक सेवा में लिए हैं, भोग के भिन्न-भिन्न सुखों और रसों के लिए तुम्हें कितनी नारियां चाहिए मेरे लिए भी संसार में केवल तुम्हीं एक पुरुष नहीं हो मैं तुम्हारे वंश रथ की धुरी खींचने के लिए बछड़े उत्पन्न करने वाली गाया नहीं हूं। (१) इस प्रकार सीरो के माध्यम से भारतीय समाज में विवाह के नाम पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की सच्चाई को सामने लाया गया है। भारतीय नारी का दमित आक्रोश यहां बोल रहा है। यशपाल के उपन्यासों में जो नारी पात्र आए हैं उनका विकास परिस्थितियों की टकराहट से घटनाओं की दार्शनिक दृष्टि के अनुरूप हुआ है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों को यशपाल कभी दृष्टि के अनुरूप हुआ है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों को यशपाल कभी दृष्टि से ओझल नहीं होने देते।

यशपाल जिन पात्रों का सृजन करते हैं वे विकासशील हैं और उन्होंने सभी नारी पात्रों की चेतना का क्रमिक विकास अंकित किया है। ''मनुष्य के रूप'' में सोमा पहाड़न एक दलित शोषित विधवा से आधुनिक सिने-तारिका बनने पर न केवल अपने पूर्व प्रेमी धनसिंह को पहचानने से इन्कार कर देती है बल्कि वरकत के शोषण का भी मुकाबला करती है और सुतलीवाला का शादी का प्रस्ताव ठुकरा देती है। इसी प्रकार उपन्यास की सुनिश्चित, फैशन प्रस्त एवं स्वच्छन्द युवती मनोरमा न केवल प्रेम-विवाह करती है और पति के दुर्व्यवहार से तंग आ कर तलाक ले लेती है बल्कि अपनी पूंजीवादी धारणाओं से मुक्त हो कर साम्यवादी दल की सक्रिय कार्यकर्त्ता भी बनती है। देशद्रोही की भीरू राज, विधवा हो कर दुबारा विवाह करती है और मध्यवर्गीय संस्कारों से मुक्ति पा कर मजदूर यूनियनों में काम करती है। इसी उपन्यास की यमुना अन्तर्जातीय विवाह करती है तथा अपने प्रेमी... की सहायता के लिए मुकदमा लड़ती है, नौकरी करती है। यहीं पर चन्दा जैसी घरेलू स्त्री है जो पति के अन्याय का विरोध करती है और अपने मानवीय दायित्व निभाने के लिए लोक लाज की चिन्ता नहीं करती।''झूठा सच'' की कनक और तारा उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करती हैं और सामाजिक राजनीतिक कार्यों में सक्रिय होती हैं। ''दादा कामरेड'' की यशोदा मध्यमवर्गीय घरेलू स्त्री से सामाजिक कार्यकर्त्ता बन जाती

है और पति के शक्की स्वभाव एवं सामन्ती आधिपत्य भावना का मुकाबला सामाजिक कार्य करके करती है। यशपाल के उपन्यासों में दलित-शोषित नारी संघर्ष करके अपना मार्ग प्रशस्त करती है, इलाचन्द्र जोशी की नारियों की तरह आत्म हत्या नहीं करती। यशपाल नारी मुक्ति का आधार शिक्षा और आर्थिक आत्म निर्भरता को बनाते हैं न कि पुरुष के आश्रय को, यही कारण है कि देशद्रोही में रूसी क्रान्ति के पश्चात् रूस की नारियों का स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं समाजोपयोगी कार्य उनका समर्थन पाता है और रूसी नारी उन का आदर्श बन जाती है।

नारी मुक्ति का मार्ग राजनीतिक व्यवस्था के परिवर्तन से हो कर गुजरता है क्यों कि सामाजिक परिवर्तन के लिए राजनैतिक व्यवस्था को बदलना आवश्यक है। ''पार्टी कामरेड'' की गीता दल का कार्य करते हुए न केवल घर की चिन्ता नहीं करती बल्कि अपने सतीत्व एवं जीवन को भी दांव पर लगा देती है, मेरी तेरी उसकी बात की ऊषा एवं उस जैसी अनेक युवतियां भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय होती हैं तथा सशस्त्र क्रान्ति में योगदान देती हैं, झूठा सच की कनक तथा तारा राजनैतिक चेतना संपन्न हैं, दादा कामरेड की शैली पूंजीपति की बेटी होकर मजदूरों की हड़ताल का साथ देती है तथा क्रान्तिकारी हरीश को अपना प्रेमी एवं पथ प्रदर्शक चुनती है और अन्तत: ''दादा कामरेड'' के साथ चल पड़ती है जो कि क्रान्तिकारी से साम्यवादी नेता बन गया है। यशपाल अपने नारी पात्रों को घर की चार दिवारी में सिमट कर पुरुषों के मनोरंजन का साधन एवं बच्चे पैदा करने और पालने वाली मशीन बन कर जीवन यापन करते देखना नहीं चाहते बल्कि उसे सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते देखना चाहते हैं।

यशपाल जी की यह मान्यता रही है कि हमारे समाज में धर्म शास्त्रों एवं धार्मिक विश्वासों के द्वारा नारी को पराधीन बनाने का षड़यन्त्र रचा गया है। नारी को पुरुषों से निम्न कोटि का मानने की धारणा हमारे धर्म का अंग बन गई जिस के अनुसार स्त्री को पिता, पति अथवा पुत्र पर आश्रित रहने के लिए विवश किया गया, पतिव्रता को उस की सब से बड़ी योग्यता मानी गई या वैधव्य में पति का नाम रटते हुए तिल-तिल कर मरने को उस का गुण माना गया, विवाह को जन्म जन्मान्तरों का संबन्ध मान कर पति के अत्याचारों को मूक भाव से सहने की शिक्षा दी गई तथा नैतिकता के कठोरतम नियम केवल स्त्री-जाति पर लादे गये पुरुष प्रधान वर्गीय समाज में नारी की गुलामी पर मुहर लगाने के लिए धार्मिक आडम्बरों और अन्ध विश्वासों का खण्डन करते हैं तथा समस्त समाज के लिए एक जैसी आधार संहिता तथा नैतिकता का समर्थन करते हैं। समाज में स्त्री पुरुषों के संबन्धों का नयमन अध्यात्मिक नैतिकता से न हो कर व्यावहारिक भौतिकवादी नैतिकता से होना चाहिए, ऐसा यशपाल मानते हैं। ''झूठा सच'' में यशपाल जी ने स्पष्ट किया है कि पुरुष की पशुता किसी भी रूप में सामने आए, नारी उस का शिकार अवश्य होती है। साम्प्रदायिक दंगों का शर्मनाक इतिहास, ''झूठा सच'' के पन्नों पर बिखरा पड़ा है और हर स्थान पर नारी को निर्वस्त्र करने, उस की इज्जत लूटने, उस की हत्या करने और उस की नुमायश करने की अमानवीय गाथा पुरुषों की पशुता और नारियों की विवशता की करुण कहानी कहती है। यह सब होता है होता आया है, धर्म के नाम पर। नारी, जो मानवीय सृष्टि का आधार है, जो देवताओं की जननी है, अवतारों को गोद में खिलाती है, साम्प्रदायिक सहबात में वह किसी की मां, बहन, बेटी, पत्नी या प्रेमिका नहीं रहती, वह मात्र वस्तु बन जाती है, लूटने के योग्य सम्पत्ति बन जाती है, तोड़ कर बिखेरने के योग्य खिलौना बन जाती है। यशपाल का महाकाव्यात्मक उपन्यास ''झूठा सच'' विभाजन की त्रासदी को नारी शोषण के वीभत्स सत्य के आईने में प्रतिबिम्बित करता है। दंगों में पीड़ित तारा और वंती जैसी स्त्रियों को उन के

परिवार के लोग पहचानने से इन्कार करते हैं और उन्हें गुमनामी एवं असुरक्षा के गर्त में धकेल देते हैं। नारी का सतीत्व जिस पुरुष प्रधान समाज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बनाया गया है, वही पुरुष समाज उस का सतीत्व लूटने में अपना पौरुष समझता है। यशपाल की यह दृढ़ धारणा रही है कि धर्म एवं शास्त्र, मूलत: पुरुषों के लिखे हैं। इस लिए नारी का देवी, शक्ति, सुन्दरी, वामा जैसे सुन्दर सम्बोधन दे कर भी अन्तत: उसे गुलाम बनाने, उसे पुरुष के हाथों का खिलौना बनाने, उसे पुरुष के सम्मुख अवला बनाने का षड़यन्त्र सर्वत्र हुआ है।हमारी धर्माश्रित नैतिकता का सारा ढांचा मूलत: नारी शोषण पर टिका है।

यशपाल जी के उपन्यास साहित्य में नारी-चित्रण का एक पहलू यह भी है कि उन के नारी पात्र विकासशील चेतना के प्रतिनिधि हैं। उनकी नारियां समाज के उच्च, मध्यम अथवा निम्न वर्ग से आएं या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई परिवारों से आएं या फिर वजीरीस्तान की आदिम समाजव्यवस्था अथवा दिल्ली लाहौर की विकासशील अर्थ-व्यवस्था की उपज हों, उन की चेतना निरंतर विकसित होती है। उन के नारी पात्रों का निरन्तर विकास होता है, सामाजिक प्रक्रिया से उन की चेतना विकसित होती है और वे अनिवार्य रूप से शोषण का विरोध करने के लिए खड़ी हो जाती हैं भले ही वह विरोध सर्वत्र सफल नहीं होता। ''मेरे तेरी उसकी बात'' में उषा और अमर का अन्तर्जातीय विवाह हो या ''झूठा सच'' में कनक का नौकरी करके परिवार को पालने और आत्म-निर्भर बनने का निश्चय हो, ''दादा कामरेड'' में शैल द्वारा अपने गर्भस्थ शिशु को जन्म देने का निर्णय हो अथवा ''पार्टी कामरेड'' में गीता का भांवरिया जैसे चरित्रों को सुधारने का प्रण हो, ''बारह घण्टे'' में विनी और फैटम का पुनर्विवाह का निर्णय अथवा ''दिव्या'' में दिव्या द्वारा स्वतन्त्र चुनाव का प्रश्न हो, यशपाल के नारी पात्र अपनी स्वतन्त्रता का पूरा लाभ उठाते हैं और अपने अस्तित्व को स्थापित करते हैं। मोहन राकेश के नारी पात्र जहां पर निरन्तर पतन की ओर आते हैं वहां लालचन्द्र जोशी के नारी पात्र आत्म हत्याएं कर मुक्ति पाते हैं वहीं पर यशपाल के नारीपात्र निरन्तर शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और सामाजिक परिवर्तन को प्रक्रिया को तीव्र करने में योगदान देते हैं। सार रूप में कहा जा सकता है कि:

(१) यशपाल के नारी पात्र स्वतन्त्र एवं विकासशील चेतना के प्रतिनिधि पात्र हैं, जिन की चेतना सामाजिक संघर्षों में पनपती है।

(२) यशपाल के उपन्यास नारी की ''अस्मिता'' की पहचान एवं खोज के उपन्यास हैं। उन के नारी पात्र वस्तु के रूप में नहीं, व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते प्रतीत होते हैं।

(३) यशपाल के नारी-पात्र, नारी शोषण के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष विभिन्न आयामों को रेखांकित करते हैं। नारी अवला नहीं क्योंकि वह सशस्त्र क्रान्ति तक में अग्रणी हो सकती है, वह मजदूर यूनियनों में काम कर सकती है, वह राजनैतिक दल की सक्रिय कार्यकर्ता हो सकती है और साहसपूर्वक गुण्डों को चुनौती दे सकती है। वह मात्र कामिनी अर्थात भोग्या नहीं क्योंकि वह तलाक की मांग कर सकती है, पुरुष की बनाई मर्यादाओं का अतिक्रमण कर सकती है तथा प्रेम, विवाह और यौन प्रसंगों में अपनी आजादी की घोषणा कर सकती है।

(४) यशपाल के नारी पात्र शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को नारी स्वतन्त्रता की पहली सीढ़ी मानते हैं और इसी लिए प्राय: सभी नारी पात्र शिक्षा प्राप्ति की ललक रखते हैं और आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर होने में विश्वास रखते हैं।

(५) यशपाल के नारी पात्रों में विविधता है। समाज के हर वर्ग, हर जाति, हर धर्म, सामाजिक विकास की हर अवस्था से उन्होंने पात्र उठाए हैं और ऐतिहासिक, पौराणिक पात्रों को भी आधुनिक समस्याओं से जोड़ा है।

(६) यशपाल के नारी पात्रों को लेकर अनैतिकता एवं अश्लीलता का आरोप मिथ्या है। नैतिकता के मानदण्ड यथार्थ जीवन की उपज न हो कर यदि कोरी आध्यात्मिकता एवं आदर्शवादिता पर स्थिर होंगे तो मानव प्रकृति उन का अतिक्रमण करेगी ही। यशपाल के नारी पात्र मुक्त भोग को प्रश्रय न देते हुए भी अनावश्यक एवं अस्वभाविक दमन को अनुचित मानते हैं। प्रेम, विवाह तथा यौन सबन्धों में जो सहज एवं स्वाभाविक है, उसी का वे समर्थन करते हैं। यशपाल शारीरिक पवित्रता की अपेक्षा मानसिक पवित्रता को नैतिकता का आधार मानते हैं इस लिए उन के नारी पात्र जिसे मन से उचित मानते हैं, उसे ही नैतिक स्वीकार करते हैं।

(७) यशपाल के नारी पात्र अनमेल विवाह, बाल विवाह, बट्टे का विवाह अथवा दहेज आदि कुप्रथाओं का विरोध करते हैं। विधवा विवाह इन उपन्यासों में सामान्य बात है।

(८) यशपाल के पात्र वैचारिक स्वतन्त्रता के पक्षधर हैं। ''दादा कामरेड'' की शैली से लेकर ''मेरी तेरी उसकी बात'' की उषा तक सभी मुख्य नारी पात्र राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक मुद्दों पर जम कर बहस करते हैं।

(९) यशपाल के नारी पात्र पुरुषों के साथ सहज मैत्री सबन्ध स्थापित करते हैं और प्रेम सबन्धों में कोरी भावुकता अथवा कामुकता से अभिभूत होने की अपेक्षा यथार्थवादी रुख अपनाते हैं। वहीं कहीं पर किशोरावस्था के प्रेम में उन्होंने केवल शारीरिक आकर्षण को भी चित्रित किया है।

(१०) यशपाल जी वैश्यावृत्ति का विरोध इस लिए करते हैं क्योंकि यह एक सामाजिक विकृति का लक्षण हैं। जिस समाज में पेट पालने के लिए शरीर बेचना पड़े वह समाज अविकसित एवं रुग्ण ही माना जाएगा।

(११) यशपाल के अधिकांश सशक्त नारी पात्र मध्यमवर्ग से आये हैं। निम्न वर्ग की नारियां बहुत कम आई हैं। उच्च पूंजीपति वर्ग की नारियों में कुछ तो विलासिता में डूबी, झूठी शानो-शौकत में फंसी, पश्चिमीयता के रंग में रंगी नारियां हैं और कुछ संकीर्ण अहंवादी व्यक्ति केन्द्रित पूंजीवादी चेतना से छिटक कर यथार्थवादी, समाजवादी चेतना को अपना लेती हैं।

(१२) यशपाल के नारी पात्र पूर्णतया फ्रायड़वादी नहीं क्योंकि काम को जीवन की नियामक शक्ति वे स्वीकार नहीं करते परन्तु साथ ही स्वाभाविक एवं सहज काम सबन्धों का वे समर्थन करते हैं। नारी के सहज विकास के लिए इन सबन्धों को आवश्यक मानते हैं। गर्भ निरोध के उपायों को अपनाना वे उचित मानते हैं तथा अनावश्यक सन्तान से मुक्ति मनुष्य का अधिकार स्वीकार करते हैं।

(१३) यशपाल में नारी की विभिन्न भूमिकाओं में यथा मां, बहन, बेटी, पत्नी अथवा प्रेयसी के रूप में चित्रित किया है। पत्नी और प्रेयसी की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया है।

(१४) यशपाल के उपन्यास में प्रेम प्रसंगों की भरमार है जिस के कारण कुछ आलोचक उन की मार्क्सवादी प्रगतिशील विचारधारा पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं और उन्हें रोमांटिक लेखक घोषित करते हैं। अनेक

प्रसंग अश्लीलता के निकट पहुंच गए हैं। फिर भी या तो कहना ही होगा कि उनकी दृष्टि स्वस्थ है और प्रेम प्रसंग, चरित्र उद्‌घाटन एवं औपन्यासिक लक्ष्य की प्राप्ति में प्रायः सहायक हैं।

(१५) यशपाल के नारी पात्रों में दुहराई अधिक है, विवाहपूर्व एवं विवाहेतर प्रेम प्रसंगों का स्वरूप अनेक उपन्यासों में एक सा ही है उस में विविधता नहीं है। उन के सभी प्रमुख पात्र साम्यवादी नायकों से शादी कर लेते हैं या फिर दल के कार्यकर्ता बन कर घूमते हैं। नारी समस्याओं को सुलझाने के घिसे-पिटे तर्क वे बार-बार दुहराते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यशपाल का उपन्यास-साहित्य नारी पात्रों के चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त सशक्त है क्योंकि नारी पात्र चित्रण शिल्प, पात्र-वैविध्य एवं नारी पात्रों की समस्याओं को रेखांकित करने की दृष्टि से यशपाल का उपन्यास-साहित्य एक विश्वकोष का काम दे सकता है। ★

मृकुला देवी की प्रतिमा (लाहौल स्पिति)

हिमाचली जनमानस में नारसिंह

डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा

हिमाचल प्रदेश भारत मां का शिरो मुकुट है। इसे देवभूमि का गौरव प्राप्त है। इस प्रदेश का हर कंकर शंकर है और हर पत्थर ठाकुर है। इसी आस्था और जनविश्वास पर यहां शिव मन्दिरों की बहुलता है तथा विष्णु मन्दिर ठाकुर तथा विष्णु के अनेक अवतारों के रूप में मिलते हैं। भारत के अन्य प्रदेशों की भांति यहां भी विविध देवताओं की मूर्तियां मन्दिरों में स्थापित हैं। इन मूर्तियों पर हिमाचली लोगों का देव विश्वास इतना बद्धमूल है कि इनकी वैयक्तिक, सामाजिक समस्याएं और कष्ट इनके कोप और प्रसाद पर आश्रित होते हैं। इसीलिए साधारण सिर दर्द हो या माहामारी, बाढ़ हो या अनावृष्टि, चोरी हो या डाकाजनी, लड़ाई झगड़ा हों या सुलह-सफाई सुख-सुविधा हो या आपत्ति सबका मूल कारण और निवारण ये मूर्तियां और देवता हैं। लोगों का इन देवताओं के प्रति अटूट विश्वास अनायास या आकस्मिक नहीं, परन्तु इनके पीछे सहस्रों वर्ष पुरानी परम्पराएं और लोक विश्वास है।

इस प्रदेश में जहां शिव ने शैव धर्म को जन्म दिया वहां विष्णु के वैष्णव धर्म का सूत्रपात किया। यहां विष्णु और शिव के वैधिक उपासक मिलते हैं। वैष्णव-धर्म के मूल सिद्धान्त आचार-विचार यहां के वैष्णवमतावलम्बियों में भी समान रूप से देखे जाते हैं। ये लोग सुरा, लहसुन-प्याज आदि मादक एवं तमोवृत्तिवर्द्धक पदार्थों का सेवन नहीं करते। मस्तक पर तिलक, गले में तुलसी की माला तथा यज्ञोपवीत धारण करते हैं। पूजा-अर्चना के लिए विष्णु मन्दिरों (ठाकुर द्वारों) में जाते हैं।

शैव और शाक्त-धर्म की तान्त्रिक आस्था और पूजा पद्धति ने विष्णु के दस अवतारों में नृसिंह अवतार को हिमाचल में नारसिंह के रूप में अधिक प्रभावित किया है। यही कारण है कि साधारण अपठित व्यक्ति भी नृसिंह को विष्णु की विश्व व्यापकता से दूर तान्त्रिक पद्धति से पूजता है। एक तरह से विष्णु का यह देवापकर्ष ही माना जा सकता है। कालान्तर में इसी नृसिंह ने नारसिंह के रूप में हिमाचल में इतनी व्यापकता प्राप्त कर ली कि इसकी मूर्तियां मन्दिरों में प्रतिष्ठापित की जाने लगीं।

पुराण साहित्य में विष्णु के अनेक अवतारों में दस अवतार प्रमुख माने गए हैं, मत्स्य कूर्म, बराह, परशुराम, दाशरथि राम, कृष्ण, बुद्ध और आदि अवतार कार्तिक। विष्णु के इन दस अवतारों में से नृसिंह परशुराम, राम, कृष्ण और बुद्ध के मन्दिर यहां पाए जाते हैं। विष्णु की पूजा में इन अवतारों की पूजा भी समावेश है। ईश्वर की सर्जन, पालन और संहार इन तीन शक्तियों में से विष्णु को पालक शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसीलिए विष्णु की चार भुजाएं कल्पित की गई हैं। इन भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और कमल धारण करते हैं। इस प्रदेश में विष्णु के शंख की अपनी अलग विशेषता है। यहां जहां यह पूजा में प्रयुक्त होता है, वहां मांगलिक अवसर पर इसका बजाया जाना अति पावन समझा जात है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के अवसर पर भी सीधी फूंक

द्वारा शंख का बजना मृत्यु का सूचक होता है। इसके प्रति जनआस्था है कि मरण के अवसर पर अगर इस ढंग से शंख बजाया जाए तो यमदूत भयभीत होकर लौट जाते हैं। और मृतक के सूक्ष्म शरीर को विष्णु लोक में ले जाने के लिए विष्णु दूत आते हैं। यह भी लोक विश्वास है कि जहां तक शंख की ध्वनि पहुंचती है, वहां तक भूत प्रेतादि बाधा प्रभावहीन होकर पास नहीं फटकते। इसीलिए हर मन्दिर, गांव और घर में शंख का होना और बजाया जाना परमावश्यक समझा जाता है। गदा और चक्र भक्तों की दुष्टों से परित्राण का चिन्ह माना जाता है। कमल कमला (लक्ष्मी) का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त हिमाचल के मन्दिरों में विष्णु के गले में वैजयन्ती माला भी धारण की हुई होती है। इस प्रदेश में जहां भी विष्णु के मन्दिर हैं। उन्हें प्रायः इसी रूप में दर्शाया गया है।

भगवान विष्णु ने आसुरी वृत्तियों के मनुष्यों से दैवी विचारधारा के लोगों की रक्षा हेतु ही यह विविध अवतार धारण किए हैं। अतः विष्णु के समान ही इन अवतारों में भी लोगों की अटूट आस्था है। हिमाचल में इन दस अवतारों में भी श्री राम, श्री कृष्ण और नृसिंह सर्वाधिक लोक प्रिय हैं। इनकी पूजा के स्थलों को ठाकुर द्वारा नाम से अभिहित किया जाता है इसके अतिरिक्त परशुराम अवतार का स्थान भी यहाँ महत्वपूर्ण है। कुल्लू के निरमण्ड में परशुराम की मूर्ति प्रायः मन्दिर में बन्द रहती है। भूण्डा यज्ञ के समय ही उसके दर्शन किए जा सकते हैं, जब मन्दिर खुलता है। सिरमौर में ददाहु के निकट परशुताल इन की पूजा को सदा याद रखे हुए है, पास ही परशुराम की माता रेणुका का सरोवर है जिसे रेणुका झील कहा जाता है।

विष्णु के अवतारों में इस प्रदेश में नृसिंह का स्थान अन्यतम है। आज के हिमाचल के जनमानस में नृसिंह और नारसिंह में कोई पार्थक्य नहीं रहा है। मूलतः नृसिंह विष्णु का वह पूर्व चर्चित विग्रह है जो इन्होंने चौथे अवतार में धारण किया था जिनके शरीर का आधा भाग मनुष्य तथा आधा सिंह का था। हिमाचल के सिरमौर जनपद की जन आस्था के अनुसार नृसिंह की माता का नाम चन्द्रावती और पिता ब्रहमऋषि था। इनके गुरू का नाम काशी ऋषि और जन्मस्थान मुल्तानीपुरी माना जाता है। विष्णु भगवान् ने यह लौकिक रूप अपने प्रिय भक्त प्रहलाद की दैत्य हिरण्यकश्यपु के अत्यचारों से रक्षा के लिए धारण किया था। कालान्तर में यही नृसिंह पर्वतीय जनमानस में नारसिंह के रूप में अपनी मूल अवधारणा में अनेक परिवर्तन तथा परिवर्धनों के साथ लोक प्रिय हुआ।

हिमाचल के कुछ क्षेत्र में तो पुरुष तथा स्त्रियां सभी समान रूप से नारसिंह की पूजा करते हैं। कांगड़ा के कुछ क्षेत्रों में इसे स्त्रियां मातृ कुलदेवता मानकर पूजती हैं। कांगड़ा जनपद में इसके लिए ''साया'' नाम प्रचलित है। संभवतः जिसका अर्थ महिला विशेष का संरक्षण और आश्रयदाता है। जो महिला इसकी पूजा करती रही हो उसकी पुत्री को भी इसकी पूजा करनी पड़ती है। यह देवता मातृ कुल परम्परा से अंगनाओं पर अनुरक्त होता है। विवाह के अवसर पर वरपक्ष की ओर से कन्या के बरी वस्त्रों के साथ नारसिंह की पूजा हेतु एक विशेष वस्त्र नारियल और चान्दी की प्रतिमा दी जाती है। नारसिंह के सम्बन्ध में यह लोक विश्वास है कि यह देवता सन्तान, सुख प्रदाता, वैभव देने वाला तथा विविध क्लेश निवारक है। इसके आराधक ताम्बे की थाली में नारियल और चान्दी रखकर रविवार या मंगलवार को इसे स्वच्छ व ताजे पानी से धोकर पूजते हैं। इसे चन्दन का टीका लगाया जाता है तथा अक्षत, पुष्प व नैवेद्य अर्पित करते हैं। सुगन्धित द्रव्यों को प्रज्वलित किया जाता है। उस समय चारों ओर का वातावरण सुवासित हो उठता है। नारियल स्वरूप नारसिंह को जो मिष्ठान (प्रसाद) चढ़ाया जाता है उसे अड़ोस-पड़ोस में भी वितरित करने की परम्परा है।

जनश्रुति के अनुसार नारसिंह श्वेत दाढ़ी धारण किए हुए होता है। यह स्त्रियों पर विशेष अनुरक्ति रखता है। इस प्रदेश में बांझ स्त्रियां पुत्र प्राप्ति के लिए नारसिंह की पूजा करती हैं। इस धारणा के पीछे संभवत: यह कारण हो सकता है कि नृसिंह भगवान ने अत्याचारी हिरण्यकश्यपु का वध कर उसके पुत्र प्रहलाद की रक्षा की थी। नारसिंह के आराधक गले में चान्दी का तावीज अथवा जन्त्र पहनते हैं। अनामिका में मुन्दरी पहनने की परम्परा है। जिस पर नारसिंह चित्रित होता है। नारसिंह की यह उल्लेखनीय विशेषता है कि जिन स्त्रियों पर यह अनुरक्त होता है उन्हें यह युवक ब्राहमण के भेष में तथा सफेद पहरावे में दिखाई देता है। जिस स्त्री के साथ इसकी अनुरक्ति होती है उसे यह बहुत ही व्यथित एवं परेशान करता है। उसके साथ सहवास एवं संभोग भी करता है। इसके लिए इसे स्त्रीगामी व्यभिचारी आक्रमक देव भी माना जाता है। विक्षिप्त स्त्री के उपचार के लिए तान्त्रिक (चेला) बादित्र (वायत्री) द्वारा आवेशोन्मत्त महिला का इलाज किया जाता है।

यह नवयौवना कंवारी कन्याओं पर अधिकतय आसक्त होता है। इस संदर्भ में यह गीत यहां उल्लेखनीय है जो हिमाचल प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में विशेष अवसरों पर नारसिंह के उपासक द्वारा तूम्बी बजाते हुए और स्थान स्थान पर घूमते हुए गाया जाता है :—

''मेरे नारसिंगा, निंरजनिया बीरा,
वीरे ने मोही बोलिया, तीरे ने मोही बोलिया।
वीरे मोही लिया जग सारा,
मेरे नार सिंगा निरंजनिया जी,
जित्थू कन्या कवारियां तित्थू वासा तेरा,
मई घर मथुरा बिच, गोकुल लिया सो अवतारा।।''

नारसिंह का निवास स्थान अधिकतर पीपल और सेंबल के वृक्ष पर माना जाता है इसलिए इस प्रदश के लोग विशेषकर कृषक नई फसल घर आने पर अन्न गुड़ आदि मिष्ठान लेकर प्रसाद (हलवा) के रूप में पीपल वृक्ष के ऊपर चढ़ाते हैं और पूजा करते हैं।

कुल्लू जनपद में नारसिंह को एक शक्तिशाली दैत्य माना जाता है। यह प्राय: परित्यक्त घरों, मालती, चमेली, जूही के फूलों में, कूपों, नदी, नालों और मन्दिरों में रहता है। बच्चों और सुन्दर स्त्रियों को और विशेषकर दोपहर के समय अपनी ओर आकर्षित कर उनपर आसक्त हो जाता है। इसके बचाव के लिए नन्हें मुन्हों के मस्तक पर काला टीका लगा दिया जाता है जिससे वे सुन्दर प्रतीत न हों। इसे प्रसन्न करने के लिए लोग बकरे की बलि भी देते हैं। मीठी रोटी (रोट) फूलों का बना हुआ हार तथा कच्चे सूत का धागा इसकी सेवा में भेंट किया जाता है। ब्राहमण को सफेद कपड़े भेंट स्वरूप दिए जाते हैं। चम्बा में इसे ''बाबा सिण्डू'' (पहाड़िया) के नाम से भी जाना जाता है। चम्बा जनपद में इसकी ''गूग्गे के वजीर'' के रूप में पूजा की जाती है। चम्बा में एक विष्णु मन्दिर अपनी अलग ही विशिष्टता लिए हुए है। इस मन्दिर में स्थापित विष्णु की ताम्र मूर्ति के तीन सिर हैं जो इनके तीन अवतारों, वाराह, नृसिंह को राम और बराह प्रतीक माने जाते हैं। इस मूर्ति नृसिंह को राम और बराह के साथ जोड़ा गया है। यद्यपि कहीं-कहीं नारसिंह दैत्य के रूप में माना गया है किन्तु इसकी गणना अधिकतर देवताओं की श्रेणी में ही होती है। इसका साधारण पहरावा सफेद धोती होता है और उस समय इसके एक हाथ में छोटा सा डण्डा तथा दूसरे हाथ में छोटा-सा नारियल का हुक्का होता है।

हिमाचल प्रदेश के अनेक स्थानों पर नारसिंह के मन्दिर हैं जो जीर्ण-शीर्ण स्थिति में हैं। इनमें भरमौर (चम्बा) का मन्दिर विशिष्ट उदाहरण है जहां नारसिंह की एक पीतल की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। एक प्राचीन ताम्र-पत्र पर लिखे आलेख के अनुसार राजा साहिल वर्मा के पुत्र राजा भोगकर की रानी त्रिभुवन रेखा ने इस मन्दिर और मूर्ति की स्थापना की थी जिसका समय लगभग दसवीं या ग्यारहवीं शताब्दी है। भूतपूर्व रियासत सुकेत में भी नारसिंह का मन्दिर है। राजा की ओर से इसे १४५ घुमाऊ जमीन जागीर में दी गई थी। पुराने समय में नारसिंह की मूल मूर्ति को देखने की अनुमति नहीं थी। कहते हैं कि जो इसे देखता था वह या तो अन्धा हो जाता था या मर जाता था। पुजारी इस की पूजा के समय अपनी आँखें बन्द रखता था। ताकि उसकी दृष्टि मूर्ति पर ना पड़े। मण्डी में नारसिंह की मूर्ति गूग्गे के मन्दिर में अन्य देवी-देवताओं के साथ स्थापित की गई मिलती हैं।

कांगड़ा जनपद में भी नारसिंह के अनेक मन्दिर हैं। शाहपुर के नारसिंह के मन्दिर में जन्माष्टमी के दिन विशेष मेले का आयोजन किया जाता है। वैरागी पकाए हुए भोजन का भोग लगाते हैं। तीर्थों में नारसिंह के मन्दिर का निर्माण आज से लगभग २५० वर्ष पूर्व उमन्द चन्द ने करवाया था। इस मन्दिर में फलादि भेंट के रूप में चढ़ाए जाते हैं। रेहलु में भी उसका भव्य मन्दिर है। एक ब्राहमण ने लगभग दो सौ वर्ष पहले यहां एक नारसिंह की मूर्ति स्थापित की थी। मन्दिर में लक्ष्मी का उद्‌भृग चित्र भी है। यहां प्रातः रोटी या उबाले हुए चावलों का भोग लगाया जाता है। रात्रि के समय जलसिक्त चनों का भोग लगता है। झनियारा में इसका एक मन्दिर है। वहां पर भी नारसिंह की सुन्दर मूर्ति थी जिसे आज से लगभग १२० वर्ष पहले लोगों ने नदी में फेंक दिया था और उसके स्थान पर लक्ष्मी का उत्कीर्ण उद्‌भृग चित्र स्थापित कर दिया था। फतेहपुर में भी एक महन्त ने दक्षिण भारत से एक पिण्डी लाकर यहां पर नारसिंह के रूप में प्रतिष्ठापित की थी। इसके अतिरिक्त इस मन्दिर में राम और राधा कृष्ण की संगमरमर की बनी हुई दो फुट ऊंची मूर्तियां भी विद्यमान हैं। यहां रात्रि के समय भी ग्यारह दीपक जलाए जाते हैं। जन्माष्टमी होली और चैत्र मास के नवरात्रों में राम नवमीं के दिन यहां पर मेले का आयोजन किया जाता है। लोग दूर-दूर से यहां आते हैं। वैरागी इसका पुजारी है।

★

अकादमी के नए प्रकाशन

१.	साहित्यकार कलाकार विवरणिका (सचित्र)	३०.००
२.	पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश	१२५.००
३.	नवीद-ए-सहर (उर्दू)	३०.००
४.	डिक्शनरी ऑफ पहाड़ी डाइलैक्ट्स एण्ड ए डिक्शनरी एण्ड ग्रामर ऑफ कनावरी (रिप्रिंट)	५०.००

कृपया पुस्तकें मंगवाने के लिए सचिव, हिमाचल कला, संस्कृति व भाषा अकादमी शिमला-I से सम्पर्क करें।

हिमाचल में लोक देव परम्परा

डॉ० अमिता शर्मा

आर्यों के भारत आगमन पर उनका सामना यहाँ की मूल जातियों यथा यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, असुर, व्रात्य आदि से हुआ। कहीं संघर्ष हुए, कहीं विरोध,प्रतिरोध हुए, अंतत: आर्य जाति यहीं की होकर रह गई। विद्याधर आदि जातियों की संस्कृति, नागर संस्कृति थी जबकि आर्य लोग मुख्यत: सैनिक जीवन के अभ्यासी थे तथा उनका जातीय जीवन ग्रामीण संस्कृति पर आधारित था। इन दोनों के मिलन और पारस्परिक आदान-प्रदान से जो संस्कृति उभरी वही भारतीय संस्कृति है। इसी संस्कृति में भारत के वर्तमान के अंश हैं। भारतीयता इसी से पनपी है।

आर्यों की अनेक सभाएँ तथा परिषदें हुआ करती थीं, जिनमें तर्क-वितर्क एवं दार्शनिक विवेचन हुआ करते थे। जीवात्मा तथा जन्मान्तरवाद आदि गम्भीर विषयों पर वाद-प्रतिवाद होता था। कर्मबन्धन, जीवात्मा की मुक्ति आदि विचार धाराओं का प्रादुर्भाव भी सम्भवत: इसी काल में हुआ।

भक्ति के बिना देव अधूरे हैं। देव को रिझाने के लिए फल, फूल, वस्त्र भोग का महत्व तो है मगर श्रद्धा उन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यही श्रद्धा भक्ति है। 'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से मानी जाती है। इस आधार पर भी कहा जा सकता है कि 'भक्ति-भावना' आर्यों के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों के फलस्वरूप क्रमश: श्रद्धा-उपासना से विकसित होकर उपास्य भगवान् के ऐश्वर्य में भाग लेना (भज् - भाग लेना) जैसे व्यापक भाव में परिणत हुई। (मोनियर विलियम्स)

भक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वेतर उपनिषद् (६/३३१) में मिलता है। उस युग में यज्ञ अथवा कर्मकाण्ड के माध्यम से धार्मिक अनुष्ठान हुआ करते थे। तब लोगों का ध्यान प्रमुखयत: ऐहिक सुखों की प्राप्ति पर ही रहता था इसीलिए वे अन्त:करण की साधना के कष्टों को सहने की अपेक्षा बाहरी विधानों के ही अनुसरण पर बल देते थे। लोग प्राय: प्राकृतिक वस्तुओं या घटनाओं के मूल में किसी देवता की कल्पना कर लिया करते और उनसे डर कर, उनको प्रसन्न रखने पर बल देते थे। इस से बहुदेववाद का प्रादुर्भाव हुआ। प्राकृतिक शक्तियों का देवकरण हुआ—कालांतर में महान बलशाली, शक्ति सम्पन्न व अद्भुत मानवों का देवीकरण होने लगा और बहुदेववाद बल पकड़ता चला गया। हर कस्बे, हर ग्राम हर जनपद व हर कबीले के अपने-अपने देवता बनते गए। कुछ सिद्ध पुरुष हो गए वह भी देवताओं की ही भाँति सम्मान पाने लगे, मरणोपरांत उनकी समाधियों की भी स्थापना, पूजा अर्चना व मान्यता होने लगी। जन-घोषित विश्वास शास्त्र-सम्मत माने जाने लगे तो शास्त्र-विहित मान्याताएं अस्वीकृत हो गईं। वैसे भी शास्त्र की कही-सुनी की अपेक्षा स्वानुभूति अधिक गहरी पैठती है।

साधना का विकास रुचि, शिक्षा और संस्कारों के ऊपर निर्भर होता है। देवाराधना भी इसी पर आधारित होती है—आत्मविश्वासमूलक या आराध्यनुग्रहमूलक। आत्म रक्षा की प्रवृति ने मनुष्य को देवाराधन

की तरफ प्रवृत किया। यही परम्परा आज भी दिखाई देती है। शक्ति सम्पन्न समर्थ व्यक्तियों की मरणोत्तरकालीन आत्माओं को आलौकिकता प्रदान कर उन्हें कल्याणप्रद शक्तियों से सम्बद्ध कर देने की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। कुल-देवता और ग्राम-देवता इन्हीं की उपज है, जिनके प्रतीक हैं पिण्ड और पदार्थ। इसी प्रकार सशक्त तथा सहायक पशु-पक्षियों की आत्माओं से टोटेम वाद और फिटिशवाद का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्हें भौतिक आपदाओं का कारण मान लिया गया और उनकी तुष्टि के लिए यातुविद्या तथा जटिल साधना विधान का विस्तार हुआ। (कम्पेरिटिव रिलिजन पृ. १३४)।

हिमाचल एक पहाड़ी प्रदेश है। भौगोलिक कारणों से यह जनक्षेत्र, शेष देश से प्रायः उदासीन ही रहा है। यहाँ तो मुनि वशिष्ठ, व्यास ऋषि, मार्कण्डेय आदि आए, तप किया और अपने-अपने तपस्थल को देवभूमि बना दिया। यह विभूतियाँ इतनी महान थीं कि अन्य कोई प्रचारक, सुधारक इनकी ज्योति को कम न कर सके। यदि किसी ने अपनी पहचान बनाई तो वह महान त्यागी, बलिदानी आत्माएं थीं जो अपने ग्राम, जनपद को खुशहाली देने हेतु आत्मोत्सर्ग करती रहीं—इस सदंर्भ में सती नारियाँ, रानी सुई, रुक्मणी देवी आदि ही देव-स्थान पा सकी हैं। अतः इस प्रदेश में अनेक लोक-देव बन गए हैं। विज्ञान के इस युग में भी यहाँ की जनता प्रायः संस्कार ग्रस्त है। आज भी भूत-प्रेत पिशाच-चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी तथा उनसे छुटकारा दिलाने वाले ओझाओं के झाड़फूंक, गण्डा-तावीज और जन्त्र-मन्त्र को पर्याप्त मान्यता प्राप्त है। आज भी यहाँ का लोक जीवन इन्हीं विश्वास-मत-मतान्तरों की लीक पर चल रहा है। चोरी हो जाने पर लोग पुलिस के पास जाने की अपेक्षा गूर या चेलें के पास जाना अधिक फलदायक समझते हैं। बीमारी की अवस्था में डाक्टरों की अपेक्षा ओझा या देवता की शरण जाना अधिक लोकप्रिय है।

देवताओं के प्रति ऐसा निगूढ़ विश्वास अनायास या आकस्मिक नहीं है। इसके पीछे एक सदृढ़ परम्परा है। जन-विश्वास तो आँखों देखी पर ही आधारित होते हैं। फाल्गुन या चैत मास में स्थान-स्थान पर मेले लगते हैं—इन मेलों में पूरे इलाके के देव हाजरी भरने आते हैं। इन देवताओं के अपने-अपने गुर या चेले (शिष्य) होते हैं जो अपने मुख का कितना महत्वपूर्ण अस्तित्व हैं।

हिमाचल में पूजित देवताओं को कई वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पौराणिक युग के त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अतिरिक्त सूर्य देवता, भू-देवता (थान, थनपाल या ओड़ी) प्रकृति पूजा (अग्नि आहुति) नदी-पूजा (मिंजर में रावी नदी पूजा, कुल्लु दशहरे के अवसर पर भैंसे, बकरे, मुर्गे, मछली व केंकड़े की बलियों द्वारा नदी पूजा) बहुत श्रद्धा के साथ पूजे जाते हैं। इनके अतिरिक्त पर्वत या शिखर पूजा (किन्नर कैलाश) नागपूजा (गूगा जाहर पीर, कुल्लु के हलाण ग्राम-देवता, चम्बा के कालू नाग, महाल नाग, थैनंग नाग आदि) भी प्रचलित है। देवताओं के अतिरिक्त दुर्गा शक्ति को भी अनेक रूपों में पूजा जाता है। देवी को रक्षिका रूप में ही माना जाता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि यहाँ के पूजित लोक-देव, शास्त्रीय-मान्यता प्राप्त कम और जन विश्वास पर अधिक आधारित हैं, तथा इनका एक अपना इतिहास है।

★

सोमसी में प्रकाशित सामग्री का विवरण

अंक १ से ६२ तक

संकलन- डॉ० कर्म सिंह

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
	भाषा				
(१)	पहाड़ी भाषा : लिपि	मौलूराम ठाकुर	—	—	—
(२)	हिमाचल भाषा सर्वेक्षण का महत्व	डॉ० श्याम लाल डोगरा	१	२	१
(३)	पहाड़ी भाषा की उपभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन	मौलूराम ठाकुर	१	४	१
(४)	किन्नौरी बोलियां	ठाकुरसेन नेगी	१	४	७
(५)	कहलूरी उपभाषा में संस्कृत के शब्द	आचार्य शुकदेव शर्मा	१	४	२२
(६)	लाहुल की किराती-कनाशी बोलियां	के० अंगरूप लाहुली	१	४	३७
(७)	ग्रियर्सन का पहाड़ी भाषाओं के सम्बन्ध में मत-एक विश्लेषण	डॉ० बंशीराम शर्मा	१	४	५२
(८)	भाषा का स्वभाव और पहाड़ी भाषा जनपद	शशी सेनी शर्मा	१	४	६१
(९)	ठेठ पहाड़ी के ठाठ	हरिराम जस्टा	२	२	४३
(१०)	गादी-पहाड़ी एक परिचय	अमर सिंह रणपतिया	२	३	६३
(११)	Studies in the Systimatics of Himachali Linguistics	Dr. Sidheshwar Verma	२	३	७२
(१२)	भाषा : बसुओं की धातृ	हरिचन्द पराशर	२	३	४८
(१३)	अमरकोश की परम्परा में पहाड़ी भाषा के शब्दों का अध्ययन	आचार्य शालिग्राम	२	४	४४
(१४)	Studies in the Systematic of Himachali Linguistics	Dr. Sidheshwar Verma	२	४	६७
(१५)	पहाड़ी शब्दों की व्युत्पत्ति	लेखराम शर्मा	३	१	५५
(१६)	Studies in the Systematics of Himachali Linguisties	Dr. Sidheshwar Verma	३	१	८८
(१७)	Studies in the Systematics of Himachali Linguisties	Dr. Sidheshwar Verma	३	२	७३
(१८)	महासवी उपभाषा और साहित्य	मीना ठाकुर	३	३	४३

(१९)	Studies in the Systematics of Himachali Linguisties	Dr. Sidheshwar Verma	३	३	६८
(२०)	भारतीय राजभाषा सम्मेलन १९७८	—	४	१	७४
(२१)	कांगड़ी बोली में सर्वनाम का प्रयोग समाज भाषा विज्ञान की दृष्टि	मधुबाला	८	१	३८
(२२)	Studies in the Systematics of Himachali Linguisties	Dr. Sidheshwar Verma	४	१	३२
(२३)	Studies in the Systematics of Himachali Linguisties	Dr. Sidheshwar Verma	४	२	७१
(२४)	लाहुल की बोलियां	बलराम	४	३	४६
(२५)	गादी पहाड़ी भाषा में अनेकार्थक शब्दों का विवेचन	अमर सिंह रणपतिया	४	३	८३
(२६)	कुल्लुई का व्याकरण	मौलूराम ठाकुर	४	४	८२
(२७)	कहलूरी ध्वनियां	जगतपाल शर्मा	५	१	३४
(२८)	जिला ऊना की भाषाई स्थिति	सरोज सांख्यायन	५	२	५२
(२९)	कांगड़ी उपभाषा और प्राकृत में समानता	शैला डोगरा	५	४	८४
(३०)	हिमाचली में उ, ऊ की ध्वनि और वर्तनी	डॉ० श्याम लाल	६	२	१
(३१)	जम्मू की पर्वतीय जातियों के उपनाम	डॉ० प्रियतम कृष्ण	६	२	६९
(३२)	हिमाचल प्रदेश की जाति "चिनाल" में संस्कृत की जीवन्त परम्परा	डॉ० डी. डी. शर्मा	६	३	१
(३३)	महासुई उपभाषा के क्रियापदों का संरचनात्मक अध्ययन	हरिराम जस्टा	६	४	८५
(३४)	पहाड़ी भाषा की संस्कृत मूलकता	लेखराम शर्मा	७	१	१
(३५)	भाषा का धर्म और धर्म की भाषा	प्रेम पखरोलवी	७	१	१०
(३६)	पहाड़ी साहित्य इतिहास एवं समीक्षा पहाड़ी में नाटक लेखन	बलदेव कुमार ठाकुर	७	१	८९
(३७)	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और हिमाचली पहाड़ी	डॉ० मनोहर लाल	७	२	१
(३८)	प्राचीन हिमाचल में शिक्षा, लिपि, भाषा और साहित्य का विकास	डॉ० लालता प्रसाद पाण्डेय	७	३	१७
(३९)	मंडियाली के अधिखण्डात्मक स्वनिम (सुपरा-सेग्मेंटलफोनिमस)	डॉ० जगतपाल शर्मा	८	२	१४
(४०)	फारसी और संस्कृत अवसर्ग (एफिक्स) साम्य	डॉ० लक्ष्मी शंकर गुप्त	८	३	१६
(४१)	भारतीय भाषाओं का अधिष्ठान पंचम विश्व पुस्तक मेला	नरेन्द्र कुमार	८	३	७३
(४२)	कांगड़ी बोली में आक्षरिक संरचना	श्रीमती मधुबाला	८	४	१७
(४३)	संस्कृत तथा भाषा विज्ञान	डॉ० मन्त्रिणी प्रसाद	९	१	२४

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(४४)	मण्डयाली के सन्दर्भ में	डॉ० जगतपाल शर्मा	१०	४	१४
(४५)	एक समाज भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन	मधुबाला	१०	४	४८
(४६)	कांगड़ी बोली में नकारात्मक प्रक्रिया	मधुबाला	११	३	४५
(४७)	हिमाचली में आ की ध्वनि और वर्तनी	श्याम लाल	१३	२	११
(४८)	हलकी भाषा गूढ़ रहस्य	दयानन्द सरस्वती	१३	२	५०
(४९)	चच्योटी उपभाषा के प्रारूप पर दृष्टि	मोती लाल घई	१३	३	२७
(५०)	बिलासपुरी के परसर्ग	डॉ० देवेन्द्र काश्यप	१३	४	८०
(५१)	रचनाधर्मिता और पहाड़ी भाषा एक सन्दर्भ	डॉ० पीयूष गुलेरी	१३	४	९६
(५२)	हिमाचली (पहाड़ी) का उद्भव और विकास	डॉ० वेदप्रकाश अग्नि	१४	३	३८
	लोकगीत				
(१)	कांगड़ी लोकगीतों में कल्पना का स्वरूप	डॉ० गौतम 'व्यथित'	—	१	२
(२)	महासुई लोकगीतों में सामाजिक परिवेश	जगदीश शर्मा	१	३	५८
(३)	पश्चिमी पहाड़ी का परम्परा क्षेत्र	—	१	३	८६
(४)	कांगड़ी लोक गीतों में गालियां	मनोहर लाल	२	१	४६
(५)	बिलासपुरी लोकगीतों में वेदना	पद्म नाभ गौतम	२	१	६३
(६)	बिलासपुरी लोकगीत मोहणा-एक अध्ययन	सीताराम खजूरिया	२	२	४०
(७)	मण्डयाली लोकगीतों में भाव सौन्दर्य	डॉ० कांशी राम 'आत्रेय'	२	२	५९
(८)	हिमाचली लोकगीतों में सामाजिक चेतना	डॉ० गौतम 'व्यथित'	२	२	५०
(९)	कुल्लू का मोहक लोकनृत्य-नाटी	चन्द्रशेखर 'बेबस'	२	३	११
(१०)	कांगड़ा क्षेत्र के संस्कार गीत	रामकृष्ण कौशल	२	३	१९
(११)	सिरमौरी लोकनृत्य	विद्यानन्द सरैक	२	३	६०
(१२)	आउटर सिराज कुल्लू के लोकगीतों में भावों का प्रवाह	ठाकुर दत्त शर्मा	२	४	५७

(१३)	कांगड़ी लोक साहित्य में जन्म गीत	विमला कुठियाला	३	१	४४
(१४)	कांगड़ा के लोकगीतों में काव्य तत्त्व	मनोहर लाल	३	२	१
(१५)	क्योंथल जनपद और विवाह गीत	शकुन्तला शर्मा	३	२	७०
(१६)	विवाह गीत (महासू)	जगदीश शर्मा	३	३	४१
(१७)	हिमाचल-लोकनृत्य-परम्परा	हरिराम जस्टा	३	३	१
(१८)	महासवी लोक संगीत	सलीम	३	३	४१
(१९)	कांगड़ी लोकगीतों में प्रतीक योजना	डॉ० गौतम 'व्यथित'	४	१	१
(२०)	कांगड़ी लोकगीतों में नायिका भेद	डॉ० मनोहर लाल	४	२	३६
(२१)	कुल्लू के लोकगीत, लोकनृत्य तथा लोकनाट्य	उर्मिला बलराम	४	४	३३
(२२)	कुल्लू के संस्कार	नरेन्द्र शर्मा	४	४	७६
(२३)	सूर काव्य की छाया में कांगड़ी लोकगीत	डॉ० शम्मी शर्मा	५	३	६२
(२४)	हिमाचल के लोकगीत : एक सर्वेक्षण	डॉ० गौतम शर्मा 'व्यथित'	५	४	२१
(२५)	बारह मासा गीत-कुल्लवी लोकगीतों की परम्परा में	ठाकुर दत्त शर्मा 'आलोक'	५	४	५५
(२६)	महासुई लोकगीतों में शक्ति पूजा	प्रो० हरिराम जस्टा	६	१	९
(२७)	सिरमौरी लोकनृत्यों का वर्ष की ऋतुओं से सम्बन्ध	विद्यानन्द सरैक	६	१	४७
(२८)	कांगड़ी लोकगीतों में श्री कृष्ण का स्थान	सुदर्शन डोगरा	६	१	५८
(२९)	लोकनाट्य एवं नृत्य कार्यशाला का आयोजन	अशोक हंस	६	१	९१
(३०)	बिलासपुरी जनपद तथा विवाह गीत	जगदीश चन्देल	६	२	२६
(३१)	अर्की जनपद में प्रचलित लोकगीत	शंकर लाल शर्मा	६	२	३२
(३२)	कन्या से नारी जीवन का महत्व	अमर नाथ वशिष्ठ	६	२	५१
(३३)	बिलासपुर जनपद में गाए जाने वाले भक्ति गीत : सांस्कृतिक विवेचन	श्रीराम शर्मा	६	२	७५
(३४)	लोकनृत्य-तिलचौली	प्रेम कुमार शर्मा	८	३	३१
(३५)	कांगड़ा के संस्कार गीतों में नारी	रमेश शर्मा अरुण	६	३	७१
(३६)	बारह मासा-लोग गीत-एक अध्ययन	डॉ० पद्मनाभ गौतम	६	४	१०
(३७)	कुलुई में रामायण	कमलेश कुमारी ठाकुर	६	४	२२

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(३८)	बनजार के लोकगीतों का समीक्षात्मक अध्ययन	बाल कृष्ण ठाकुर	६	४	७५
(३९)	कांगड़ा के लोकगीतों में जन्म संस्कार	नन्द किशोर 'परिमल' गुलेरी	७	१	६८
(४०)	लोकगीत की समृद्ध जीवन शक्ति	हरिचन्द पराशर	७	१	९६
(४१)	कांगड़ा जनपद का प्रसिद्ध लोक-संगीत-'सुहाग'	विमला कुठियाला	७	२	२४
(४२)	कांगड़ा के जन्म-संस्कार गीत	राजरानी शर्मा	७	२	४१
(४३)	हिमाचल के लोकगीतों में करुण रस	दुर्गादत्त शास्त्री	७	३	४६
(४४)	कांगड़ी लोकगीत ''पखड़ू'' संक्षिप्त परिचय	शेष अवस्थी	७	२	४८
(४५)	बिलासपुर क्षेत्र में प्रचलित श्रृंगार गीत : सांस्कृतिक विवेचन	डॉ० श्री राम शर्मा	८	१	१३
(४६)	कांगड़ा घाटी और चैत्र मास के गीत	डॉ० गिरिधर योगेश्वर	८	२	२६
(४७)	हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध लोकगीत फुलमू और रांझू	शशिकान्त शास्त्री	८	२	३७
(४८)	पहाड़ी गीतों में विविध रस	प्रेम लाल गौतम	८	२	४९
(४९)	चम्बा के संस्कार गीत	तेज राज पूंगा 'विकल'	८	२	६४
(५०)	पहाड़ी लोकगीत एवं नृत्य	ओमप्रकाश शर्मा	८	३	७१
(५१)	सिरमौरी गीतों में कारुण्य एवं आक्रोश	आचार्य प्रेमलाल गौतम	८	४	६४
(५२)	कांगड़ी लोकगीतों में छमाहड़ी	हरिकृष्ण मुरारी	९	१	५३
(५३)	शिवरात्री पर गाये जाने वाले भक्ति गीत	अमृत कुमार शर्मा	९	२	५१
(५४)	बुशैहरी लोकगीत : सांस्कृतिक रहस्य	कृष्ण चन्द्र कायथ	९	३	३५
(५५)	पहाड़ी गीतों में प्रकृति-सुषमा	प्रेमलाल गौतम 'आचार्य'	१०	२	४६
(५६)	पूर्वोत्तर हिमाचल प्रदेश की एक सांगीतिक पृष्ठभूमि	सूरत राम ठाकुर	१०	२	६७
(५७)	कांगड़ा के लोकगीत : साहित्यिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन	डॉ० गौतम व्यथित शर्मा	१०	२	७६
(५८)	कांगड़ी लोकगीतों में भक्ति भाव	रजनी बाला धींगड़ा	१०	२	९१
(५९)	पहाड़ी विवाह पद्धति में गाए जाने वाले गीत	रामेश्वर दत्त शर्मा	१०	३	४३
(६०)	चम्बयाली लोक साहित्य में ढोलरु लोकगीत की परम्परा	कुमारी कुसुम	१०	३	६५

(६१)	महासूई लोकगीतों में जनजीवन	दत्त शर्मा	१०	३	५७
(६२)	बिलासपुर जनपद में प्रचलित ऋतुमास गीत	डॉ० श्रीराम शर्मा	१०	४	१८
(६३)	चम्बयाली प्रेम गीत	डॉ० विद्यानन्द ठाकुर	१०	४	३७
(६४)	सराजी लोकगीतों की पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक पक्ष	दयानन्द सरस्वती	१०	४	४४
(६५)	सिरमौरी गीतों में हारूल	प्रेम लाल गौतम आचार्य	१०	४	५०
(६६)	शिवरात्रि पर्व पर गाए जाने वाले गीत	अमृत कुमार शर्मा	१०	४	५४
(६७)	लोकगीत 'मोहणा' के कथानायक-मोहन	डॉ० लेखराम शर्मा	११	१	३४
(६८)	विवाह-लोकगीत	जगदीश चन्देल	११	१	६३
(६९)	निरमंड क्षेत्र में प्रचलित गीत	सुरजीत सिंह पटियाल	११	१	७६
(७०)	कुल्लवी लोकगीतों में सौन्दर्य वर्णन	प्रो० सूरत राम ठाकुर	११	२	३०
(७१)	हिमाचली लोकगीतों में सामाजिक चेतना	डॉ० गौतम शर्मा ''व्यथित''	११	२	५७
(७२)	कुल्लू के ऐतिहासिक लोकगीत	उषा	११	४	३३
(७३)	हिमाचली लोकगीतों की बहुविधता	राजरानी शर्मा	११	४	४५
(७४)	हिमाचली लोक संगीत पर भौगोलिक स्थिति का प्रभाव	इनाक्षी महाजन	११	४	६३
(७५)	चम्बयाली लोकगीतों में रस योजना	डॉ० विद्याचन्द ठाकुर	१२	१	२०
(७६)	बिलासपुर के लोकगीतों में समकालीन समस्याओं का चित्रण	डॉ० श्रीराम शर्मा	१२	१	३९
(७७)	कुल्लू के लोकगीत : आर्थिक संदर्भ	देविका ठाकुर	१२	२	९
(७८)	लोक नृत्यों के प्रकार	सुरजीत सिंह पटियाल	१२	२	७८
(७९)	महासूई लोकगीतों में सामाजिक चित्रण	श्री दत्त शर्मा	१२	३,४	२७
(८०)	डंडारस एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	कमल प्रसाद शर्मा	१२	३,४	४४
(८१)	प्रेम सेतु : लामण	शर्मानन्द श्रवण	१२	३,४	५७
(८२)	कुल्लू के विवाह गीत और लोकाचार	ऊषा	१२	३,४	६४
(८३)	हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों में हमारे रिश्ते-नाते	रत्न चन्द ''निर्झर''	१२	३,४	८८
(८४)	चम्बा के लोकगीत	प्रेम कुमार शर्मा	१२	३,४	९८
(८५)	लोकगीत मादरी	बी.आर. जसवाल	१३	२	३७

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(८६)	हिमाचली लोक नृत्यों में देव परम्पराएं	मुरारी शर्मा	१३	३	६६
(८७)	हिमाचली लोकगीतों में लामण: गायन शैली	डॉ० सुरजीत सिंह पटियाल	१३	३	७७
(८८)	सिरमौर के लोकगीत	बालक राम जसवाल	१४	१	७४
(८९)	सामाजिक लोकगीत: एक अनुशीलन	मनोहर सागर पालमपुरी	१४	१	८३
(९०)	मण्डयाली लोकगीत : एक अध्ययन	डॉ० कांशी राम 'आत्रेय'	१४	२	५५
(९१)	कांगड़ा जनपद-मृत्यु गीतों के परिप्रेक्ष्य में	त्रिलोक मेहरा	१४	३	७८
(९२)	कुल्लू के ऐतिहासिक लोकगीत	ऊषा	१४	११	४
(९३)	कांगड़ी लोकगीतों में विरह और मिलन गीत	विमला कुठियाला	—	—	—
(९४)	सोलन के लोकगीत एवं लोकनृत्य	ठाकुर जयकिशन सिंह	१५	४	५३
(९५)	कांगड़ा के जन्म संस्कार गीत और कृष्ण	मीनाक्षी शर्मा	१५	४	६५
(९६)	लोक परम्पराओं से जुड़े जन्म संस्कार गीत	रामलाल पाठक	१६	१,२	३८
(९७)	कोटगढ़ क्षेत्र में प्रचलित विवाह गीत	विमला मेहता	१६	१,२	७९
	लोक देवता व मन्दिर				
(१)	वैष्णो देवी की यात्रा	दुर्गादत्त शास्त्री	१	३	६४
(२)	हिमाचल प्रदेश के मंदिरों की शैली तथा सूची	कु० त्रिभुवन रेखा राठौर	१	४	७८
(३)	भगवान भृगुनाथ परशुराम	मदन मोहन 'कमल'	२	४	३६
(४)	ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	गोवर्धनसिंह	३	३	१०
(५)	लाहुल के मंदिर और गोम्पे	बलराम	३	२	२४
(६)	पुण्यस्थल : पराशर झील	विद्याचन्द ठाकुर	३	२	४६
(७)	रुकमणीकुण्ड	हुक्मसिंह ठाकुर	३	२	५०
(८)	हिमाचल में सूर्य पूजा	डॉ० लालता प्रसाद पाण्डेय	३	१	१३
(९)	गुग्गा चौहान का सांस्कृतिक तथा सामाजिक विश्लेषण	योगेन्द्र सिंह तूर	४	३	१८

(१०)	कुल्लू की मेखाली देवी	चन्द्रशेखर 'बेबस'	४	३	७३
(११)	गद्दियों की धार्मिक प्रवृत्तियां और उनके देवालय	डॉ० मोहनलाल	५	१	३
(१२)	कांगड़ा घाटी में जगराता	रमेशचन्द्र मस्ताना	५	२	६८
(१३)	देवमण्डल रघुनाथ के समक्ष	हरिचन्द्र पराशर	५	३	३३
(१४)	भगवान चूड़ेश्वर महादेव	मदन मोहन 'कमल'	५	३	४६
(१५)	स्पिति के गोम्पे	बलराम	६	१	५२
(१६)	हिमाचल प्रदेश की देवी-उपासना के सन्दर्भ में देवी पूजा की व्यापकता	डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी	६	२	३६
(१७)	देवी सिमसा	शशि कान्त शास्त्री	६	२	८५
(१८)	देवभूमि कुल्लू और मां कुसुम्भा के मंदिर की मूकता	ठाकुरदत्त शर्मा 'आलोक'	६	३	३
(१९)	जसवां क्षेत्र में दुर्गापूजा जगराता या जागा	स्वर्णप्रेम	६	३	४९
(२०)	नाहनः महाकाली का पर्दापण	मदन मोहन 'कमल'	६	४	४१
(२१)	महासू परिवार में देवता बनाड़	ध्यानसिंह भागटा	६	४	४४
(२२)	रेणुकोद्धार	भुवनेश्वर सुमन	६	४	५२
(२३)	नाग और गरुड़	सन्तराम वत्स्य	६	४	६४
(२४)	ऊना नगरी के प्रसिद्ध देवस्थान	खुशीराम शर्मा	७	१	४३
(२५)	महाराजा संसारचन्द की जन्म भूमि विजयपुर का सीता-राम मन्दिर	शशिकान्त शास्त्री	७	१	५३
(२६)	देव भूमि	सुखराम हिंगोराणी	७	३	११
(२७)	पहाड़ों में नाग पूजा	अशोक जेरथ	७	३	५३
(२८)	कुल्लू में रघुनाथ की स्थापना तथा मंदिर में मनाए जाने वाले उत्सव	विद्या शर्मा	७	४	३२
(२९)	प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त खीर गंगा	लीलाधर पराशर	७	४	४०
(३०)	अगम्य, अचर्चित स्थल त्रिगर्त कांगड़ा का शक्तिपीठ : (बगलामुखी) वनखण्डी	डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी	८	१	१
(३१)	मटियात का चमत्कारी देवता : नाग विणतरु	धर्मचन्द कौशल	८	१	६४
(३२)	गद्यार क्षेत्र में कार्तिकेय पूजन	अमरसिंह रणपतिया	८	२	५६
(३३)	शिमला जनपद में नागपूजा परम्परा	डॉ० हरिराम जस्टा	८	३	६

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(३४)	तीर्थस्थल मार्कण्डेय और व्यास गुफा	रामलाल पाठक	८	३	३५
(३५)	बूढ़ा केदार एक पौराणिक स्थल	हेमप्रभा शर्मा	८	४	३४
(३६)	कांगड़ा के मन्दिरों का ऐतिहासिक और कलात्मक महत्व	डॉ० शम्मी शर्मा	८	४	३७
(३७)	हिमाचल प्रदेश और नागपूजा	खेमराज गुप्त 'सागर'	८	४	४४
(३८)	कांगड़ा के ऐतिहासिक शव तीर्थ-त्रिलोकपुर	डॉ० युगल किशार	८	४	४७
(३९)	सौभाग्य एवं पुण्य की प्रतीक-तुलसी पूजा	शशिकान्त शास्त्री	८	४	६९
(४०)	कांगड़ा का जनमानस एवं लोक देवता	रमेश मस्ताना	८	४	७२
(४१)	हिमाचल प्रदेश में सूर्य पूजा	रमेश चन्द्र	९	२	२०
(४२)	चम्बा राज्य द्वारा सम्मानित देवता - नाग मढोर	धर्मचन्द कौशल	९	२	७०
(४३)	कांगड़ा घाटी में गूगा छत्री	रत्नलाल चौधरी	९	२	७३
(४४)	ऊना जिला का एक अचर्चित सिद्ध पीठ-गिड़गिड़ा पोणाहारी	डॉ० वासुदेव प्रशान्त	९	३	६
(४५)	कांगड़ा घाटी का डीनू नाग	रजनीबाला धींगड़ा	९	३	१९
(४६)	चम्बा के विशेष सन्दर्भ में-शिखर शैली के मन्दिर	सुरेन्द्र मोहन सेठी	९	३	२२
(४७)	हिमाचल का लोक सांस्कृतिक पर्व-सैरी का त्यौहार	डॉ० शम्मी शर्मा	९	३	५८
(४८)	देव मंढोड़ सिरमौर का टीका	अमरदेव अंगिरस	९	३	६२
(४९)	चम्बा जनपद में नाग	हरिराम जसटा	९	३	७०
(५०)	चन्दन का नया घर-ज्वालामुखी	मेलाराम सावर	१०	२	२०
(५१)	नाग युगावशेष-मंढोर मठ	तेजराज पूंगा	१०	२	३९
(५२)	चम्बा का लक्ष्मी नारायण मंदिर-एक शास्त्रीय विवेचन	सुरेन्द्र मोहन सेठी	१०	३	१६
(५३)	हिमाचल प्रदेश में नाग पूजा	डॉ० शम्मी शर्मा	१०	३	३२
(५४)	चौथी सिद्धपीठ ममलेश्वर महादेव	सुदर्शन वसिष्ठ	१०	३	४०
(५५)	ऐतिहासिक मंदिर ठाकुर त्रिजुगीनारायण दियार	भोज प्रकाश शर्मा	१०	४	३४

(५६)	कृष्ण जी का देश कोठी तारापुर	पूर्णसिंह ठाकुर	१०	४	४२
(५७)	जक्ख नागों से जुड़ी परम्परा	स्वर्णकान्ता शर्मा	१०	४	३४
(५८)	कुंजेश्वर महादेव	शशिकान्त शास्त्री	१०	४	५५
(५९)	पौराणिक शिव मंदिर वैजनाथ	देवराज संसालवी	१०	४	७३
(६०)	हिमाचल भूमि के माहूनाग	शास्त्री दीनानाथ 'गौतम'	११	१	४१
(६१)	ज़िला ऊना का बाबा रुद्र	ईश्वर दु:खिया	११	१	४५
(६२)	केलांग देवता	तोबदन	११	१	४९
(६३)	कांगड़ा के बालशंकर भगवान बाबा बालकरुपी	रतनचन्द शर्मा शास्त्री	११	२	१
(६४)	मेघराज देवता गोली नाग	पन्नालाल जोगटा	११	२	६
(६५)	कांगड़ा जनपद में देवी पूजन	डॉ० ब्रह्मदत्त	११	२	६७
(६६)	बंजौरा विश्वेश्वर महादेव मन्दिर	शास्त्री दीनानाथ 'गौतम'	११	२	७९
(६७)	कुल्लू का सन्ध्या देवी मंदिर	सुरेन्द्रमोहन सेठी	१०	४	२५
(६८)	बच्छरेटू का अति प्राचीन शिव मन्दिर	देवेन्द्रनाथ कश्यप	११	२	१३
(६९)	हाटेश्वरी और अनुश्रुतियां	मस्तराम चौहान	११	२	२२
(७०)	चिन्तपुरणी : एक अध्ययन	देवीदास शर्मा	११	२	३२
(७१)	अच्छरकुण्ड	डॉ० राममूर्ति बासुदेव प्रशान्त	११	२	३५
(७२)	कांगड़ा और उसके देवस्थान	पृथुराम शास्त्री	११	३	१०
(७३)	हिमाचल के सिरमौर जनपद में देवी पूजा	रत्नचन्द शर्मा	११	३	१५
(७४)	कांगड़ा घाटी में इन्द्र नाग	रतनलाल चौधरी	११	३	५३
(७५)	मान्यता की कसौटी पर घुण्डा नाग	प्रो० नरेन्द्र अरुण	१४	३	८१
(७६)	सैणधार की प्रसिद्ध देवी मां मनसा	प्रेमलाल गौतम आचार्य	११	४	४
(७७)	कांगड़ा जनपद में शिव मन्दिर	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	११	४	१
(७८)	सैणधार की प्रसिद्ध देवी मां मनसा	प्रेमलाल गौतम आचार्य	११	४	२३
(७९)	लोक आस्था का प्रतीक टूघानाल सिद्ध बाबा बालक नाथ	मोतीलाल घई	१२	१	६५
(८०)	महासू देवता का नृत्य	कुशलदेव	१२	२	४६

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(८१)	उत्तरी भारत का लोक देवता गूगा	डॉ० दिनेशचन्द्र अग्रवाल	१२	२	५७
(८२)	भरमौर क्षेत्र के देवी देवता	अमरसिंह रणपतिया	१२	२	८२
(८३)	विचित्र पौराणिक सांस्कृतिक मन्दिर शारदा	रजनी बाला धींगड़ा	१२	३,४	१४
(८४)	प्रसिद्ध शक्तिपीठ : श्री नैना देवी	डॉ० प्रत्यूष गुलेरी	१३	१	३६
(८५)	हिमालय में पूजित गुग्गा जहर पीर	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	१३	१	३९
(८६)	करसोग क्षेत्र का माहूंनाग	हेमप्रभा शर्मा	१३	१	६२
(८७)	कांगड़ा घाटी का एक अद्भुत तीर्थ	रमेशचन्द मस्ताना	१३	१	६६
(८८)	हिमाचल-संस्कृति में मार्कण्डेय	अमरदेव आंगीरस	१३	२	७
(८९)	बिलासपुर का दर्शनीय धार्मिक स्थल बच्छरेटू मन्दिर	डॉ० लेखराम शर्मा	१३	२	२८
(९०)	निरमण्ड परशुराम पंचस्थली	शरभानन्द श्रवण	१३	२	३१
(९१)	वैद्यनाथ (वैजनाथ) शिव मंदिर व आस-पास के धार्मिक स्थल	सुदेश दीक्षित	१३	२	४१
(९२)	हाटेश्वरी मंदिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	मस्तराम चौहान	१३	२	४४
(९३)	जनमानस की दिव्य आस्था का केन्द्र दलाश (कुल्लू) महादेव का भव्य मन्दिर	ठाकुर दत्त शर्मा 'आलोक'	१३	२	७३
(९४)	विराटनगर हाटकोटि के देवालय	देवीदत्त शर्मा	१३	२	८१
(९५)	नाथ सम्प्रदाय में गूगा जाहरपीर (वीर)	संसारचन्द प्रभाकर	१३	३	१३
(९६)	भगवती मिंधल देवी एक कथा यात्रा	नरेन्द्र अरुण	१३	३	५७
(९७)	चिमनू बाबा एक ऐतिहासिक पुरुष	अमरदेव आंगिरस	१३	३	६३
(९८)	क्या जालन्धर हिमाचली थे?	डॉ० वेदप्रकाश 'अग्नि'	१३	३	८३
(९९)	सराहन का देवता-सियाना ऋषि	डॉ० बलदेव ठाकुर	१३	४	२८
(१००)	अराध्य देवी:भीमा काली	नीना भण्डारी	१३	४	७५
(१०१)	भगवान परशुराम तथा जमलू	शरभानन्द श्रवण	१३	४	८७
(१०२)	ख्वाजापीर	डॉ० रत्नचन्द शर्मा शास्त्री	१४	१	४८

(१०३)	छिद्र महादेव	वेदप्रकाश शांडिल	१४	१	५४
(१०४)	पेंटरुफ-वान्दरा देवता का मंदिर	हाकम शर्मा	१४	१	९३
(१०५)	विजटदेवता मन्दिर बरायला (राजगढ़)	बालकराम जसबाल	१४	२	७५
(१०६)	भटियात का चमत्कारी देवता:नाग विणतरु	धर्मचन्द कौशल	१४	२	८३
(१०७)	सिद्धनाथ सम्प्रदाय में बाबा सिब्बो का स्थान	संसार चन्द प्रभाकर	१५	१.२	३७
(१०८)	महर्षि पराशर का पावन धाम	डॉ० विद्या चन्द ठाकुर	१५	४	४०
(१०९)	ममलेश्वर महादेव का मंदिर	तीर्थ राम शर्मा	१६	१.२	६०
(११०)	छतराड़ी में शिवशक्ति का प्रादुर्भाव	प्रेम शर्मा	१६	१.२	६३
(१११)	त्रिवेणी महादेव-एक दर्शनीय स्थल	शशि कान्त शास्त्री	१६	१.२	७०

लोक संस्कृति

(१)	सराहन क्षेत्र जिला शिमला की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि		१	१	
(२)	हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्यों का वर्गीकरण	रामदयाल नीरज	१	२	४०
(३)	हिमाचली संस्कृति एवं आयुर्वेद	लाल चन्द प्रार्थी	१	३	१
(४)	कांगड़ी लोक साहित्य : एक अध्ययन	डॉ० आत्मा राम	१	३	१५
(५)	हिमाचल की हेला या बुआरा प्रथा	रवीन्द्र रणदेव	२	१	५७
(६)	लाहुल में विवाह-प्रथा	बलराम	२	२	३५
(७)	सांस्कृतिक विवरण और समन्वय	हरिचन्द पराशर	२	२	७३
(८)	पहाड़ी (हिमाचली) भाषा में लिखित साहित्य	प्रो० हरिराम जसटा	३	१	२
(९)	गणतन्त्र पद्धति का विशिष्ट आदर्श-मलाणा	मौलू राम ठाकुर	३	१	३४
(१०)	वेशभूषा और खानपान	भुवनेश्वरी	३	३	४६
(११)	वैदिक सोमरस और कुल्लुई सूर	मौलू राम ठाकुर	४	२	१६
(१२)	हिमाचल में वृक्ष पूजा	प्रो० हरिराम जसटा	४	३	१
(१३)	कुल्लुई लोकाचार लोक विश्वास टूने,टोटके व लोकचेटक	विद्या शर्मा	४	४	४१
(१४)	कुल्लू के जनजीवन की झांकी	विद्या चन्द ठाकुर	४	४	५९
(१५)	बाहरी सिराज (कुल्लू) का लोक साहित्य और संस्कृति	ठाकुर दत्त शर्मा	४	४	६६

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१६)	लोक दर्शन और लोक प्रवृत्ति	हरि चन्द पराशर	५	१	१
(१७)	कुलुई प्रकाशित साहित्य	बलदेव कुमार	५	१	१६
(१८)	बाल साहित्य उपयोगिता और उत्पादन की समस्याएं	सन्तराम वत्स्य	५	१	२९
(१९)	हिमालय क्षेत्र में सती प्रथा एक विवेचन	पी.एन. सेमवाल	५	२	१
(२०)	हिमाचली लोक साहित्य में राम	डॉ० कांशीराम आत्रेय	५	२	७
(२१)	कांगड़े के मृत्यु संस्कार	डॉ० मनोहर लाल	५	२	३९
(२२)	कहलूर की जुब्बा प्रथा	हुकुम सिंह ठाकुर	५	२	७२
(२३)	हिमाचल में संस्कृत-परम्परा	डॉ० श्याम लाल	५	३	२२
(२४)	बजौरा के सांस्कृतिक अवशेष	प्रो० दया सागर	५	३	३६
(२५)	संस्कृत साहित्य में हिमालय	डॉ० प्रभाकर माचवे	५	४	१
(२६)	शैशव विकास और मानवीय संस्कार	प्रेम पखरोलवी	५	४	४९
(२७)	कांगड़ी लोक साहित्य में उपदेशात्मक लोकोक्तियां (पखैना)	शशिकान्त शर्मा	५	४	५९
(२८)	कांगड़ी लोक रामायण:एक समीक्षात्मक समझ	तोबदन	५	४	७०
(२९)	हिमाचल लोक जीवन में ऋतु दर्शन	हरिकृष्ण मुरारी	६	१	३३
(३०)	गद्दियों के कुल और निषेध	डॉ० मोहन लाल	६	३	१२
(३१)	हिमाचल लोक साहित्य एवं ग्राम्य गीत	डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी	६	४	१९
(३२)	संसार का सबसे पुराना जनपद-मलाणा	देसराज डोगरा	७	२	८
(३३)	हिमाचल प्रदेश में प्रचलित कुछ विश्वास एवं परंपराएं	तिलक राज निर्मोही	७	३	३४
(३४)	हिमाचल की संस्कृति और हमारा दायित्व	मनोरमा शर्मा	७	४	२७
(३५)	हिमाचल की आदिम जातियां : किन्नर	डॉ० बंशीराम शर्मा	७	४	६३
(३६)	पहाड़ी संस्कृति और सभ्यता : तब और अब	आर०डी० महन्त	७	४	८७
(३७)	हिमाचल प्रदेश के पुरोहित और मौली का सम्बन्ध	दुर्गादत्त शास्त्री	८	१	४
(३८)	निरमण्ड का भूण्डा महायज्ञ	खेमराज गुप्त	८	२	८०

(३९)	ब्रहमौरी जन-जीवन की एक झलक	श्री भक्त राम द्विवेदी	८	३	५४
(४०)	महर्षि जमदग्नि के आश्रमनुमा मलाणा गांव में आदिवासी जन-जीवन	तेज राम ठाकुर	९	१	७२
(४१)	हिन्दी प्रेमाख्यान परंपरा के उद्गम स्त्रोत, नये तथ्य	सुशील कुमार 'फुल्ल'	९	१	७८
(४२)	सिरमौरी लोक साहित्य में वीर रस की प्रधानता	गीता शर्मा	९	२	६०
(४३)	भद्रवाह का एक सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० प्रियतम	९	२	८०
(४४)	हिमाचल का एक स्वर्ग-जांगला	डॉ० गंगा दत्त शास्त्री	९	३	१०
(४५)	पहाड़ों में विवाह संस्कार	डॉ० बलदेव ठाकुर	९	३	४६
(४६)	हिमाचली कुल्लू जनपद के श्याह गांव श्रानी - एक लोकानुष्ठान लग्न सारिणी स्वयंवरा परिचायक	डॉ० काशीराम आत्रेय	१०	१	३४
(४७)	ऋग्वेद कालीन लोक साहित्य	डॉ० नेत्र सिंह चौहान	१०	४	१
(४८)	हिमाचली लोक जीवन	कृष्ण सिंह कंवर	१०	४	२८
(४९)	बुद्दू का कांटा - सार्थक अनुभव की हिस्सेदारी	डॉ० ओम प्रकाश सारस्वत	१०	४	
(५०)	अभीजात्य संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में लोक संस्कृति	डॉ० अशोक जेरथ	११	१	१९
(५१)	संस्कृति के आईने में	अमरदेव आंगिरस	११	२	१६
(५२)	मण्डयाली लोक जीवन के विशेष पेय व खाद्य पदार्थ झोल और पछोलण	मोती लालघई	११	२	३५
(५३)	गद्‌यार क्षेत्र भरमौर की समाज सेवी संस्थाओं की आर्थिक ढांचे में भूमिका	अमर सिंह रणपतिया	११	२	७३
(५४)	संस्कृति का जनपद : बघाट	लेख राम चौहान ''हिमाचली''	११	३	५७
(५५)	कुल्लू में नोड़ जाति का प्रादुर्भाव तथा काहिका	चुनी लाल	११	४	
(५६)	कुल्लवी जन-जीवन में प्रचलित संस्कार	दयानन्द सरस्वती	१२	१	७९
(५७)	कांगड़ा का ऐतिहासिक परिदृश्य तथा वहां के लोक साहित्य की रूपरेखा	रजनी बाला धींगड़ा	१२	२	२९
(५८)	हिमाचल के लोक वाद्य	ईनाक्षी महाजन	१२	३	४१
(५९)	कांगड़ा में गद्‌दी जीवन	युगल किशोर डोगरा	१२	३,४	४०
(६०)	पौंग बांध में जलमग्न हुई सांस्कृतिक निधियां	डॉ० वेद प्रकाश 'अग्नि'	१२	३,४	५२
(६१)	सिरमौर में विवाह संस्कार	डॉ० खुशी राम गौत्तम	१३	१	१५
(६२)	मण्डियाली में प्रकाशित पद्य साहित्य	डॉ० नीलमणि उपाध्याय	१३	१	२४

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(६३)	हिम संस्कृति	श्याम लाल	१३	१	३०
(६४)	कांगड़ा घाटी से मणिमहेश यात्रा	रत्न लाल चौधरी	१३	१	८४
(६५)	लोक साहित्य के अंग प्रत्यंग	केशव शर्मा	१३	२	१
(६६)	निरमण्ड क्षेत्र में प्रचलित वाद्य यन्त्रों के प्रकार	सुरजीत सिंह	१३	३	९
(६७)	कांगड़ी लोक विश्वास	रमेश चन्द ''मस्ताना''	१३	३	३३
(६८)	बिलासपुर के चन्देल राजवंश की कला व साहित्य को देन	श्याम लाल गुप्ता	१३	३	६९
(६९)	चम्बा की बसोआ परंपरा	प्रेम शर्मा	१३	३	८८
(७०)	जमटा क्षेत्र में विवाह प्रथा	बाबू राम	१३	४	६८
(७१)	हिमाचल प्रदेश के जन समुदाय	बाबू राम	१३	४	९४
(७२)	पहाड़ी बाबा कांशी राम द्वारा रचित साहित्य	रत्न चन्द शर्मा	—	—	—
(७३)	हिमाचल की लोक संस्कृति एवं लोक जीवन	डॉ० शमी शर्मा	१५	४	३५
(७४)	कुल्लुवी भित्ति चित्रांकन में संस्कृति तत्व	दयानन्द सरस्वती	१६	१,२	४९

बौद्ध धर्म/संस्कृति

(१)	लाहुल स्पिति और किन्नौर-बौद्ध धर्म और कला - एक सर्वेक्षण	कुमारी त्रिभुवन रेखा राठौड़	२	३	२९
(२)	लाहौल-स्पिति तथा किन्नौर में बौद्ध विहारों के रूप और उनका सांस्कृतिक योगदान	के. अंगरूप लाहुली	२	२	—
(३)	बौद्ध तीर्थ रिवालसर	तोबदन	४	३	७०
(४)	हिमाचल में शाक्तधर्म का विकास	डॉ० लालता प्रसाद पांडेय	६	३	३३
(५)	हिमाचल की नदियां उनका सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व	प्रो० चन्द्रवर्कर	९	२	२६
(६)	लाहुल स्पीति में बौद्ध धर्म	बलराम	१०	३	१९
(७)	सुथरा सम्प्रदाय	पृथुराम शास्त्री	११	४	१७
(८)	धरती माता की कनिष्ठा पुत्री का कथात्मक गीत	के. अंगरूप लाहुली	१३	४	५७

(९)	लाहुल व स्पिति के लोक जीवन की एक झलक	चन्द्रकान्त	१४	१	६६
(१०)	गुरु घण्टापाद के बिहार के जीर्णोद्धार का कथा गीत	के. अंगरूप लाहुली	१४	१	३२
(११)	किन्नौरी की सांस्कृतिक शब्दावली	प्रो० डी.डी. शर्मा	१४	१	१९
(१२)	आचार्य दीपक्ङ.र श्रीज्ञान और तिब्बत का लामा धर्म	पी०एन० सेमवाल	१२	१	५५
(१३)	हिमाचल प्रदेश में नाथ सम्प्रदाय	संसर चन्द ''प्रभाकर''	१२	१	८६
(१४)	लाहुल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि	डी०डी० शर्मा	१२	३,४	१७
(१५)	किन्नर कैलाश के आंचल में स्थित बौद्ध गोम्पा	छोरिंग डुगे ठाकुर	१२	३,४	३१
(१६)	लाहुली जनजाति को बौद्ध धर्म की देन	के० अंगरूप लाहुली	१४	२	११
(१७)	किन्नौर क्षेत्र में प्रचलित धार्मिक गीत	डॉ० सुरजीत सिंह पटियाल	१४	२	५८
(१८)	कानम के मठ	अशोक हंस	१४	२	८६
(१९)	किन्नर संस्कृति में बधुत्व वाची शब्दावली	प्रो० डी०डी० शर्मा	१४	३	५१
(२०)	कांगड़ा क्षेत्र की ऐतिहासिक बुद्ध प्रतिमाएं	सुरिन्द्र मोहन सेठी	—	—	—

लोकनाट्य

(१)	हिमाचल का लोक नाट्य - बांठड़ा	वासुदेव शर्मा	२	२	६५
(२)	लोक नाट्य - परम्परा और सम्भावना	कैलाश आहलूवालिया	३	१	१२
(३)	कांगड़ा के लोक नाट्य	अशोक शर्मा	३	१	३०
(४)	कांगड़ा लोक नाट्य परम्परा स्वरूप और संभावनाएं	शम्मी शर्मा	६	३	२१
(५)	लोक नाट्य भगत	ओंकारलाल भारद्वाज चंगर	६	४	४८
(६)	कांगड़ा में प्रचलित श्रीकृष्ण का झेड़ा	श्री योगेन्द्र सिंह तूर	९	१	३२
(७)	हिमाचल-लोक नाट्य स्वरूप एवं परम्परा	शशिकान्त शास्त्री	९	३	३२
(८)	भरमौर का बांठा	अमर सिंह रणपतिया	११	१	३८
(९)	लोक धर्मी नाट्य परम्परा : महत्व व मूल्यांकन	अमिता शर्मा	१२	१	७२
(१०)	राजा रसालू का झेड़ा	योगेन्द्र सिंह तूर	१२	२	३६
(११)	गद्दी नृत्य एवं लोक नाट्य	अमर सिंह रणपतिया	१३	४	६२

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१२)	लोककर्मी गाथा हरणात्र	प्रेम शर्मा	१४	१	१
(१३)	लोक नाट्य - बांठडा	मुरारी शर्मा	१४	४	१
(१४)	लोक नाट्य भगत में भाषिक संवाद	डॉ० गौतम शर्मा व्यथित	१४	४	२४
(१५)	बुढ़डा	डॉ० विद्याचन्द ठाकुर	१४	४	३७
(१६)	लोक नाट्य - भगत	संसार चन्द प्रभाकर	१४	४	४७
(१७)	लोक नाट्य - बौरा एवं नचार उपजाति - एक सर्वेक्षण	ओम प्रकाश शान्त	१४	४	६५
(१८)	चन्दरौली	डॉ० शमी शर्मा	१४	४	७८
(१९)	करियाला	एम०आर० ठाकुर	१४	४	८५
(२०)	हरणात्र, झांकी और बांढा	अमर सिंह रणपतिया	१४	४	९८
(२१)	हिमाचल का लोक नाट्य करियाला	ओम चन्द हाण्डा	—	—	—
(२२)	लोक धर्मी नाट्य परम्परा - वांठड़ा	ज्वाला प्रकाश 'चेतन'	१५	४	७
(२३)	भाणूं का भेड़ा	प्रकाश चन्द्र धीमान	१५	४	४६
(२४)	हिमाचली लोक नाट्यों का शिल्प	डॉ० ओम प्रकाश सारस्वत	१५	४	५२
(२५)	करियाला कुछ प्रश्न	डॉ० कैलाश आहलूवालिया	१५	४	६१
(२६)	भेड़ा	सरोज ठाकुर	१५	४	७६

साहित्यकार/कलाकार

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१)	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - जीवन और व्यक्तित्व	डॉ० पीयूष गुलेरी	१	२	९
(२)	सिरमौर का एक लोक नाटक - होकू मियां	अमर सिंह चौहान	१	३	५८
(३)	हिमाचल के अज्ञात कवि बृजराज का कर्तृत्व - परिचय	श्री कान्त पीयूष गुलेरी	२	१	८६
(४)	सांस्कृतिक समन्वय के उन्नायक बहुभाषाविद् - खुसरो	विद्या शर्मा	२	१	९५
(५)	पहाड़ी गांधी बाबा	कांशीराम	२	४	७०
(६)	जनरल जोरावर सिंह कहलूरिया	शक्ति सिंह चन्देल	३	१	१२

(७)	क्रान्तिकारी यशपाल	डॉ० अभिमन्यु	४	१	३५
(८)	यशपाल - कुछ पुरानी यादें	देसाराज डोगरा	४	१	४०
(९)	क्रान्ति और कलम के धनी - यशपाल	प्रेम पखरोलवी	४	१	४६
(१०)	यशपाल कहानीकार के रूप में	डॉ० कृष्णा रैणा	४	१	५२
(११)	बिलासपुर का राजकवि - सुख देव सामुद्रिक	डॉ० श्रीकान्त प्रत्यूष गुलेरी	४	२	६७
(१२)	महाराजा संसार चन्द	प्रेम पखरोलवी	४	३	७८
(१३)	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीवन और व्यक्तित्व (२)	डॉ० पीयूष गुलेरी	५	२	५९
(१४)	सती चैंरवी	प्यारे लाल जोगटा	५	३	१४
(१५)	यशपाल के उपन्यास ''मनुष्य के रूप'' की सीमा	डॉ० कृष्णा रैणा	५	४	७४
(१६)	यशपाल की रचना दिव्या'	कु० अमरजीत कौर	५	४	८०
(१७)	महान् क्रान्तिकारी इन्द्रपाल	केहर सिंह भूम्पलवी	५	४	८९
(१८)	स्वर्गीय विजय कुमार पण्डित	प्रेम कुमार शर्मा	६	१	९५
(१९)	सती नरमी	कुमारी जया	६	३	४३
(२०)	अमृता शेरगिल व्यक्तित्व एवं कृतित्व	किशोरी लाल वैद्य	६	४	१
(२१)	रावण व्यक्तित्व और कृतित्व	चन्द्रशेखर बेबस	७	१	३८
(२२)	गांव रिवाड़ी (कुल्लू) के सन्त स्व० राम लाल शर्मा	ठाकुर दत्त शर्मा 'आलोक'	७	२	२१
(२३)	बज्जालग्गम के अनुवादक गुलेरी जी	डॉ० मनोहर लाल	८	२	१
(२४)	पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम जीवन एवं साहित्य	डॉ० गौतम शर्मा व्यथित	८	२	२१
(२५)	गुरु रांग-रिग रेपा : संक्षिप्त जीवनी	तोबदन	८	२	३०
(२६)	बाबा बाजी साहिब पंजबड़ वाले - एक परिचय	डॉ० प्रत्यूष गुलेरी	८	२	६०
(२७)	श्रीलाल चन्द प्रार्थी - एक बहुपक्षीय व्यक्तित्व	डॉ० पद्मचन्द काश्यप	९	४	१
(२८)	प्रार्थी जी की कुछ यादें	बिहारी लाल 'बिहार'	९	४	४
(२९)	राज ऋषि लाल चन्द प्रार्थी	चन्द्रमणि वशिष्ठ	९	४	१३
(३०)	स्वर्गीय लाल चन्द प्रार्थी कुछ जीवन झांकियां	चन्द्र शेखर बेबस	९	४	१५
(३१)	लाल चन्द प्रार्थी : एक राजनीतिज्ञ एक कलाकार	डॉ० हरिराम जसटा	९	४	२०

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(३२)	स्वर्गीय श्री लाल चन्द प्रार्थी चांद कुल्लवी एक संस्मरण	सत्य प्रकाश ठाकुर	९	४	२४
(३३)	चांद - जो कभी न होगा मांद	मनोहर सागर पालमपुरी	९	४	२७
(३४)	लालचन्द प्रार्थी चांद कुल्लवी	खेमराज गुप्त 'सागर	९	४	३१
(३५)	लालचन्द दुखा सुखा रा माण्हू	प्रो० चन्द्रवर्कर	९	४	३५
(३६)	प्रार्थी जी साहित्यकार और कलाकार के रूप में	मौलू राम ठाकुर	९	४	४०
(३७)	श्रीलाल चन्द प्रार्थी चांद कुल्लवी	विष्णु शर्मा	९	४	५०
(३८)	श्री प्रार्थी सच्चे अर्थों में पहाड़ी थे	डॉ० प्रत्यूष गुलेरी	९	४	५४
(३९)	तुम ही सो गए दास्तां कहते-कहते	प्रेम पखरोलवी	९	४	५६
(४०)	श्री लाल चन्द प्रार्थी का एक संस्मरण	चन्द्र कान्त	९	४	६४
(४१)	कितनी जल्दी मुलाकातें यादें बन गई	काहन सिंह जमाल	९	४	६८
(४२)	एक संक्षिप्त परिचय चांद कुल्लवी और उनकी शायरी	धर्मपाल ''आकिल''	९	४	७३
(४३)	श्रद्धांजली	रमाचरण पराशर	९	४	७६
(४४)	पीले पत्ते और पतझड़	सुदर्शन वशिष्ठ	९	४	७८
(४५)	पैदा कहां है ऐसे ''चांद' कुल्लवी से एक अन्तरंग	प्रेम कुमार नजर	९	४	८३
(४६)	पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की बातचीत कृतियों में नारी	डॉ० मनोहर लाल	१०	२	१
(४७)	एक पर्वतीय व्यक्तित्व एक सर्वेक्षण	भोज प्रकाश शर्मा	१०	२	१३
(४८)	जिला सिरमौर के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध श्री हंसराज राणा	बालक राम जसवाल	१०	४	५९
(४९)	क्रान्तिकारी साहित्यकार यशपाल	शशिकान्त जोशी	११	३	८६
(५०)	हिमाचल के आधुनिक ब्रजकवि	डॉ० मनोहर लाल	१२	१	१०
(५१)	अमर वीर चरनू	पन्नालाल जोगटा	१२	२	३५
(५२)	कुल्लू के राजा टेढ़ी सिंह एवं उसके बंशज	डॉ० ब्रह्म दत्त शर्मा	१३	२	६१
(५३)	किस्सा रानी किरणमयी	जगदीश चन्देल	१२	३,४	१०७
(५४)	स्मृतियों के साये में डॉ० एम.एस. रंधावा	किशोरी लाल वैद्य	१३	४	३६

(५५)	राज कंवल	शबाब ललित	१३	४	५४
(५६)	हिमाचल प्रदेश के शिल्पकार - श्री मेनका राम	विनोद हिमाचली	१४	२	४६
(५७)	राजा रघुनाथ सिंह रईस गुलेर	डॉ० ब्रह्म दत्त शर्मा	१४	२	७१
(५८)	स्व० लाल चन्द प्रार्थी के व्यक्तित्व तथा चिन्तन के कुछ अछूते प्रसंग	बिहारी लाल ''बहार''	.		-
(५९)	हि०प्र० की एक महान प्रतिभा	डॉ० दिनेश चन्द्र अग्रवाल	८	३	१
(६०)	स. सोभा सिंह की कला एक जीवंत धरोहर	किशोरी लाल वैद्य	१५	४	२८
(६१)	वत्स्य जी से अंतिम भेंट	डॉ० प्रत्यूष गुलेरी	१६	१.२	६७

लोकगाथा

(१)	पुराण गाथा के प्रतीक		१	३	७२
(२)	बिलासपुर, हमीरपुर क्षेत्र में प्रचलित लोक गाथाएं : एक अध्ययन	बी. आर. भारद्वाज	२	१	८
(३)	कर्मवीर हकू रावत	मदन मोहन कमल	४	१	१३
(४)	महासूई लोकगाथा माठी अट अंकू	रामानन्द शास्त्री	४	३	३३
(५)	मंढौड़ देवता	बद्रीसिंह भाटिया	४	३	६३
(६)	वोइन्द्रा देवता की देव गाथा	योगेश गम्भीर	४	३	९५
(७)	महासुई लोकगाथा भरथरी	रामानन्द शास्त्री	५	१	४५
(८)	ताना म्हास्ते महासु में सती प्रथा की एक गाथा	सलीम	५	२	३४
(९)	लारा लाहुल के देवताओं की कथा	तोबदन	५	३	५२
(१०)	हिमाचल की लोक कथाएं परिचय एवं संरक्षण	शेष अवस्थी	५	४	४०
(११)	हिमाचली लोक गाथाएं : संस्कृति और इतिहास	अरूण भारती	७	३	४०
(१२)	देवता रुदद्ध की देव गाथा	पन्नालाल जोगटा	७	३	५७
(१३)	ऐतिहासिक लोक कथा सतवन्ती	प्रेमकुमार शर्मा	८	१	५५
(१४)	कांगड़ा की चमत्कारिक धर्मकथा पंचभीष्म	रजनी बाला धींगड़ा	९	२	१२
(१५)	लोककथा के दर्पण में खलिहान	ब्रह्मदत्त शर्मा	९	२	८
(१६)	हिमाचली लोक गाथाएं एक सिंहावलोकन	डॉ० हरिराम जसटा	१०	२	५५

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१७)	सोहिनी के ठाकुर श्यामा की वीरगाथा	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	१०	४	७७
(१८)	भागचन्द तोता पुण्यकथा	पन्नालाल जोगटा	१०	४	६७
(१९)	लोक गाथाओं में व्याप्त ऐतिहासिक तत्व	डॉ० श्रीराम शर्मा	११	१	१
(२०)	लोक गाथाओं में गूमाछगी	स्वर्णकान्ता शर्मा	११	१	६८
(२१)	कुमारसैन रियासत का भारथ	अमृत कुमार शर्मा	१२	२	९७
(२२)	मण्डियाली लोक गाथाओं में श्रवण कुमार	डॉ० हेमप्रभा शर्मा	१६	१.२	४५
	शोध				
(१)	हिमाचली वास्तुकला परम्परा और शैली	आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा	१	१	१
(२)	ग्राम्य धर्म रंगमंच के प्रसंग में	हरि चन्द पराशर	१	—	—
(३)	हिमाचल ललित कलाओं के पारखी	डॉ० नीलमणि उपाध्याय	१	२	५२
(४)	हिमाचली वास्तुकला की वाङ्मय सूची	कु० भुवनेश्वरी राठौर	१	२	८५
(५)	उन्नीसवीं शती की रंगकला का एक पृष्ठ : कसवाई मण्डवे	हरिचन्द पराशर	१	३	४१
(६)	जसमा ओडन-रंगमंच पर	—	१	३	७१
(७)	पहाड़ी चित्रकला में चम्बा कलम	हरिश्चन्द्र राय	२	१	६३
(८)	बाघ भित्ति चित्र और कांगड़ा कलम के संदर्भ में	दलजीत खरे	३	२	१६
(९)	हस्तशिल्प और लोक कलाएं	शाम सुन्दर जैतिक	३	२	४२
(१०)	भावनाओं का चितेरा, उभरता चेहरा - मुन्शी राम	डॉ० सुशील कुमार फुल्ल	३	२	५९
(११)	सांस्कृतिक स्मारक	देवेन्द्र	४	४	२१
(१२)	कुल्लू में मन्दिर व मूर्तिकला	पुष्पा बिन्द्रा	४	४	२६
(१३)	कुल्लू की चित्रकला	हरचरण सिंह	४	४	१०७
(१४)	हिमाचल की ललित कलाएं-संगीत शिक्षा की समस्याएं	हरिश्चन्द्र राय	५	१	७१

(१५)	पहाड़ी चित्रकला तथा प्राचीन मन्दिरों का शहर-सुजानपुरा टीहरा	डॉ० बंशीराम शर्मा	५	१	८३
(१६)	प्राचीन स्मारकों का रक्षण हिमाचल प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में	अमरनाथ खन्ना	५	२	१६
(१७)	कला पारखी एवं विजेता-मेरु वर्मा	अमरसिंह रणपतिया	५	२	२६
(१८)	अभिनय-रंगमंच का एक महत्वपूर्ण उपादान	अशोक हंस	५	३	४०
(१९)	राष्टीय नव जागरण में लोक मंच की भूमिका संभावनाएं एवं परिसीमाएं	अशोक शर्मा	५	४	४६
(२०)	ताबो मठ-एक और अजन्ता	डॉ० विश्व चन्द्र	६	१	१
(२१)	हिमाचल की लघु अजन्ता - नाको मठ	छेरिंग दुगे ठाकुर	६	१	३०
(२२)	अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष-चित्रकला प्रतियोगिता तथा बाल लेखक गोष्ठी	विद्या शर्मा	६	१	७०
(२३)	हिमालय का चितेरा-रोरिक	देवदत्त कालिया	७	२	३९
(२४)	हिन्दी के द्वितीय प्रेमाख्या दाउद रचित चन्दायन के स्तोत्र	डॉ० सुशील कुमार फुल्ल	७	२	७३
(२५)	हिमाचल का लोक कला वैशिष्ट्य	किशोरी लाल वैद्य	७	३	१
(२६)	जापान की कला में सरस्वती	कु० शशि बाला	७	३	४९
(२७)	पहाड़ी संस्कृति तथा कला के स्रोत : पनघट शिलाएं	रमेश जसरोटिया	७	४	९०
(२८)	पहाड़ी चश्मों की सजावट : पनघट के पत्थर	अशोक जेरथ	८	१	४३
(२९)	कांगड़ा घाटी में एक रंगमंचीय साया : नोराह रिचर्ड्स	श्री किशोरी लाल वैद्य	८	२	११
(३०)	पहाड़ी शैली के भित्ति चित्र कनखल में	डॉ० दिनेश चन्द्र अग्रवाल	८	२	३३
(३१)	देवी हाटेश्वरी की भेंट	पन्ना लाल जोगटा	९	२	६७
(३२)	बसोहली कलम में लोककला का योगदान	कुमारी मधु जैन	१०	२	७३
(३३)	पहाड़ी लघु चित्रकला विषय वस्तु और रूपंकन	डॉ० राम स्वरूप	१०	३	१
(३४)	हिमाचल प्रदेश के कलात्मक भित्ती चित्र	रामस्वरूप	१०	४	४६
(३५)	धौलाधार का चितेरा-सरदार सोभा सिंह	चरणजीत सिंह	११	१	१५
(३६)	भित्ति चित्र परम्परा	डॉ० कोमल कुमार कोहली	११	३	२०
(३७)	डॉ० परमार की कला अभिरुचि : कुछ संस्मरण	किशोरी लाल वैद्य	११	३	७४
(३८)	पहाड़ी शैली के रागमाला चित्र	इनाक्षी महाजन	११	३	८२
(३९)	चच्योट क्षेत्रीय गृह निर्माण कला व प्रदेश प्रथा	मोती लाल घई	११	४	४०

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(४०)	छतराड़ी के भित्ति चित्र	अमर सिंह रणपतिया	११	३	२७
(४१)	चित्र कला केन्द्र गुलेर : जहां कांगड़ा कलम जन्मी	डॉ० श्री कान्त प्रत्यूष गुलेरी	—	—	—
(४२)	हिमाचल के हस्तलिखित ग्रन्थों में चित्रांकन	डॉ० राम स्वरूप 'पतलव'	१२	१	१
(४३)	प्राचीन हिन्दु मन्दिर : निर्माण विधान	सुरिन्द्र मोहन सेठी	१२	१	१७
(४४)	हिमाचल प्रदेश का शिल्प	खेम राज गुप्त 'सागर'	१२	३,४	१११
(४५)	चम्बा चित्रकारी : एक पहचान	नरेन्द्र अरुण	१२	३,४	११६
(४६)	नूरपुर-इमराल के भित्ति चित्र	राम स्वरूप 'पतलव'	१२	३,४	१२२
(४७)	ओबड़ी शिवद्वाला-चम्बा के भित्ति चित्र	विजय कुमार शर्मा	१२	३,४	१२८
(४८)	कांगड़ा चित्र शैली में रंग विन्यास	हरिश्चन्द्र राय	१३	३	१
(४९)	चम्बा रूमाल	हरिश्चन्द्र राय	१४	१	३७
(५०)	कांगड़ा कला और ब्रज संस्कृति	चक्रधारी शास्त्री	१४	१	५८
(५१)	हिमाचल की साठोत्तरी हिन्दी कहानी	डॉ० प्रत्यूष गुलेरी	१५	४	३१
(५२)	कविता के दायरे में स्व० लाल चन्द प्रार्थी	डॉ० गौतम व्यथित शर्मा	१६	१,२	१
(५३)	हिमाचल प्रदेश में साहित्यिक लेखन: नई दिशायें, समस्याएं तथा संभावनाए	डॉ० सुशील कुमार	१६	१,२	२१
(५४)	हिमाचल प्रदेश में संस्कृत और संस्कृत पत्रकारिता	पृथुराम शास्त्री	१६	१,२	५१

इतिहास

(१)	हिमाचल-जन-जीवन पर गोरखा आक्रमण का प्रभाव	शक्ति सिंह चन्देल	२	१	१
(२)	पझौता आन्दोलन	वैद्य सूरतसिंह 'आयुर्वेदाचार्य'	२	२	१
(३)	बिलासपुर के राजा भीमचन्द के गुरु गोविन्दसिंह से सम्बन्ध : एक विश्लेषण	डॉ० एम.एस. आहलूवालिया	२	४	७
(४)	हिमाचल में आयुर्वेद का अतीत	सुरेन्द्र कुमार शर्मा	३	२	६२

(५)	सिरमौरी ताल एक ऐतिहासिक स्थल	पी० के० शरण	४	१	१९
(६)	हिमाचल का पंचल क्षेत्र	अश्विनी गर्ग	४	१	१९
(७)	हिमाचल का प्राचीन राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास	—	४	२	१
(८)	हिमाचल तथा सामाजिक सुधार लहर	डॉ० एम. एस. आहलूवालिया	४	२	२२
(९)	तिब्बत और बुशहर की चिरमैत्री	पी० एन० सैमवाल	४	२	३७
(१०)	गदियार क्षेत्र का इतिहास	डॉ० मोहनलाल गुप्त	४	२	४४
(११)	प्राचीन जनपद कुलिन्द और वर्तमान हिमाचल प्रदेश उसका कुछ क्षेत्र	प्रो० चतुरसिंह	४	३	२४
(१२)	कुल्लू का भौगोलिक व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और सामान्य धार्मिक विश्वास	व्योमेश चन्द्र	४	४	१
(१३)	संवत् १६०० के बाद का कुल्लू का इतिहास हिन्दी रूपान्तर	चन्द्रशेखर बेबस	४	४	१
(१४)	शिमला क्षेत्र के देसी राज्यों में विरोध प्रदर्शन	पी०एन० सेमवाल	६	१	३७
(१५)	चिन्तामणि तीर्थ मणिकरण	आशा गोयल	५	१	६८
(१६)	हिमाचल प्रदेश का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास (गुप्तकाल से लेकर बाहरवीं शताब्दी तक)	डॉ० लालता प्रसाद पाण्डेय	५	३	१
(१७)	रामसिंह पठानिया की क्रीड़ा स्थली शाहपुरी कण्डी	गिरिधर योगेश्वर	५	४	४३
(१८)	पर्वतीय राज्यों में सत्याग्रह का स्वरूप तथा इतिहास	रूपकुमार शर्मा	६	१	६६
(१९)	प्राचीन नगर पांगणा	सुखराम हिंगोराणी	६	२	९७
(२०)	कमलाह तथा अनन्तपुर गढ़	डॉ० कांशीराम आत्रेय	६	३	७८
(२१)	सूरमा होकू रावत का विस्मृत जनआन्दोलन	रूपकुमार शर्मा	७	१	४६
(२२)	डाडासीबा का ऐतिहासिक महत्व	स्वर्णकान्ता शर्मा	७	१	६५
(२३)	हिमाचल प्रदेश की प्राचीन रियासत गुलेर के संस्थापक राजा हरिश्चन्द	श्रीकान्त प्रत्यूष गुलेरी	७	२	६७
(२४)	हिमाचल के किले रोमांच और इतिहास	प्रो० चन्द्रवर्कर	७	२	६९
(२५)	हिमाचल के प्राचीन कबीले	डॉ० तेजराम शर्मा	८	४	१
(२६)	हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले का कमलाहगढ़	डॉ० कांशीराम आत्रेय	८	४	२४

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(२७)	रियासत कुमारसैन प्रथम राजगद्दी	अमृतकुमार शर्मा	८	१	३४
(२८)	प्राचीन जातियों का शाखास्थल हिमाचल प्रदेश	केशवचन्द्र	९	२	५५
(२९)	पुरातन पहाड़ी रियासतों के आपसी सम्बन्ध और सीमा विवाद	अमरसिंह रणपतिया	९	२	३२
(३०)	हिमाचल प्रदेश की जातियों का ऐतिहासिक परिचय	केशवचन्द्र	९	३	२५
(३१)	सिरमौर के विस्मृत आन्दोलन–II	प्रो० रूपकुमार शर्मा	९	३	४२
(३२)	हिमाचल प्रदेश में जातियों का आधुनिक स्वरूप	श्री केशवचन्द्र	१०	३	३५
(३३)	गुरु गोविन्दसिंह तथा राजा भीमचन्द के संघर्ष का साक्षी बिलासपुर	देवेन्द्र कुमार कश्यप	११	४	१०
(३४)	हिमाचल प्रदेश की प्राचीन रियासत नूरपुर	कोमल कुमार कोहली	१२	३४	३३
(३५)	भंगाल रियासत इतिहास के वातायन से	देवेन्द्र कश्यप	१२	३४	३७
(३६)	मण्डी जनपद सिक्कों की जुबानी	डॉ० कमल के० प्यासा	१३	४	४३
(३७)	हिमाचली संस्कृति और वेद व्यास	अमरदेव आंगरिस	१३	४	४९
(३८)	हिमाचल प्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ० हरिराम जसटा	१४	२	३३
(३९)	गुरु गोविन्दसिंह तथा राजा भीमचन्द के संघर्ष का साक्षी बिलासपुर	देवेन्द्र कुमार कश्यप	११	४	—
(४०)	स्वतन्त्रता संग्राम में हिमाचल प्रदेश का योगदान	डॉ० पद्मचन्द कश्यप	१४	२	५१
(४१)	स्वतन्त्रता संग्राम में हिमाचली साहित्यकारों का योगदान	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	१६	१,२	१३

व्रत/त्यौहार

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१)	बरलाज	केशव आनन्द	१	३	३५
(२)	गद्दी जनजाति के तीज त्यौहार	हरिप्रसाद सुमन	२	३	४९
(३)	लाहुल के त्यौहार तथा मेले	बलराम	२	४	२८
(४)	गद्यार क्षेत्र का त्यौहार-बसो	अमर सिंह रणपतिया	३	२	५३
(५)	मेले और त्यौहार	सी.आर.बी. ललित	३	३	१७
(६)	फागली (मेला)	नरेन्द्र शर्मा	३	३	६५

(७)	पशु बलि यज्ञ-त्यौहार-परम्पराएं	श्री तुलसी रमण	४	२	५९
(८)	कुल्लुई उत्सव त्यौहार और पर्व	बलदेव कुमार	४	४	४८
(९)	गदेरन का जात्रा-उत्सव	अमर सिंह रणपतिया	६	१	१८
(१०)	निरमण्ड-जहां नरमेध यज्ञ होता था	सुदर्शन वशिष्ट	६	१	४३
(११)	कांगड़ा की रली-पूजन-प्रथा	वेद भूषण महाजन	६	२	२८
(१२)	कांगड़ा घाटी के मेले	रत्न लाल चौधरी 'प्रभाकर'	६	२	९०
(१३)	कुल्लू का उत्सव दरपौण काहिका	सुदर्शन वशिष्ठ	६	४	९३
(१४)	सांस्कृतिक पर्व - लोहड़ी	सुदर्शन डोगरा	७	१	२५
(१५)	हिमाचल प्रदेश में शिवरात्री पर्व	वृजमोहन शिवलाल	७	१	३१
(१६)	काहिका-जिसमें नौड़ मरता है	लीलाधर पराशर	७	१	६३
(१७)	चैत्र मास में रली पूजन	सुदर्शन डोगरा	८	१	२६
(१८)	अनोखे मोण मेले का परम्परागत इतिहास तथा महत्व	रूपकुमार शर्मा	८	१	५९
(१९)	कांगड़ा के मेले और उनका महत्व	हरिकृष्ण मुरारी	८	२	४१
(२०)	फागली : देव गाथा और भविष्यवाणियों का पर्व	सुदर्शन वशिष्ट	८	३	४५
(२१)	विशु मेला	पूर्ण सिंह ठाकुर	८	४	४१
(२२)	दशुठण	बालक राम जसवाल	९	१	५०
(२३)	ऊपरी महासु क्षेत्र में विशु का त्यौहार	पन्ना लाल डोगरा	९	१	६८
(२४)	सिरमौर का प्रसिद्ध माघी त्यौहार	बालक राम जसवाल	९	२	७७
(२५)	कुल्लू के व्रत, पर्व व त्यौहार	चन्द्र शेखर बेबस	९	२	८५
(२६)	सिरमौर का प्रसिद्ध माला (माणा) त्यौहार	एल.आर. शर्मा	१०	२	७०
(२७)	पहाड़ी क्षेत्र के दो विशिष्ट त्यौहार	रामेश्वर दत्त शर्मा	१०	४	६२
(२८)	स्थानीय मेला : जात घणाग्र घाट	शंकर लाल शर्मा	१०	३	५४
(२९)	ऐसे मनाई जाती है चम्बा में लोहड़ी	रमेश जसरोटिया	११	१	११
(३०)	मेला बाड़ी धार	शंकर लाल शर्मा	११	१	२४
(३१)	आउटर सराज का निरसू	डॉ० बलदेव ठाकुर	११	१	२८

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(३२)	महासुवी लोक-काव्य में पुष्प त्यौहार की महिमा	कृष्ण चन्द्र काएथ	१२	२	४१
(३३)	सिरमौर के उत्सव-त्यौहार	एस.आर. पुंडीर	१२	२	४९
(३४)	बसोआ : एक विवेचन	नरेन्द्र अरुण	१२	२	६५
(३५)	बरसात के तीन त्यौहार	सुदर्शन डोगरा	१२	२	७१
(३६)	अर्की जनपद के मेले	शंकर लाल शर्मा	१२	३,४	३४
(३७)	अर्की जनपद का लोकप्रिय मेला	शंकर लाल शर्मा	१३	१	७०
(३८)	सांस्कृतिक पर्व गुग्गा एवं सुबाथु जनपद	नरेन्द्र अरुण	१३	२	२४
(३९)	भूण्डा यज्ञ का ऐतिहासिक महत्व	कृष्ण चन्द्र काएथ	१३	२	६८
(४०)	धागों का त्यौहार-रक्षा बन्धन	सुदर्शन डोगरा	१३	२	७८
(४१)	गोरखा सम्प्रदाय में दशहरा उत्सव	मगन पथिक	१३	३	२३
(४२)	तत्ता पानी क्षेत्र में गौओं का प्रसिद्ध त्यौहार-माल	दुनीचन्द शर्मा	१३	३	५१
(४३)	पट्टन घाटी (लाहुल) के कुछ मुख्य मेले त्यौहार	बलराम	१३	४	२१
(४४)	भुण्डा यज्ञ में जन सहयोग	लोक नाथ मिश्रा	१४	२	४२
(४५)	कुल्लू जनपद में विरशू	डॉ० सूरत ठाकुर	१४	२	८१
(४६)	कुल्लू में नोड़ जाति का प्रादुर्भाव तथा काहिका	चुनीलाल	१४	४	५६
(४७)	साच जातर व जुकारु त्यौहार	रमेश जसरोटिया	१५	४	८९
(४८)	बहुला	तारा शर्मा	१६	१,२	७२
	समीक्षा				
(१)	कालिदास के ग्रन्थों में हिमालय वर्णन	कु० सरोज शर्मा	१	२	७१
(२)	भृतहरि का शब्द शास्त्रीय ग्रन्थ-वाक्यपदीय	डॉ० शांतिभिक्षु शास्त्री	१	४	१७
(३)	शैली विज्ञान और पहाड़ी काव्य भाषा	आशा गोयल	१	४	६६
(४)	कांगड़ी कविता में मध्यवर्गीय जनजीवन	सुखदेव शर्मा	२	३	५३

(५)	हिमाचल की आधुनिक हिन्दी कविता	कु० सरोज शर्मा	२	४	६४
(६)	पर्वतीय क्षेत्र और महाभारत काल में बहुपति प्रथा	सत्यपाल शर्मा	३	२	३४
(७)	कहलूरी कविता - एक अध्ययन	सरोज शर्मा	३	३	७१
(८)	यशपाल - स्मृति कैसे स्थायी हो	डॉ० प्रभाकर माचवे	३	४	१०२
(९)	यशपाल की कहानियों में जीवन शैली की कुछ झलकियां	देवकला	३	४	१०४
(१०)	सोमसी के बारह अंकों में क्षेत्रीय अध्ययन	सरोज शर्मा	४	३	१०६
(११)	कृषक कलाकार - बी.आर. भारद्वाज	किशोरीलाल वैद्य	६	२	६६
(१२)	बाबा गणेशसिंह वेदी कृत चमत्कार चिन्तामणि	डॉ० मनोहर लाल	६	१	८१
(१३)	कांगड़ा के कवि कांशीराम की राम गीता	श्रीकान्त प्रत्यूष गुलेरी	६	४	१६
(१४)	फूल और आंसू (पुस्तक समीक्षा)	गायत्री शर्मा	७	३	८६
(१५)	यशपाल के उपन्यास पार्टी कामरेड की नारी गीता	केहरसिंह ''मित्र'' भूम्पलवी	७	२	५१
(१६)	कांगड़ी कविता - एक सर्वेक्षण - एक दृष्टि	डॉ० गौतम शर्मा 'व्यथित'	७	२	८०
(१७)	हिमाचल का हिन्दी साहित्य का इतिहास	अश्विनी कुमार अवस्थी	७	२	९५
(१८)	पहाड़ी साहित्य समीक्षा पहाड़ी और उनकी कविता	तुलसी रमण	७	४	४३
(१९)	बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भिक साहित्योत्थान और चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	डॉ० पीयूष गुलेरी	७	४	७८
(२०)	जेन आसटन के नारी पात्र	डॉ० आत्माराम	८	१	६७
(२१)	कामायनी का आनन्दवाद (सार)	डॉ० नीलमणि उपाध्याय	८	१	७०
(२२)	लाईपजिंग (शोध प्रबन्ध सार)	शान्तिभिक्षु शास्त्री	८	२	८८
(२३)	महाकाव्य रघुनाथ (शोध प्रबन्ध सार)	डॉ० गंगादत्त शास्त्री	८	२	९३
(२४)	मध्यकालीन रोमांस	डॉ० मैथिलीप्रसाद	८	३	७५
(२५)	बदलते सामाजिक मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक	—	८	३	८२
(२६)	काव्य कानन में धौलाधार	डॉ० मनोहरलाल	८	४	९
(२७)	कादम्बरी और कुलूत देश की राजकुमारी पत्रलेखा	डॉ० गिरिधर योगेश्वर	८	४	५०
(२८)	गुरु गोरखनाथ की विचारधारा का हिन्दी-मध्यकालीन साहित्य पर प्रभाव	डॉ० वेदप्रकाश 'अग्नि'	८	४	५९
(२९)	चन्द्र शेखर वाजपेयी का काव्य	डॉ० मनोहरलाल	८	४	८३

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(३०)	रीतिकालीन काव्य पर कामशास्त्र का प्रभाव	डॉ० शिवकुमार शर्मा	८	४	९६
(३१)	भारतीय दर्शन में मोक्ष की परिकल्पना	डॉ० वासुदेव प्रशान्त	९	१	१५
(३२)	सूर और तुलसी की जीवन दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० शम्मी शर्मा	९	१	४०
(३३)	साहित्य में नारी सौन्दर्य	कृष्णचन्द शर्मा	९	२	१
(३४)	हिन्दी और कश्मीरी निर्गुण सन्त साहित्य	डॉ० कृष्णा रैणा	९	२	८९
(३५)	हिमाचल के क्रान्तिकारी महान देश सपूत-पण्डित इन्द्रपाल	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	९	३	१
(३६)	जोनराजकृत राजतरंगिणी: एक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अध्ययन	डॉ० राममूर्ति वासुदेव प्रशान्त	१०	२	८४
(३७)	कालिदास की कृतियों में संगीत	मनोरमा शर्मा	१०	३	७
(३८)	मध्ययुगीन जीवन्त संस्कृति	अमरदेव आंगीरस	१०	३	६९
(३९)	महाकवि अश्वघोष के काव्यों में उद्धृत आख्यानों का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० श्रीराम शर्मा	१०	३	८१
(४०)	हिमाचली कविता में मूल्यों के विघटनों का स्वर	डॉ० ओमप्रकाश सारस्वत	१०	४	१
(४१)	हिन्दी शोध	डॉ० जुगेश कौर	१०	४	५८
(४२)	गणेशसिंह वेदी के ग्रन्थ ''गुरुनानक'' सुथ्येदिय जन्मसाखी में गुरु महिमा	मीनाक्षी शर्मा	१०	४	६७
(४३)	दिनकर की काव्य चेतना	डॉ० युगल किशोर डोगरा	१०	४	७१
(४४)	रामायण में राजनैतिक विचार और संस्थाएं	डॉ० अनूप महाजन	१०	४	८५
(४५)	संस्कृति शब्दार्थ का इतिहास	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	१२	२	५
(४६)	यशपाल के उपन्यास झूठासच्च में	डॉ० ओमप्रकाश सारस्वत	१३	१	५२
(४७)	हिमाचल प्रदेश का हिन्दी उपन्यास साहित्य - एक परिशीलन	दिनेश धर्मपाल	१३	१	७५
(४८)	ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सीवा रियासत	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	१३	३	७४
(४९)	मुख्यतया कबीर के सन्दर्भ में गोरखनाथ की विचारधारा का हिन्दी निर्गुण साहित्य पर प्रभाव	डॉ० वेदप्रकाश अग्नि	१३	४	७७

(५०)	हिमाचल प्रदेश के ब्रज कवि	गुलशन कुमार	१३	४	९९
(५१)	सोऽहम्	पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	१४	२	२
(५२)	कुलान्त पीठ महात्म्यम् (प्रचीन पांडुलिपि)	चन्द्रशेखर 'बेबस'	१४	३	१
(५३)	हिमालयी संस्कृति में जनजातीय भाषा एवं शिक्षा	एम.आर. ठाकुर	१४	३	२५
(५४)	मीरा और उसके गिरधर गोपाल	डॉ० कमलकुमार कोहली	—	—	—
(५५)	पारम्परिक मुखौटा निर्माण कला - एक सर्वेक्षण	नरेन्द्र अरुण	१५	४	४९
(५६)	मुखौटा निर्माण कार्यशाला - एक महत्वपूर्ण आयोजन	अशोक हंस	१५	४	७९
(५७)	प्रत्यूष गुलेरी की रचना प्रक्रिया : कथा सन्दर्भ	डॉ० कश्मीरी लाल	१६	१,२	६४

मुहावरे व लोकोक्तियां

(१)	पहाड़ी मुहावरे और कहावतें	प्रो० हरिराम जसटा	—	१	—
(२)	हिमाचली कहावतों में बालक	राजन्य जय सिंह	१	२	७९
(३)	महासू के रोहड़ू क्षेत्र की कुछ लोकोक्तियां	आशा चौहान	३	१	४०
(४)	लोकोक्तियों में गद्दी जीवन	बसन्त शर्मा	३	३	७४
(५)	लोकोक्ति का साहित्यिक महत्व	हरि चन्द पराशर	३	४	
(६)	हिमाचल में समयवाचक ग्लाण-खुआणे	डॉ० श्याम लाल	३	४	५
(७)	चम्बा क्षेत्र की लोकोक्तियां तथा मुहावरे	हरि प्रसाद सुमन	३	४	१३
(८)	ऊना क्षेत्र में प्रचलित मुहावरे तथा लोकोक्तियां	खुशीराम शर्मा	३	४	१९
(९)	कांगड़ी लोकोक्तियां तथा मुहावरे	दुर्गादत्त शास्त्री	३	४	२३
(१०)	कांगड़ी लोकोक्तियां	ओंकार लाल भारद्वाज	३	४	२६
(११)	कांगड़ा क्षेत्र - लोकोक्तियां तथा पहेलियां	सुदर्शन डोगरा	३	४	३६
(१२)	हमीरपुर की लोकोक्तियां	डॉ० आत्मराम	३	४	४३
(१३)	कहलूर जनपद के मुहावरे	सरोज शर्मा	३	४	४९
(१४)	मण्डयाली लोकोक्तियां	डॉ० कांशी राम आत्रेय	३	४	५७
(१५)	कुल्लू जनपद में लोकोक्तियों का प्रयोग	विद्या शर्मा	३	४	६१

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(१६)	शिमला क्षेत्र की लोकोक्तियां	हरिराम जसटा	३	४	७१
(१७)	क्योंथल जनपद की लोकोक्तियां	उमा शर्मा	३	४	७९
(१८)	सिरमौर क्षेत्र की लोकोक्तियां	राम दयाल नीरज	३	४	८१
(१९)	लाहुल की लोकोक्तियां प्रयोग एवं प्रसंग	के. अंगरूप लाहुली	३	४	८८
(२०)	सोलन क्षेत्र : संस्मरण के गर्भ में पहेलियां	नरेन्द्र अरुण	३	४	८६
(२१)	किन्नर क्षेत्र की लोकोक्तियां	डॉ० बंशीराम शर्मा	३	४	१००
(२२)	हिमाचली लोकगीतों और लोक कविताओं में कृष्ण जीवन की झलकियां	शशी रानी शर्मा	४	२	७७
(२३)	कुल्लू के विशिष्ट मुहावरे व लोकोक्तियां	प्रकाश देव	४	४	११४
(२४)	पहाड़ी मुहावरों की पृष्ठभूमि : एक विश्लेषण	लेखराम शर्मा	५	३	७०
(२५)	कांगड़ा की लोकोक्तियों का सांस्कृतिक अध्ययन	योगेन्द्र सिंह	६	२	५६
(२६)	बिलासपुर में प्रचलित लोकोक्तियों का सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यांकन	डॉ० श्रीराम शर्मा	६	४	२७
(२७)	बूझणी	पन्ना लाल डोगरा	७	२	५८
(२८)	महासुई लोकोक्तियों का प्रचलन	मीना शर्मा	७	१	७१
(२९)	पहाड़ी मुहावरे:एक विवेचन	डॉ० लेख राम शर्मा	९	१	५
	शब्दकोश				
(१)	बिलासपुरी जन जीवन में विशिष्ट अर्थ वाले शब्दों का अध्ययन	मनसा राम शर्मा अरुण	१	३	५
(२)	बघाटी के कृषि सम्बन्धी शब्दों का अध्ययन	भीमदत्त काले	१	४	४४
(३)	कृषिपरक मण्डयाली शब्दावली	डॉ० कांशीराम	१	४	५४
(४)	महासवी की शब्द सम्पत्ति	हरिराम जसटा	१	४	५९
(५)	कुल्लू जनपद में विवाह संस्कार सम्बन्धी शब्दों का सांस्कृतिक धरातल	चन्द्रशेखर बेबस	२	१	२६
(६)	पहाड़ी लोक महाभारत 'पण्डमायण' में प्रयुक्त शब्दावली का समाज शास्त्रीय अध्ययन	भुवनेश्वरी राठौड़	२	१	३०

tharahkardu.in

(७)	हिमाचली में चीशपाणी	श्याम कुमारी	२	१	७३
(८)	महिला के पर्यायवाची पहाड़ी शब्द	—	२	१	९७
(९)	पहाड़ी पक्षियों की नामावली और उनसे सम्बन्धी उक्तियां	एम.आर. ठाकुर	२	२	२३
(१०)	कहलूरी उपभाषा के कतिपय शब्द - अर्थ - विवेचन	मनसा राम शर्मा 'अरुण'	२	३	४१
(११)	शब्द श्री	मनसा राम शर्मा 'अरुण'	२	२	८२
(१२)	संस्कृत कोषकारों का संक्षिप्त परिचय तथा अमरकोश में शब्द विन्यास	केशव शर्मा	२	४	१
(१३)	बघाटी के धातु शब्द	ईश्वरी दत्त	२	४	१५
(१४)	कांगड़ी के कुछ शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन	सुदर्शन वशिष्ठ	२	४	५३
(१५)	महासुई उपभाषा के कतिपय पारिवारिक शब्दों का संस्कृत-सम्बन्ध	आचार्य रामानन्द	२	४	५२
(१६)	हिन्दी-महासुई-कुल्लुई का तुलनात्मक वाक्य अध्ययन	मीना, विद्या	३	१	८२
(१७)	शब्द श्री	आशा गोयल	३	१	८४
(१८)	हिन्दी महासवी तुलनात्मक वाक्यावली	डॉ० हरिराम जस्टा	३	३	५१
(१९)	शब्द श्री		४	१	१७
(२०)	हिन्दी-कुल्लुई तुलनात्मक वाक्यावली	लीलाधर पराशर	५	३	७५
(२१)	हिमाचल में आम्र, फल सम्बन्धी शब्द	श्याम कुमारी डोगरा	६	२	४४
(२२)	खश या खश्पा	पी०एन० सेमवाल	६	३	६४
(२३)	हिमाचल प्रदेश में मामा शब्द की लोकप्रियता	दुर्गादत्त शास्त्री	७	१	१६
(२४)	मण्डियाली के वन्धुतावाचक संज्ञापद (किन्शिप नाउन्ज)	जगतपाल शर्मा	७	२	१२
(२५)	बंडश-वैंझ-बांश-बाशली-हिमाचल में बंश शब्दकथा	श्याम कुमारी डोगरा	७	४	१
(२६)	बिलासपुरी के बन्धुतावाचक संज्ञापद (किन्शिप नाउन्ज)	डॉ० जगत पाल शर्मा	१०	२	२७
(२७)	हिमाचली में अ की ध्वनि और वर्तनी	श्याम लाल डोगरा	११	३	६२
(२८)	हिमाचली शब्दकोश-''सर्वेक्षण एवं विश्लेषण	डॉ० श्याम लाल	१३	४	१
(२९)	क्योंथली बन्धुतावाचक संज्ञापद (किन्शिप नाउन्ज)	डॉ० जगतपाल शर्मा	१४	१	४५
(३०)	चम्बा के साहो क्षेत्र की कृषि सम्बन्धी शब्दावली	हरिप्रसाद सुमन	—	—	—

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
	विविध				
(१)	सुकेती का जीवावशेष उद्यान	कैलाश भारद्वाज	१	२	६६
(२)	प्वाड़ा झांखों अजबा	विद्यानन्द सरैक	१	३	२४
(३)	महासू	सी.आर.बी. ललित	२	२	२९
(४)	महासुई कविता - एक परिचय	कु० मीना ठाकुर	२	२	७९
(५)	गढ़ों की धरती - मण्डव्य नगर	डॉ० कांशीराम आत्रेय	२	४	२३
(६)	हिमाचल का सांस्कृतिक स्थल-मणिकर्ण	मुरलीधर शर्मा	२	४	३३
(७)	विभिन्न संस्कृतियों का संगम-महासू जनपद	गोवर्धन सिंह	३	१	१
(८)	महासू-धार्मिक संदर्भ	कलावती जसटा	३	३	१२
(९)	अप्सरा का श्राप - एक मूल्यांकन	डॉ० ओमप्रकाश सारस्वत	४	१	५७
(१०)	झूठा सच बदलते समाज का दर्पण	अमरजीत कौर	४	१	६१
(११)	यशपाल जयन्ती समारोह	—	४	१	६६
(१२)	उपस्थापन सांस्कृतिक विघटन एक मन:स्थिति	एच.सी. पराशर	४	२	९१
(१३)	हिमाचली में दूध, छाश और हाण्डोपारु	श्यामा कुमारी	४	३	६
(१४)	बढ़ते कदम	—	५	१	७९
(१५)	हमारे साहित्यकार	—	५	१	९०
(१६)	जोगणी	चन्द्रशेखर बेबस	५	२	१९
(१७)	सूर की लोकरञ्जक भावना	वेदप्रकाश 'अग्नि'	५	३	६
(१८)	गिरी पब्बर के मध्य में	कु० आशा चौहान	५	३	७८
(१९)	हिमाचल प्रदेश के काले, चमकदार मृदभांड	अमरनाथ खन्ना	६	२	१६
(२०)	देवधरा चम्बा	खेमराज गुप्त 'सागर'	६	२	[illegible]
(२१)	हमारे तीर्थ स्थान तथा राष्ट्रीय एकता	मनोरमा शर्मा	६	२	८८
(२२)	अमानवीय आत्माएं	उमा शर्मा	६	३	८५

(२३)	दशी	पन्ना लाल जोगटा	६	४	३५
(२४)	महासू - एक परिचय	भाग्यवती शर्मा	६	४	८०
(२५)	हिमाचल - लोक विश्वासों में भूत-प्रेत	हरिकृष्ण मुरारी	७	१	२२
(२६)	हिमाचल में एक और पर्यटन स्थल - अर्की	बद्रीसिंह भाटिया	७	१	५८
(२७)	किन्नर कैलाश शिवलिंग - शिखर आरोहण	कृष्णचन्द काएथ	७	१	७५
(२८)	गीत, नाटक एवं नृत्य क्षेत्र में अकादमी की गतिविधियां	अशोक हंस	७	१	८३
(२९)	बन्नी एक मौन पृष्ठ	प्रेम कुमार शर्मा	७	२	१७
(३०)	गीत नाटक एवं नृत्य क्षेत्र में अकादमी की गतिविधियां	अशोक हंस	७	२	९२
(३१)	कांगड़ा जनपद की परम्पराएं भूल रही हैं	डॉ० शम्मी शर्मा	७	३	६
(३२)	गुलेरी जी 'अपने शब्दों में'	डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी	७	३	२६
(३३)	पांच पोथी पंडित	सन्तराम वत्स्य	७	३	३१
(३४)	सृजनहार की खोज	खेमराज गुप्त	७	३	६३
(३५)	अनोखी पुस्तक	सन्तराम वत्स्य	७	४	३०
(३६)	सारीगढ़	अमर पालशर	८	१	८३
(३७)	मास्ती कूंजी	पन्नालाल जोगटा	८	१	४६
(३८)	बापू के सत्य के प्रयोग	सन्तराम वत्स्य	८	३	३७
(३९)	माईचाल	शंकरलाल शर्मा	८	३	४१
(४०)	काम्पू	पन्नालाल जोगटा	८	३	४७
(४१)	मासती गांथों	रूप कुमार शर्मा	८	४	५४
(४२)	चुगदा चुगेन्दा हिरणू	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	९	१	१
(४३)	परिचय	डॉ० शम्मी शर्मा	९	१	३९
(४४)	फिर वही परोसा गया	तुलसी रमण	९	१	४६
(४५)	सावटू	विद्यानन्द सरैक	९	४१	५९
(४६)	स्याणे रा गलाणा	दीनानाथ गौतम शास्त्री	९	१	६२
(४७)	भोज परमार की सांस्कृतिक धरोहर - अर्की	अमरदेव आंगिरस	९	२	४४

क्रमांक	लेख का नाम	लेखक	वर्ष	अंक	पृष्ठ
(४८)	सीता हरण	मोहन राठौर	९	३	१७
(४९)	नाजो	तारा शर्मा	९	३	३८
(५०)	हंस	डॉ० वेदप्रकाश अग्नि	१०	४	९
(५१)	डॉ० डेविड स्नैलग्रोव कुल्लू में	चन्द्रकान्त	१०	४	६३
(५२)	दशहरा कुल्लू में सान्ध्य बेला	वी.वी. गौड़	१०	४	६५
(५३)	सिसकदी कुल्ह	शिव उपाध्याय	१०	४	७८
(५४)	श्री गुरु नानक सूर्योदय जन्म साखी	डॉ० मनोहरलाल	११	१	५५
(५५)	स्व० जयदेव बड़ोत्रा - एक श्रद्धांजलि	हरिप्रसाद सुमन	११	१	६०
(५६)	स्मृतिकण	भगतराम द्विवेदी	११	१	८०
(५७)	जननी भगवति	मनसाराम शर्मा अरुण	११	१	९९
(५८)	देशदशा	केशवराम शर्मा	११	१	१००
(५९)	फागली	भोज शर्मा	११	२	१६
(६०)	ऐतिहासिक सत्य से ओत प्रोत जरेश और पंजेश	कृष्णचन्द काएथ	११	२	२५
(६१)	परम्परा में प्रयोग का नाटककार - जगदीश चन्द माथुर	डॉ० ओम प्रकाश सारस्वत	११	२	४६
(६२)	उपेक्षिता नयनाभिराम झील पराशर	शास्त्री दीनानाथ गौतम	११	२	७७
(६३)	सता का राजयोग और साहित्य की नाड़ी - परीक्षा	डॉ० ओमप्रकाश सारस्वत	११	२	८१
(६४)	हठधर्मी कविताएं	डॉ० ओमप्रकाश सारस्वत	११	२	८३
(६५)	वैष्णव धर्म का उद्‌भव और विकास	प्रेमलाल गौतम आचार्य	११	३	१
(६६)	पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी प्रणीत कहानी - 'हीरे का हीरा' के पात्र	डॉ० मनोहरलाल	१३	३	५
(६७)	हिन्दी शोध	डॉ० जोगेश कौर	११	३	२५
(६८)	विधिमाता और हिमाचल प्रदेश	अमृत कुमार शर्मा	११	३	३४
(६९)	नादोन नगरी की पृष्ठभूमि	डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा	११	३	७५
(७०)	हिमाचल और हिमाचली - प्रचीन परम्परा एक पर्यटकीय पर्यालोचन	डॉ० सत्यपाल शर्मा	११	४	५१
(७१)	शियाणा ऋषि	डॉ० बलदेव ठाकुर	११	४	[illegible]

(७२)	बुशहर व बुशहरी	शरमानन्द श्रवण	११	४	
(७३)	भूले बिसरे खेल मनोरंजन	नरेन्द्र अरुण	१२	१	२१
(७४)	गुज्जर जनजाति व उसकी बोली	केशवचन्द्र	१२	१	४८
(७५)	चम्बा के भरमौर क्षेत्र में सहयोगी प्रथाओं का प्रचलन	अमरसिंह रणपतिया	१२	१	६१
(७६)	यशपाल की कहानियों में हिमाचली जनजीवन की झलकियां	डॉ० सुशील कुमार फुल्ल	१३	१	१
(७७)	लामण	शशिकान्त शास्त्री	१३	२	४७
(७८)	पांडुलिपियां व लेखन प्रक्रिया	कमल प्यासा	१३	२	५४
(७९)	विविध विचित्र भारज	आशा शैली	१३	२	६६
(८०)	श्री तारा देवी	लक्ष्मणसिंह कश्यप	१३	३	४१
(८१)	बलिदान	सुरेन्द्र शर्मा	१३	४	७३
(८२)	किला बैर कोट	मोतीलाल घई	१४	१	६०
(८३)	सुबाथु जनपद एवं धार्मिक आस्था	नरेन्द्र अरुण	१४	२	६५
(८४)	कांगड़ा घाटी में बहने वाली नियुगल खड्ड	रत्नलाल चौधरी	१४	२	७८
(८५)	पाण्डुलिपि परिचय	स्वर्णकान्ता शर्मा	१४	२	८९
(८६)	चम्बा लोक रंगमंच का रूप तथा संगठन	हरिप्रसाद सुमन	१४	३	५९
(८७)	रोहड़ू क्षेत्र की विवाह प्रथाएं	जया चौहान	१४	३	६५
(८८)	गुलेर की अक्षय बावड़ी - वत्सकूप	गिरिधर योगेश्वर	१४	३	६९
(८९)	वेद और वन सम्पदा	डॉ० कर्म सिंह	१५	४	७२
(९०)	चम्बी की कहानी	हरिकृष्ण मुरारी	१६	१.२	७३
(९१)					

* हिमाचल की भाषा, संस्कृति व सम्बन्धित क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधित्सुओं के उपयोग के लिए 'सोमसी' में अब तक प्रकाशित लेखों का विवरण प्रकाशित किया गया है। आशा है शोधकर्ता विद्वान इससे लाभान्वित होंगे।

— सम्पादक

पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएँ

समीक्षक- डॉ० वी.पी. मुहम्मद कुंज मेतर

महान साहित्यकार अपनी एक कालजयी कृति से ही शाश्वत कीर्ति के पात्र हो जाते हैं और इनकी अन्य कृतियों की चर्चा किए बिना ही उन्हें साहित्य जगत् में चिरप्रतिष्ठा मिल जाती है। स्व. पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ऐसे गरिष्ठ साहित्यकार हैं जिन्होंने 'उसने कहा था' नामक कालजयी कहानी की रचना करके साहित्य जगत् में अनश्वरता प्राप्त की। यह स्वाभाविक ही है कि किसी कृति की उत्कृष्टता एवं कलात्मक चारुता के कारण सहृदयों की दृष्टि उस रचना पर सदैव टिकी रहती है। परंतु यह दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि गुलेरी जी जैसे सर्जक कलाकार का रचना-संसार तिमिराच्छादित रहा और यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि उनकी कृतियों को सहृदयों के समक्ष प्रस्तुत करने में एक शताब्दी लग गई। इस साधनापूर्ण सत्प्रयास का श्रेय शोध दृष्टि के धनी डॉ. मनोहर लाल को ही है।

गुलेरी जी के सम्बन्ध में यह जानना, कि वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे और उनका रचना-संसार व्यापक रहा, जिज्ञासु सहृदयों, साहित्य प्रेमियों एवं शोधार्थियों के लिए एक वरदान ही है। गुलेरी जी की 'खोयी हुई दुनिया' के संधान में तपस्वी की भाँति स्वयं समर्पित डॉ. मनोहर लाल ऐसे शोधकर्त्ता हैं जिनमें प्रतिभा, विद्वत्ता एवं परिश्रम का त्रिवेणी संगम पाया जाता है। 'गुलेरी साहित्यालोक' तथा 'गुलेरी रचनावली' के सुसम्पादन करके उन्होंने अपनी अनन्य शोधवृत्ति का परिचय दिया है। आलोच्यकृति 'पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएँ' ने गुलेरी जी के कृतित्व को कहानीकार एवं निबन्ध लेखक के सीमित दायरे से उठाकर साहित्य के विशाल मंच पर खड़ा कर दिया है।

यह ग्रन्थ 'पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएँ' दो खण्डों में विभक्त किया गया है, जिसके प्रथम खण्ड में 'पुरानी हिन्दी' दी गई है जो १६९ पृष्ठों में व्याप्त है। द्वितीय खण्ड में 'शेष रचनाएँ' के अन्तर्गत कथा/कहानी, शोध, राजनीति/धर्म, अत्र तत्र सर्वत्र: टिप्पणियाँ, समीक्षाएँ, पत्र-साहित्य, संस्मरण, निबंध/लेख, भाषा, जीवनचरित, काव्य आदि ३३४ पृष्ठों में बिखरे पड़े हैं। अंत में सम्मतियाँ एवं गुलेरी जी की रचनाओं की सूची संकलित हैं। इस प्रकार कुल ५५२ पृष्ठों में व्याप्त यह ग्रन्थ अपने सुसम्पादन एवं आकर्षक छपाई के कारण बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है।

जैसाकि उन्होंने स्पष्ट किया है, ''गुलेरी साहित्यालोक, गुलेरी रचनावली तथा प्रस्तुत ग्रन्थ में गुलेरी जी का नब्बे प्रतिशत कृतित्व अवश्य ही समेट चुका हूँ?'' डॉ० लाल ने भूमिका में लिखा है कि ''गुलेरी की छद्मनाओं से छपी अन्य कृतियों का संधान भी शेष है। पुस्तक के बढ़ते कलेवर को देखकर उपलब्ध सामग्री रोकनी पड़ी है।''

जैसा कि बताया जा चुका है आलोच्य कृति के प्रथम खण्ड में 'पुरानी हिन्दी' का सोदाहरण विस्तृत परिचय दिया गया है। गुलेरी जी पहले विद्वान थे जिन्होंने हिन्दी का सम्बन्ध अपभ्रंश से जोड़ा। इसके पहले हिन्दी जगत् में अपभ्रंश का नाम नहीं लिया जाता था। डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या जैसे भाषाविद् का भी विचार था कि हिन्दी का कोई ठोस ऐतिहासिक आधार नहीं है। उनकी दृष्टि में हिन्दी एक मिश्र भाषा है जिसमें अरबी, फारसी, पंजाबी, कौरवी, व्रज, अवधी आदि के अंशदान हैं। डॅा. उदयनारायण तिवारी ने चाटुर्ज्या के कथन का समर्थन इस प्रकार किया, "यह कथ्य (बोलचाल) शौरसेनी अपभ्रंश ही कालान्तर में हिन्दी के रूप में परिणत हुआ। इस प्रकार पंजाबी का भी पर्याप्त प्रभाव है। हिन्दू और मुसलमानों का यह समान रूप से रिक्थ है।"

आचार्य हेमचन्द्र बता चुके थे कि 'प्रकृतिः संस्कृतं तत आगतं प्राकृतं।' किन्तु गुलेरी जी ने दृढ़ स्वर में प्रमाण देकर बताया कि 'प्राकृतें संस्कृत से नहीं निकलीं।' संस्कृत कृत्रिम भाषा है जिसका कोई वंश नहीं। वह छन्दस् भाषा पर आधृत है। 'यद्यपि संस्कृत ने प्राकृत-अपभ्रंश की भाषा-धारा को समृद्ध बनाया, तथापि वह खुद बाँझ रही।' गुलेरीजी के ये विचार उन विद्वानों के विरुद्ध थे जो संस्कृत को भारतीय आर्य भाषाओं को जननी मानते थे। यद्यपि गुलेरी जी के कथन में मतभेद की गुंजाइश है तथापि इसमें सन्देह नहीं कि उनके इस विचार ने लोगों को नए ढंग से सोचने को विवश किया।

संस्कृत को मूल भारतीय आर्यभाषा न मानने में गुलेरी जी का मुख्य तर्क यह है कि 'जिस कृत (की गई या बनाई गई) भाषा से संस्कृत बनी, वही मूल भाषा होनी चाहिए, और यह (मूल भाषा) छन्दस् भाषा है।' उन्होंने उदाहरण देकर इस बात का समर्थन किया है कि 'वेदभाषा और परवर्ती प्राकृतों में कई भाषातत्व मिलते-जुलते हैं, वैदिकभाषा की विकल्प-बहुलता प्राकृतों में और बढ़ी। वेदभाषा की इसी धारा को रोक कर संस्कृत का बाँध बनाया गया, जिसमें छोटी-बड़ी कई नदियों का पानी है। लेकिन, लोग उसके हरे-भरे तटों तथा अच्छोद (अच्छा पानी) देखकर इतने मुग्ध हुए कि उसी को नदी मान बैठे और जो वास्तविक नदियाँ (छन्दस् भाषा और प्राकृतें) थीं, उन्हें उन्होंने नहर मान लिया।'

गुलेरीजी कभी अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी (वस्तुतः अवहट्ठ) को एक मानते हैं और कभी भिन्न। किन्तु उनका यह कथन ध्यानाकर्षक है कि 'जिस प्रकार गुरु नानक से लेकर दक्षिण के हरिदासों की कविता ब्रजभाषा ही कहलाती थी, वैसे ही अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी कहना अनुचित नहीं है, चाहे कवि के देश-काल के अनुसार उसमें कुछ रचना प्रादेशिक हों। उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि गुलेरीजी हिन्दी और उसकी बोलियों का उद्‌भव अपभ्रंश की कोख से मानते हैं, यद्यपि दूसरी प्रादेसिक भाषाओं के विकास में उसके दाय को भी वे अस्वीकार नहीं करते।

खड़ी बोली के विकास की चर्चा करते हुए गुलेरीजी ने लिखा है, "खड़ी बोली या पक्की बोली या रेखता या वर्तमान हिन्दी के आरंभ काल के गद्य और पद्य को देखकर यही जान पड़ता है कि उर्दू रचना में फारसी, अरबी तत्सम या तद्‌भवों को निकालकर संस्कृत या हिन्दी तत्सम और तद्‌भव रखने से हिन्दी बना ली गई है।" गुलेरीजी का यह कथन ठीक नहीं जँचता। फख्रुदीन निजामीकृत

'मसनवी कदमराव पदमराव' जैसे खड़ीबोली के आदिकालीन काव्यों की भाषा को देखकर हम यह मानने को बाध्य हो जाते हैं कि आरंभ में संस्कृतनिष्ठ भाषा का ही प्रचार था परंतु, बाद में फारसी-करण की प्रवृत्ति बढ़ गई और धीरे-धीरे खड़ीबोली— दक्खिनी-उर्दू में परिवर्तित हो गई। वही दकिनी के काल हिन्दी या खड़ी बोली का उर्दू रूप निखार पा चुका था। गुलेरी जी का यह कथन बिल्कुल सही है कि 'हिंदुई भाषा बनाने का काम मुसलमानों ने बहुत कुछ किया, उसकी सार्वजनिकता होने पर उन्होंने हिन्दी को अपना लिया।' आगे उन्होंने लिखा है "पुरानी हिन्दी गद्य और पद्य—खड़े रूप में—मुसलमानी हैं। हिन्दू कवियों का यह सम्प्रदाय रहा है कि हिन्दू पात्रों से प्रादेशिक भाषा कहलवाते थे और मुसलमान पात्रों से खड़ी बोली।" उत्तर भारत के सम्बन्ध में गुलेरी जी का यह कथन सत्य है। परंतु दक्षिण में जहाँ दसवीं शती ईस्वी से ही हिन्दी का प्रचार-प्रसार होना शुरु हुआ था हिन्दू-मुसलमानों की भाषा में भारी अंतर नहीं पाया जाता।

गुलेरी जी हिन्दी के महाप्रवाह की ऐतिहासिक भूमि का विश्लेषण करनेवाले पहले भाषाविशेषज्ञ अवश्य थे। हिन्दी के भाषिक विश्लेषण कर उसके विकास क्रम को प्रस्तुत करनेवाले को 'पुरानी हिन्दी' आधारशिला बनेगी। 'पुरानी हिन्दी' लिखने के बाद वे अपने भाषिक अध्ययन के लिए आगे की नींव खोदनेवाले ही थे कि उन्हें परलोक सिधरना पड़ा। उनका काम अधूरा रह गया है।

आलोच्य ग्रन्थ गुलेरीजी के बहुआयामी व्यक्तित्व का दस्तावेज है। वे सच्चे अर्थ में बहु-भाषाविद् थे। भाषाविज्ञान, दर्शन, ज्योतिष, इतिहास पुरातत्व, चित्रकला, संगीत, काव्यशास्त्र, वैदिक-पौराणिक साहित्य एवं धर्म आदि विषयों के भी प्रकाण्ड पंडित थे। वे कहानी, निबन्ध, संस्मरण, इंटर्व्यू, समीक्षा, जीवनचरित तथा काव्य आदि विविध विधाओं के विकास में दत्तचित्त रहे। गुलेरी जी के बहुमुखी कृतित्व की टिप्पणी करते हुए सम्पादक डॉ. लाल ने सटीक बात कही कि "अपने कृतित्व की गरिष्ठता के कारण वह द्विवेदी युग के आधारस्तम्भ होते हैं।"

किसी भी आधुनिक भारतीय साहित्य के आविर्भाव काल में गुलेरीजी जैसे व्यक्तित्व का उदय देखा जा सकता है जो पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी भाषा और साहित्य की समृद्धि और संवर्द्धन में ऐतिहासिक योग देते रहे हैं। गुलेरीजी ने समालोचन, मर्यादा, प्रतिभा, नागरी प्रचारिणी पत्रिका से सम्बद्ध रह कर हिन्दी की महान सेवा की। "हिन्दी-हिन्द-हित साधन उनके जीवन का लक्ष्य था। वह भारत को स्वाधीन तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे।"

समालोचन (जयपुर) और त्रैमासिक 'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का सम्पादक पद संभाले हुए गुलेरीजी ने अपनी गहन अध्ययनशीलता, प्रकाण्ड प्रतिभा तथा सुतीक्ष्ण शोध विद्वत्ता का परिचय दिया। यश और अर्थ से पूर्ण विरक्त होकर उन्होंने 'चिट्ठीवाला', 'एक बी.ए. ब्राह्मण', 'आलोचक' आदि छद्मनामों से 'समालोचक', 'इन्दु', 'प्रतिमा', 'मर्यादा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में (सन् १९०२ से १९२२ ई. तक) अनेक महत्वपूर्ण लेख लिखे। गुलेरीजी हिन्दी के उद्धार, भाषिक संस्कार तथा विकास केलिए तपस्वी की सी निष्ठा से लगे रहे। उनतालीस वर्ष की अल्पायु में ही गुलेरी जी ने शतायु पुरुष का पुरुषार्थ पूर्ण कार्य किया।

साहित्य के गंभीर अध्येताओं और शोधार्थियों का भाग्य ही कहना चाहिए कि डॉ. लाल ने

गुलेरीजी की रचनायात्रा को सही क्रम से पकड़ और अंकित कर पाने का स्तुत्य प्रयास किया। इससे पूर्व डॉ. लाल ने 'हिमाचल प्रदेश के ब्रज कवि' शीर्षक शोधपरक ग्रन्थ में हिमाचल प्रदेश के अज्ञात ब्रजकवियों की प्रामाणिक कृतियों को प्रस्तुत करते हुए हिन्दी की खोई हुई कड़ी को पुनः जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है। आलोच्य ग्रन्थ 'पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएँ' प्रस्तुत करते हुए डॉ. लाल ने यह साबित किया है कि गुलेरी जी द्विवेदी युग के विद्वानों में प्रथम पांक्तेय ही नहीं अपितु अपने आप में एक युग-पुरुष बने हुए हैं। यह कम आहलाद की बात नहीं कि डॉ. लाल गुलेरी जी की शेष अप्रकाशित एवं अप्राप्त रचनाओं के संधान में लगे हुए हैं। हम आशा करते हैं कि वे गुलेरी जी की 'अभी और' रचनाएँ लेकर हिन्दी प्रेमियों का उपकार करेंगे।

पुस्तक का नाम— पुरानी हिन्दी और शेष रचनाएं
संपादक— डॉ० मनोहर लाल
प्रकाशक— किताबघर, दिल्ली। ★

लक्ष्मी नारायण मन्दिर (चम्बा) का एक भाग — उत्कृष्ट वास्तुकला
छाया : अकादमी संग्रहालय

फार्म-४
(नियम ८ देखिये)

१. प्रकाशन स्थान	:	शिमला (हिमाचल प्रदेश)
२. प्रकाशन अवधि	:	त्रैमासिक
३. क. मुद्रक का नाम व पता	:	एस.बी. प्रिंटर्ज, ७२ वेदमेनसन जनपद नई दिल्ली
ख. क्या भारत का नागरिक है		हाँ
४. प्रकाशक का नाम	:	डॉ० बंशीराम शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
पता	:	सचिव हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी शिमला-१
५. सम्पादक का नाम	:	डॉ० बंशीराम शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
पता	:	हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी शिमला-१

मैं, (डॉ०) बंशीराम शर्मा, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक १.४.९०

डॉ० बंशीराम शर्मा
सचिव, अकादमी

tharahkardu.in

हिमाचल अकादमी द्वारा बचत भवन शिमला में आयोजित अनौपचारिक गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डा. नामवर सिंह और मुख्य अतिथी श्री अशोक चक्रधर

HAACL पंजीकरण संख्या-28271/75

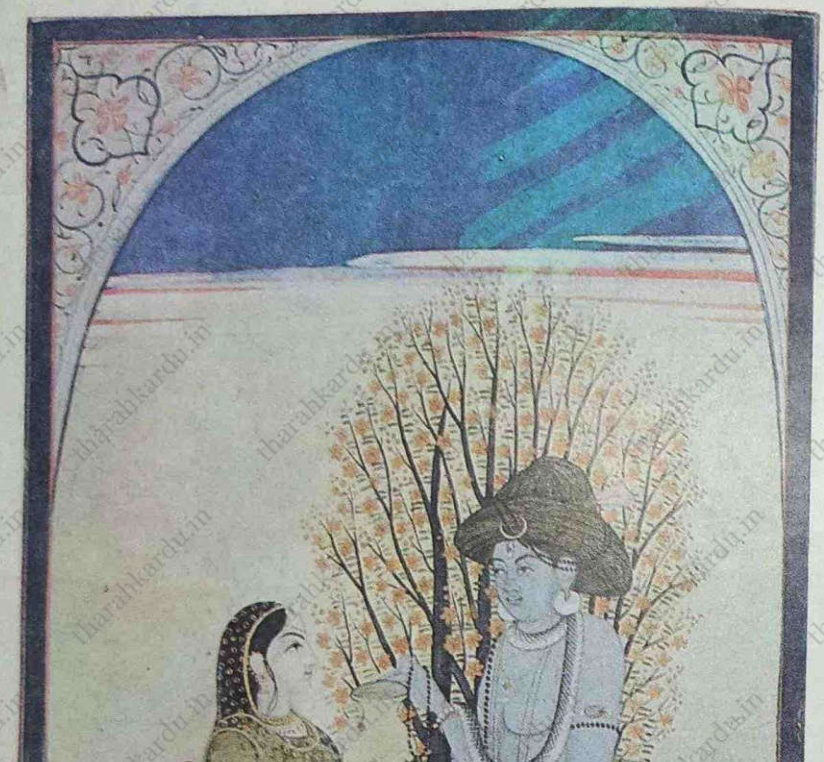

शिव पार्वती

सचिव, हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी शिमला द्वारा प्रकाशित और
मैसर्ज एस.बी. प्रिंटर्ज, नयी दिल्ली- द्वारा मुद्रित